ISSN 2454-504X | 01-15 जून, 2025 | राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका | RNI No. DELHIN/2002/08663 | ₹ 15

दूसरा मत

www.doosramat.com | YOUTUBE DOOSRA MAT | जहां सच बोलते हैं शब्द

पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र एवं डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार-2025

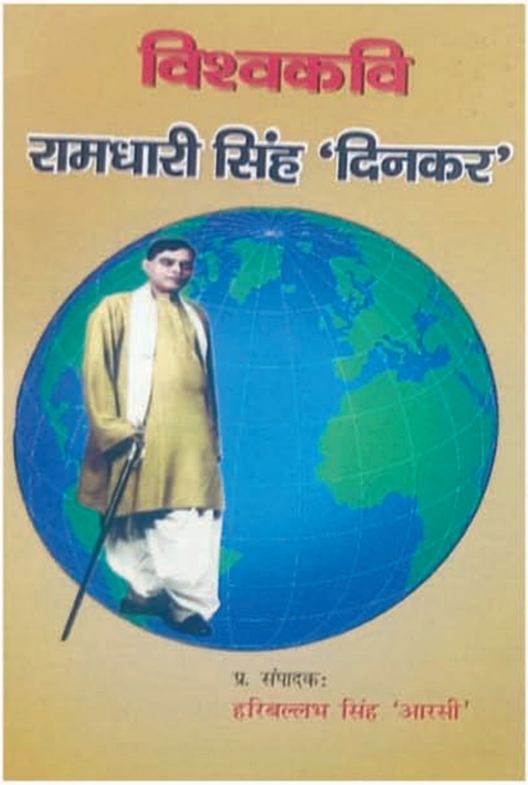

विश्वकवि दिनकर

पाँच दर्जन विद्वानों का अभिमत संग्रह

जनवरी 2022 से उपलब्ध

प्रधान संपादक हरिबल्लभ सिंह 'आरसी'

डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान, विष्टुपुर,
जमशेदपुर, झारखंड-831001
मोबाइल :-9431380710, 8789591822

नोटः हिन्दी सेवकों हेतु निःशुल्क

हरिबल्लभ सिंह 'आरसी'

जन्म-स्थान : मधेपुरा, पो.चन्दौर, थाना-भगवानपुर, जिला - बेगूसराय (बिहार)।
पिता : स्व. राम प्रताप सिंह।
माता : स्व. देवकी देवी।
पत्नी : स्व. कौशल्या देवी।
पुत्र-पुत्री : श्री विमल कुमार, श्री पवन कुमार (पुत्र) श्रीमती रीता कुमारी, श्रीमती शुचिता कुमारी (पुत्री)।
शिक्षा : (अक्षरारंभ) गांव के प्राथमिक विद्यालय में। फिर मध्य विद्यालय, बनवारीपुर (पो.), सुन्दरपुर हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीण। आई.ए., बी.ए., एल.एल.बी., जमशेदपुर (राँची विश्वविद्यालय) से।
जीविकोपार्जन हेतु जमशेदपुर आगमन : 1958 में ट्रेड यूनियन नेता स्व. रामानंद चौधरी से मुलाकात। उन्हीं के सरंक्षण में आई.एस.डब्लू प्रोडक्ट लेबर यूनियन के कार्यालय सचिव । 1962 में कांग्रेस नेता स्व. छोटे लाल व्यास द्वारा सिंहभूम जिला युवा कांग्रेस कमिटी के प्रधान सचिव के रूप में मनोनीत। 1964 में प्रधान सचिव, सिंहभूम जिला यूथ कांग्रेस कमिटी। 1965-प्रधान सचिव, सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी। 1966 में प्रधान सा सिंहभूम जिला भारत सेवक समाज। 1966-प्रधान सचिव, मुसाबनी माईन्स लेबर यूनियन। 1966-टिस्को में नौकरी प्रारंभ। 1966-प्रधान सचिव, सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तुलसी भवन। 1967-प्रधान सचिव, खान अब्दुल गफ्फार खाँ अभिनंदन समारोह समिति। 1967-कमिश्नर, जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति (लगातार तीन बार)। 1968-संस्थापक एवं प्रधान सचिव, डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान (वर्तमान समय तक)। संस्थापक-श्रीकृष्ण पब्लिक स्कूल, बिष्टुपुर, बागबेड़ा, घाघीडीह। 1974-अध्यक्ष, सिंहभूम जिला लोकतांत्रिक कांग्रेस। 1980-अध्यक्ष, जेम्को यूनियन एवं खरसावाँ काईनाइट लेबर यूनियन । 1984-प्रधान सचिव, नेशनल कन्ज्यूमर्स यूनियन ऑफ लिगल एसीसटेंस। 1986-प्रधान सचिव, बिहार लीगल सपोर्ट सोसाइटी। 1988-प्रधान सचिव, डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा जन्म शताब्दी समारोह 1992-अध्यक्ष, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, जिला सिंहभूम। 1999-सचिव, श्रीकृष्ण पब्लिक स्कूल, बिष्टुपुर, जमशेदपुर। 1999-अध्यक्ष, बेनीपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर (वर्तमान समय तक)। अध्यक्ष, अखिल भारतीय पं. रामानंद शर्मा जयन्ती शताब्दी समारोह समिति। 2001- अध्यक्ष झारखंड जनचेतना परिषद् ।2001-संस्थापक एवं प्रधान सचिव, जमशेदपुर सिटिजन फोरम (वर्तमान समय तक), 2004-कार्यकारी अध्यक्ष, पूर्वी सिंहभूम जिला भारत सेवक समाज । 2006-संरक्षक, साहित्य सेवा समिति (वर्तमान समय तक)।2006-संरक्षक, जनवादी लेखक संघ, सिंहभूम (वर्तमान समय तक)।2012-संरक्षक, निशांत (साहित्यिक संस्था) (वर्तमान समय तक)।2013-संरक्षक, झारखंड राज्य साहित्य सम्मेलन। 2014-संरक्षक, जनवादी लेखक संघ, सरायकेला-खरसावाँ (वर्तमान समय तक)।

डॉ. हरिबल्लभ सिंह 'आरसी' की प्रकाशित कृतियाँ

1. चुनाव की चिनगारी (गीत-संग्रह),जनता की पुकार (गीत-संग्रह), सवाल है नगर निगम का (दृष्टिकोण), आरसी (कविता संग्रह), प्रेरणा (कविता-संग्रह), चौराहे पर देश (कविता-संग्रह), कब तक चुप रहोगे (कविता-संग्रह), दाँव पर लोकतंत्र (कविता-संग्रह), क्रांति की आहट (कविता-संग्रह), परिवर्तन की ओर (कविता-संग्रह), वचार एवं अभिव्यक्ति (आलेख-संग्रह, घटनाओं का चक्रवात (कविता संग्रह), सोचो कहाँ जा रहे (कविता संग्रह), जन चेतना (कविता संग्रह), भाव सागर (कविता संग्रह), भावाभिव्यक्ति (काव्य कलश, नरेन्द्र मोदी), युग विमर्श (कविता संग्रह), युग संघर्ष (कविता संग्रह, भारतीय संस्कृति पथ (कविता संग्रह), राष्ट्र की पहचान (कविता संग्रह), दिग्भ्रमित राजनीति (कविता संग्रह), क्या सत्य बोलना छोड़ दें ? (कविता संग्रह)

संपादित पुस्तकें

सरदार बल्लभ भाई पटेल (लघु पुस्तक), जयप्रकाश नारायण (लघु पुस्तक), स्वामी सहजानंद सरस्वती (लघु पुस्तक), डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह (लघु पुस्तक), डॉ. श्रीकृष्ण सिंह का अंतिम भाषण (अंग्रेजी), हमारे प्रकाश स्तम्भ डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा, डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा जन्म शताब्दी स्मारिका, डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान रजत जयंती स्मारिका, ए मैन ऑफ नेशन जे. आर. डी. टाटा, डॉ. सी. डी. द्विवेदी : स्मृति सुमन, रामधारी सिंह दिनकर शताब्दी स्मारिका, डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान का संक्षिप्त इतिहास, दिनकर स्मृति-ग्रंथ, शैली सम्राट बेनीपुरी, जगानेवाले को सलाम, जनप्रिय कवि नेपाली, विश्वकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', देव प्रार्थना संग्रह

दूसरा मत

पढ़ें और पढ़ाएं, और पढ़ाएं

एक शुभचिंतक, दिल्ली

दूसरा मत वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत एक वर्ष स्पीड पोस्ट सहित 2500 रुपए

संस्थागत एक वर्ष स्पीड पोस्ट सहित 5000 रुपए

पीडीएफ प्रतिवर्ष 500 रुपए

दूसरा मत
जहां सच बोलते हैं शब्द

RNI No. DELHIN/2002/08663

वर्ष: 24, अंक: 11

01-15 जून, 2025

संपादक
ए आर आज़ाद

संपादकीय सलाहकार
मन्त्रेश्वर झा (IAS R.)
(पूर्व प्रमुख सलाहकार, योजना आयोग, भारत सरकार)

प्रमुख परामर्शी एवं प्रमुख क़ानूनी सलाहकार
न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद
(अवकाश प्राप्त न्यायधीश, पटना उच्च न्यायालय)

प्रमुख सलाहकार
जियालाल आर्य (IAS R.)
(पूर्व गृह सचिव एवं पूर्व चुनाव आयुक्त बिहार)

ब्यूरो प्रमुख
रुफी शमा

राजनीतिक संपादक
देवेंद्र कुमार प्रभात

**बेगूसराय ब्यूरोचीफ
सह ब्यूरो बिहार**
एस आर आज़मी

ब्यूरो ऑफिस बिहार
बजरंगबली कॉलोनी, नहर रोड,
जज साहब के मकान के सामने, फुलवारी शरीफ,
पटना, बिहार-801505

संपादकीय एवं पंजीकृत कार्यालय
81-बी, सैनिक विहार, फ़ेज़-2, मोहन गार्डेन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
Email: doosramat@gmail.com
MOBILE. 9810757843
Whatsapp. 9643709089

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
ए आर आज़ाद द्वारा 81-बी, सैनिक विहार, फ़ेज़-2,
मोहन गार्डेन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-110059 से
प्रकाशित एवं शालीमार ऑफसेट प्रेस, 2622, कूचा चेलान,
दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 से मुद्रित।
संपादक-ए आर आज़ाद

*पत्रिका में छपे सभी लेख, लेखकों के निजी विचार हैं, इनसे संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। पत्रिका में छपे लेखों के प्रति संपादक की जवाबदेही नहीं होगी।
सभी विवादों का समाधान दिल्ली की हद में आने वाली सक्षम अदालतों में ही होगा।*
**उपरोक्त कुछ पद अवैतनिक हैं।*

पुरस्कार 68
डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

जन्मदिन विशेष 50
डॉ. हरिबल्लभ सिंह आरसी

सलाह 64
हॉट लैम्प लिखिए

प्रसंग 10
नौकरशाही में भ्रष्टाचार का दीमक

पुरस्कार 72
डॉ. रामदरश मिश्र

मीमांसा 08
गेमचेंजर बनी ब्रह्मोस

मुद्दा 06
चिराग के सामने विकल्प

जायज़ा: विदेश नीति पर सवाल 44
नज़रिया: सेना में महिला शक्ति... 46
करियर: सेमी कंडक्टर में करियर 52
किसान: बढ़ती गर्मी से फसलों... 54
दिशा: अंक अव्वल पर ... 62
प्रसंगवश: साहित्य के परिपेक्ष्य में 66
शिक्षा: बहुआयामी शिक्षा को बढ़ावा 76

डॉ. रामदरश मिश्र और डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

देश के दो क़द्दावर साहित्यकार पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र और डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी दोनों देश की धरोहर हैं। दोनों ने साहित्य को अपने-अपने तरीक़े से संवारा है। दोनों का साहित्य समाज के लिए उपयोगी और प्रेरक है। दोनों में बहुत कुछ समानताएं हैं। दोनों का विविधताओं से भरा नज़रिया है। दोनों अपने समय के सदाबहार साहित्यकार हैं।

पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र और डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी साहित्य की धड़कन हैं। उनकी लेखनी की अपनी एक आवाज है। और जब-जब शब्दों के ज़रिए ये स्वर फूटतें हैं, तो इसकी गूंज पूरे देश में सुनाई पड़ती है।

डॉ. रामदरश मिश्र और डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने ख़ूब लिखा है। लगभग हर विधा इन दोनों की लेखनी से गुलज़ार है। दोनों की भाषा मधुर और आम आदमी की भाषा है। शब्दों में अजीब तरह की नक़्क़ाशी है। और यह लेखन की शैली दोनों को देश भर में उनकी अपनी एक नायाब हैसियत की पहचान कराती है।

ए आर आज़ाद

डॉ. रामदरश मिश्र ने सौ साल के जीवन को पार कर लिया है। वे अब भी 102 साल की उम्र में पूरी याददाश्त और होश के साथ बेहतरीन ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। उन्हें परिवार से लेकर साहित्यकारों एवं पत्रकारों के साथ-साथ उनके प्रशंसकों का भरपूर प्रेम मिल रहा है। यह भी उनकी साहित्यिक साधना का एक गिफ़्ट है। एक अनमोल गिफ़्ट है।

डॉ. रामदरश मिश्र ख़ुद इस बात को मानते हैं कि यह उनका सौभाग्य है। लोगों का प्यार उनमें जीने की लौ जगाता है। उम्र के इस पड़ाव पर भी उनमें वही अपनापन देखने को मिलता है।

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी बड़े साहित्यकार होने के साथ-साथ एक ज़िंदा दिल इंसान भी हैं। उनके चेहरे की हल्की मुस्कान धूप की तपिश में तपते इंसान के लिए बारिश की फुहार सी होती है। हर हाल में कैसे ख़ुश रहा जाता है, इस कला में उन्हें महारत हासिल है। उनका ख़ुद मानना है कि इंसान को कभी नाशुक्रा नहीं होना चाहिए। जितना मिला है, उसी में ख़ुश ख़ुर्रम होकर रहना चाहिए।

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी में ग़ज़ब का सम्मोहन है। उनसे जो एक बार मिलता है, वह उनके साथ बने रहना चाहता है। उनके पास शब्द हैं, शिल्प हैं, बिंब हैं। और विभिन्न भाषाओं की बेहतरीन जानकारी भी है। उनके बोल में उर्दू इस तरह से पैवस्त होती है कि कोई पहली मुलाक़ात में यह समझने की ग़लती कर सकता है कि वे उर्दू के शायर हैं।

उनका भाषण कौशल तो और बेजोड़ है। जब बोलते हैं तो धारा प्रवाह बोलते हैं। लेकिन सुनने वालों को ऐसा लगता है कि वे नाप तौल कर बोल रहे हैं। एक-एक शब्दों में जान और हर वाक्य में एक नई ऊर्जा का संचार। एक नई दिशा का भंडार। और दो लोगों के बीच वार्तालाप और जज़्बातों का बेहतरीन तालमेल देखने को मिलता है।

बहरहाल हम कामना करते हैं कि डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी पूरी सेहत के साथ सौ साल का वक़्फ़ा पूरा करें। और अपनी लेखनी से साहित्य को और बहुत कुछ दें। हमारे जैसे लोगों के लिए प्रेरक बने रहें। और जिस तरह का प्यार, स्नेह लुटाते रहे हैं, आगे भी लुटाते रहें।

बहरहाल यह प्रसंगवश है। 30 और 31 मई, 2025 की संध्या इन दोनों हस्तियों को साम्प्रदायिक सौहार्द को समर्पित संस्था आचार्य हाशमी साम्प्रदायिक सौहार्द मंच की ओर से पुरस्कार से नवाज़ा गया। डॉ. रामदरश मिश्र जी को 30 मई की संध्या उनके आवास पर आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार-2025 प्रदान किया गया। और ठीक अगले दिन यानी 31 मई, 2025 की संध्या डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी जी को उनके आवास पर आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार-2025 प्रदान किया गया।

आचार्य हाशमी देश की एक ऐसी शख़्सियत थे, जिन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को अपना प्रण मान लिया था। उन्होंने इसके लिए सभी मज़हबों की धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन भी किया था। वे जिस प्रकार से इस्लाम पर बोल सकते थे, उसी प्रकार उन्हें धारा प्रवाह गीता, पुराण और महाभारत पर भी बोलने का सौभाग्य प्राप्त था। उन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया था। वे हिन्दी, उर्दू और मैथिली के बड़े साहित्यकारों में शुमार थे। उन्हें दरभंगा यूनिवर्सिटी ने आचार्य की उपाधि प्रदान की थी। वे कई वर्षों तक साहित्य अकादेमी के जूरी और सदस्य रहें। उन्हें साहित्य अकादेमी सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुए। वे एक शिक्षाविद् के तौर पर जाने जाते रहें। और साम्प्रदायिक सौहार्द के अलमबरदार के तौर पर आज भी उन्हें देखा जाता है। वे एक सच्चे राष्ट्रभक्त और मुख्यधारा के मुसलमान थे। वे हिन्दू और मुसलमान में किसी तरह का भेद करना नहीं जानते थे। उन्होंने सदा धर्म को व्यक्तिगत आस्था के तौर पर देखा। और लोगों को भी मिलजुलकर रहने का पैग़ाम दिया। उन्हें गंगा-जमुनी तहज़ीब भाती थी। यही वजह है कि डॉ. रामदरश मिश्र एवं डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने इस पुरस्कार को प्राप्त करने के बाद अपने पैग़ाम में कहा कि मैं इस पुरस्कार को प्राप्त कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

चिराग के सामने विकल्प

आदिति फडणीस
स्तंभकार

गृह मंत्री अमित शाह ऐलान कर चुके हैं कि इस साल अक्टूबर-नवंबर में संभावित बिहार विधान सभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के विजयी होने पर मुख्यमंत्री की कमान नीतीश कुमार के पास ही रहेगी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की बिहार इकाई के प्रमुख दिलीप जायसवाल ने भी शाह के सुर में सुर मिलाया है। गृह मंत्री के बयान का सीधा मतलब यह भी है कि नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) की सीटें भाजपा से कम रहने पर भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही रहेंगे। मगर बिहार में इधर-उधर जो पोस्टर दिख रहे हैं उनमें चिराग पासवान की दावेदारी नजर जा रही है। एक पोस्टर पर अंग्रेजी में लिखा है

, 'नेक्स्ट सीएम, चिराग पासवान'। दूसरे पोस्टर में हिंदी में लिखा है, 'न दंगा होगा, न फसाद होगा, न बवाल होगा, क्योंकि हमारा मुख्यमंत्री चिराग पासवान होगा।'

देश में दलित समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले दिग्गज नेताओं में एक राम विलास पासवान के पुत्र चिराग भी इस बात से इनकार नहीं कर रहे हैं कि उनमें मुख्यमंत्री बनने और यह पद संभालने की योग्यता है। वह कह भी चुके हैं कि उनकी सोच उनके पिता से अलग है, जिनकी राज्य के बजाय राष्ट्रीय राजनीति में अधिक दिलचस्पी थी। रामविलास छह प्रधानमंत्रियों के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्री रहे।

बिहार विधान सभा के आगामी चुनाव में चिराग का नारा ह्यबिहार प्रथमह्ल और 'बिहारी प्रथम' पर केंद्रित है। चिराग इस समय केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण मंत्री हैं मगर उन्होंने राज्य विधान सभा का चुनाव लड़ने की संभावनाओं से इनकार नहीं किया है। केंद्र में मंत्री के तौर पर वह हरेक कदम पर अपनी बात देश के शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचा रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कहा कि अगर मध्य प्रदेश के जनजातीय मामलों के मंत्री विजय शाह उनकी पार्टी में होते तो वे उन्हें पार्टी से आजीवन निष्कासित कर देते। शाह ने ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ल की जानकारी देने वाली कर्नल सोफिया कुरैशी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। जदयू के साथ पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी-राम विलास (लोजपा-रामविलास) राजग के साथ मुस्लिम मतदाताओं को जोड़ने का जरिया साबित हुई हैं।

मगर बड़ा सवाल यह है कि चिराग के इस आत्मविश्वास का कारण क्या है? वर्ष 2020 के विधान सभा चुनाव में वह राजग से बाहर चले गए और राज्य की 137 विधान सभा सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए थे। उनकी पार्टी केवल मटिहानी सीट जीत सकी मगर चुनाव में उसने कुल 5.7 प्रतिशत मत बटोर लिए। माना गया कि चिराग की पार्टी ने 25 से अधिक सीटों पर जदयू के वोट में सेंधमारी की और इस वजह से भी जदयू अनुमान से कमतर प्रदर्शन कर सकी। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि 25 से अधिक सीटों पर जदयू की संभावनाओं को लोजपा ने चोट पहुंचाई।

इसके बाद वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में लोजपा का प्रदर्शन सराहनीय रहा। पार्टी ने केवल पांच सीटों पर चुनाव लड़ा और पांचों जीत लाई। उसे 7 प्रतिशत मत मिले। चिराग को लगता है कि जब सभी राजनीतिक दल युवाओं के वोट बटोरने की होड़ में जुटे हैं तब बिहार में दलितों की बड़ी आबादी के लिए वह सबसे भरोसेमंद चेहरा हैं। मगर भाजपा में कई लोग ऐसा नहीं मानते।

चिराग फिल्म अभिनेता रह चुके हैं और कंगना रनौत (भाजपा की लोकसभा सांसद) के साथ एक फिल्म में काम भी कर चुके हैं। बाद में वह अपने परिवार की विरासत संभालने के लिए राजनीति में आ गए। जब तक रामविलास जीवित रहे, पार्टी के सामने आने वाली चुनौतियों से अच्छी तरह निपटते रहे। मगर उनके निधन के बाद पशुपति पारस (राम विलास के छोटे भाई) ने लोजपा तोड़ दी। चिराग को हमेशा लगा कि लोजपा को तोड़ने के पीछे भाजपा का हाथ है। जब भाजपा ने चिराग की जगह पारस को जगह दी तो वह अकेले और अलग-थलग पड़ गए। मगर 2020 के विधान सभा चुनाव में यह बात साफ हो गई कि चिराग की पार्टी के धड़े में मत प्रतिशत के लिहाज से अब भी बहुत दम बचा है। फिर भी बिहार की भाजपा इकाई में दलित नेताओं का कहना है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में चिराग का प्रदर्शन को भाजपा की सफलता माना जाए, लोजपा-रामविलास की नहीं।

अब तक चिराग राजग में आदर्श सहयोगी बने रहे हैं। उनकी पार्टी ने वक्फ विधेयक के पक्ष में मतदान किया और अपने मुस्लिम समर्थकों को अपने इस निर्णय की वजह भी पूरी तत्परता से समझाई। बिहार विधान सभा चुनाव अब नजदीक आ रहा है और अगले कुछ दिनों में सीटों की साझेदारी पर बातचीत शुरू हो जाएगी।

यह पेचीदा काम होगा और संभव है कि चिराग के कभी गरम-कभी नरम तेवर की एक वजह यह भी हो। मुख्यमंत्री पद की दावेदारी पेश करने के लिए उन्हें अधिक सीटें जीतनी होंगी मगर यह तभी होगा जब उन्हें चुनाव लड़ने के लिए पर्याप्त सीटें दी जाएंगी। बहरहाल चिराग के सामने सभी विकल्प खुले हैं। कुछ दिनों पहले ही राष्ट्रीय जनता दल (राजग) के नेता तेजस्वी यादव के साथ उनकी मुलाकात गर्मजोशी के साथ हुई।

इस बैठक के बाद दोनों ही दलों की तरफ से यह कहा गया कि राजनीति को छोड़ दें तो चिराग और तेजस्वी भाई की तरह हैं! तेजस्वी ने सार्वजनिक रूप से चिराग को केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर बिहार लौटने और राज्य की राजनीति से जुड़ने की सलाह दी है। फिलहाल ऐसा कुछ नहीं होने वाला है मगर अगले कुछ महीनों में इस मोर्चे पर बिहार की राजनीति के घटनाक्रम पर सबकी नजरें होंगी।

बकरीद एवं कबीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं
भारतीय जनता पार्टी
भाई याद राम
M. 9810555891
उपाध्यक्ष अ.जा. मोर्चा
ज़िला नजफगढ़, दिल्ली प्रदेश
ऑफिस:बी-16, शनि बाज़ार, मैट्रो रेस्टोरेन्ट के पीछे,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
प्रधान रैगर समाज पंचायत उत्तम नगर

सुरक्षा में रणनीतिक गेम चेंजर बनी ब्रह्मोस

अमित तिवारी
एयर मार्शल (अ.प्रा.)

महायुद्ध के दौरान वायु सेना के महारथी कहा करते थे कि हवाई ताकत स्वाभाविक रूप से आक्रामक होती है और इसको अपना काम करने की पूरी छूट होनी चाहिए, जीत के लिए हवाई युद्ध में श्रेष्ठता होना आवश्यक है; बमवर्षक दुश्मन की रक्षा में सेंध लगा देते हैं और इसके बाद रणनीतिक बमबारी के जरिए उसकी इच्छाशक्ति को तोड़ा जा सकता है। हालिया सैन्य कार्रवाई में, भारतीय वायु सेना द्वारा हवा से प्रक्षेपित ब्रह्मोस का समायोजन सु-खोई-30 एमकेआई लड़ाकू विमान से करने की सार्थकता फिर पुष्टि करती है कि यह सिद्धांत अभी भी उतना ही सही है, जिसकी वजह से पाकिस्तान युद्ध विराम का अनुरोध करने को मजबूर हुआ।

1983 में, भारत सरकार ने एकीकृत गाइडेड मिसाइल विकास कार्यक्रम का गठन किया। शुरूआत में यह बैलिस्टिक मिसाइलों पर केंद्रित था। लेकिन 1991 के खाड़ी युद्ध के दौरान इराकी वायु रक्षा प्रणालियों पर अमेरिकी युद्धपोतों और हवाई जहाजों से प्रक्षेपित टॉमहॉक क्रूज मिसाइलों के विनाशकारी प्रभाव ने भारत को इसका दायरा बढ़ाने को प्रेरित किया। साल 1998 में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अपने रूसी समकक्ष के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत ब्रह्मोस एयरोस्पेस संयुक्त उद्यम की स्थापना की गई। साल 2001 में ब्रह्मोस का पहला टैस्ट लॉन्च किया गया।

ब्रह्मोस एक दो-चरणीय क्रूज मिसाइल है, जिसके प्रथम चरण प्रकोष्ठ में एक ठोस प्रोपैलेंट बूस्टर भरा रहता है, जो मिसाइल को सुपरसोनिक (आवाज की गति) बना देता है। अपना काम पूरा करने के बाद, इस प्रकोष्ठ के अलग होने के उपरांत, आगे की उड़ान एक तरल-ईंधन चालित रैमजेट इंजन से होती है। जो इसे मैक-3 (ध्वनि की गति से तीन गुणा) जितनी क्रूज़िंग रफ्तार प्रदान करता है। यह मिसाइल 15 किमी की ऊंचाई लेकर महज 10 मीटर के बीच उड़ान भर सकती है और इसकी कार्य सीमा 300-800 किमी तक हो सकती है। यह 200-300 किलोग्राम तक का पारंपरिक वारहेड (विस्फोटक) ले जा सकती है और 'फायर-एंड-फॉरगेट' सिद्धांत पर काम करती है। दागे जाने के बाद, यह इनर्शियल नेविगेशन, उपग्रहीय मार्गदर्शन और इलाके की भूगोलीय रूपरेखा के मिलान का उपयोग करके अपने लक्ष्य तक स्वायत्त रूप से पहुंचती है, और एक मीटर से भी कम की सटीकता से वार करने में समर्थ है।

हवा-से-सतह पर मार करने वाला इसका संस्करण 2017 में बना और इसे 2020 में स्क्वाड्रन 222, टाइगर शार्क्स में शामिल किया गया था। ब्रह्मोस को इसकी परम गति, सटीकता और गतिज प्रभाव सबसे घातक पारंपरिक क्रूज मिसाइलों में से एक बनाती है। ब्रह्मोस की गति से बनने वाले सीधे प्रबलित प्रहार का आघात गहरे बंकरों, युद्धपोतों या कमांड सेंटर तक को नष्ट कर सकता है। इसकी गतिज यानी काईनैटिक ऊर्जा अमेरिकी टॉमहॉक मिसाइल से 32 गुना अधिक है।

जैसे-जैसे थल आधारित वायु रक्षा प्रणालियां अधिक सटीक एवं घातक होती जा रही, हवाई माध्यम (लड़ाकू विमान) को अपने काम को अंजाम देने में जो स्वतंत्रता पहले कभी हासिल थी, वह कम होती जा रही है। यूक्रेन-रूस युद्ध इसका जीवंत उदाहरण है। शुरूआती चरणों में अपने-अपने विमान बेड़े का भारी नुकसान उठाने के बाद, दोनों पक्षों ने युद्धग्रस्त क्षेत्रों में उड़ान भरने से परहेज करने और लंबी दूरी के हवाई हथियारों पर भरोसा करना शुरू किया।

यही तरीका हालिया भारत-पाक टकराव में देखने को मिला। न तो भारतीय और न ही पाकिस्तानी लड़ाकू विमान एक-दूसरे देश की वायु सीमा में दाखिल हुए। पाकिस्तानी हमलों में ज्यादा निर्भरता तुर्किये निर्मित ड्रोनों पर रही, जिनमें अधिकांश मार गिराये गये। पाकिस्तान ने 'फतह' नामक बैलेस्टिक मिसाइल का भी उपयोग किया। इन बैलिस्टिक मिसाइलों का रडार क्रॉस-सेक्शन मार्क अधिक होता है और वे एक पूवार्नुमानित लीक, उच्च-ऊंचाई वाले परवलयिक प्रक्षेप पथ (हाई आल्टीट्यूड पैराबॉलिक ट्रैजेक्ट्री) का अनुसरण करती हैं। यह उनकी कमजोरी भी बन जाता है, जिसका आकलन करके, उन्हें हवा में ही नष्ट करना आसान हो जाता है। निश्चित रूप से, भारत ने तमाम हमलावर मिसाइलों को मार गिराया। इसके विपरीत, भारत ने एकदम सटीकता के साथ

लक्ष्यों को नष्ट करने की क्षमता रखने वाली ब्रह्मोस मिसाइलों को सुखोई एमकेआई-30 से छोड़ा। हालांकि विस्तृत परिणाम गोपनीय ही रहेंगे, लेकिन इनकी मार का असर निर्विवाद है। इन मिसाइलों ने सटीक हमले के मकसद हासिल करते हुए, पायलटों के लिए न्यूनतम जोखिम सुनिश्चित किया। कम ऊंचाई पर उड़ने की अपनी क्षमता, सुपरसोनिक क्रूज प्रोफाइल के कारण, ब्रह्मोस को मौजूदा वायु रक्षा प्रणालियों के साथ रोक पाना लगभग असंभव है।

भारतीय वैज्ञानिक पहले से ही भविष्य के अधिक घातक संस्करण, ब्रह्मोस-एनजी (नेक्स्ट जेनरेशन) विकसित करने में लगे हैं। यह छोटी और हल्की होंगी और तेजस, मिराज और राफेल जैसे विमानों से छोड़ी जा सकेंगी। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह करते वक्त गति, दायरा, मारक क्षमता या चुपके से मार करने की विशेषता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। एक्टिव इलेक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड ऐरे रडार से लैस करने से इनकी सटीकता और बढ़ जाएगी। ठीक इसके साथ, रूसी जिरकोन मिसाइल से प्रेरित, ब्रह्मोस-क्क के रूप में एक हाइपरसोनिक संस्करण विकसित किया जा रहा है। इसमें स्क्रैमजेट इंजन लगा होगा, जिससे गति 8 मैक से अधिक और रेंज 1,500 किमी से अधिक हो जाएगी। इसे रोकना असंभव होगा। यह मिसाइल सच में गेम चेंजर हो सकती है।

किसी देश के रणनीतिक प्रभाव को बढ़ाने में हथियारों का निर्यात महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने वाला फिलीपींस 2022 में इसका पहला ग्राहक बना। वियतनाम और इंडोनेशिया ने भी दिलचस्पी दिखाई है। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति से बनती चिंताओं के आलोक में, आसियान देशों द्वारा ब्रह्मोस खरीदना उनकी क्षेत्रीय प्रतिरोधक क्षमता को मजबूती प्रदान कर सकता है। इस विशिष्ट बाजार में भारत के प्रवेश से एशियाभर में इसके सामरिक और आर्थिक संबंध मजबूत होंगे।

ब्रह्मोस की सफलता 'आत्मनिर्भर भारत' को बढ़ावा देने वाले सरकार के प्रयासों का एक उदाहरण है। इस मिसाइल में 70 प्रतिशत से अधिक कल-पुर्जे भारत निर्मित हैं। इसकी सफलता से डीआरडीओ, भारतीय उद्योगों और शिक्षाविदों के बीच सहयोग और नवाचार को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

ब्रह्मोस की सफलता युद्ध के मैदान की बदलती प्रकृति का प्रमाण है, जो अब रणनीति आधारित योजना से बदलकर तकनीकी रूप से संचालित युद्धक तौर-तरीकों की ओर बढ़ रही है, विशेष रूप से क्रूज मिसाइलों जैसे सटीक-निर्देशित हथियारों का उदय। सुरक्षा परिदृश्य में ब्रह्मोस एक सामरिक संपदा और रणनीतिक गेम-चेंजर बनने जा रही है।

(लेखक भारतीय वायुसेना की मध्य भारत कमान में एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ रहे हैं।)

अशोक कुमार झा
वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार

झारखंड की नौकरशाही में भ्रष्टाचार का दीमक

झारखंड की नौकरशाही के भ्रष्टाचार के शिकंजे में आने का ताजा उदाहरण झारखंड के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी विनय कुमार चौबे की गिरफ्तारी है। एंटी करप्शन ब्यूरो ने राज्य के बहुचर्चित शराब घोटाले में कथित संलिप्तता के आरोप में उन्हें हिरासत में लिया।

कौन हैं विनय कुमार चौबे?

विनय कुमार चौबे झारखंड कैडर के वरिष्ठ और प्रभावशाली आईएएस अधिकारियों में गिने जाते हैं। वर्तमान में वे पंचायती राज विभाग के प्रधान सचिव हैं। और इसके पूर्व वे स्वास्थ्य, शहरी विकास, गृह, श्रम, परिवहन सहित कई महत्वपूर्ण विभागों में सेवाएं दे चुके हैं। अपने प्रशासनिक करियर में वे कई बार सुर्खियों में रहे– कभी सख्त फैसलों के लिए तो कभी विवादास्पद निर्णयों के लिए।

उनकी कार्यशैली को लेकर विभागों में भले ही मतभेद रहे हों, लेकिन प्रशासनिक गलियारों में वे हमेशा एक रणनीतिक नौकरशाह माने जाते रहे हैं। यही वजह है कि उनकी गिरफ्तारी को एक आम भ्रष्टाचार विरोधी कार्रवाई नहीं, बल्कि संवेदनशील सत्ता-तंत्र के झटके के रूप में देखा जा रहा है।

क्या है झारखंड का शराब घोटाला?

वर्ष 2022 के बाद झारखंड में शराब कारोबार को सरकारी नियंत्रण में लाया गया जिसके पीछे मंशा थी – अधिक राजस्व, पारदर्शी प्रणाली और संगठित नियंत्रण लेकिन व्यवहार में यह पूरी व्यवस्था एक सुनियोजित लूट की योजना बनकर सामने आई।

सरकार को सालाना हजारों करोड़ का राजस्व मिलना था लेकिन शराब निगम की रिपोर्ट में घाटा दिखाया गया। फर्जी स्टॉक, नकली बिलिंग, डंपिंग, कमीशनबाजी, रिटेल लाइसेंस में धांधली, गोदामों में स्टॉक के फर्जी आंकड़े, इन सबने मिलकर एक ऐसा भ्रष्ट तंत्र खड़ा किया जिसने खजाने को लूटा और उसे नियंत्रित करने वाला तंत्र आंखें मूंदे रहा।

अब तक की जांचों में यह स्पष्ट हुआ कि इसमें उच्चस्तरीय प्रशासनिक संरक्षण भी शामिल था। यहीं से चौबे का नाम सामने आता है।

विनय कुमार चौबे की भूमिका पर सवाल

जब यह घोटाला अपने चरम पर था, तब विनय कुमार चौबे आबकारी, उत्पाद एवं नीतिगत निर्णयों से जुड़े पदों पर थे। जांच एजेंसियों ने पाया कि:

- कई विवादास्पद ठेकों और आवंटन आदेशों पर उनका हस्ताक्षर मौजूद है।
- कंपनियों को मनमाने लाभ पहुँचाने वाली फाइलें उनकी स्वीकृति से आगे बढ़ी थीं।
- कुछ संदिग्ध वित्तीय लेन-देन, प्रशासनिक पत्राचार और व्हाट्सएप चैट की प्रमाणिकता अब उनके खिलाफ अहम सबूत माने जा रहे हैं।

ऐसे में ACB की यह गिरफ्तारी एक महत्वपूर्ण मोड़ है लेकिन साथ ही यह सवाल भी उठाती है कि क्या यह कार्रवाई केवल चौबे तक ही सीमित रहेगी?

आईएएस विनय कुमार चौबे की हालिया गिरफ्तारी ने न केवल सरकार को शर्मसार किया है बल्कि पूरे राज्य की नौकरशाही को कटघरे में खड़ा कर दिया है मगर यह मामला कोई अपवाद नहीं है – यह एक श्रृंखला है, जिसमें झारखंड की मलाईदार कुर्सियों पर बैठे कई बड़े अफसर पहले ही काले कारनामों के कारण उजागर हो चुके हैं।

आईएएस पूजा सिंघल – झारखंड की नौकरशाही की सबसे शर्मनाक गिरफ्तारी

एमएनरेगा घोटाला, खान आवंटन में घोटाले और संदिग्ध निवेश में फंसी पूजा सिंघल के रांची आवास से ईडी ने 19.31 करोड़ रुपए नकद बरामद किए थे। सिंघल पर खूंटी और चतरा में 18 से अधिक फर्जी योजनाओं में फंड डायवर्जन का आरोप था। झारखंड के सबसे गरीब जिलों में शामिल खूंटी, सिमडेगा, चतरा जैसे इलाकों में जिन योजनाओं का पैसा दिवालिया ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए था, वही पैसा अफसरों के ड्रॉअर और दलालों के बिस्तरों के नीचे मिला।

यह पहला मौका था जब एक मौजूदा

दूसरा मत

बकरीद की हार्दिक शुभकामनाएं

पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

सचिव स्तर की महिला आईएएस अधिकारी को भ्रष्टाचार के मामले में सीधे जेल भेजा गया।

राजीव अरुण एक्का – मुख्यमंत्री के दरबार से जांच एजेंसी के दायरे में

मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव रहे राजीव एक्का का एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें वे एक निजी व्यक्ति को सरकारी फाइलें सौंपते नजर आ रहे थे। बाद में खुलासा हुआ कि यह व्यक्ति शासन से जुड़ी कई फाइलों में बिचौलिये की भूमिका निभा रहा था। राज्य सरकार की छवि पर गहरा धब्बा लगा लेकिन अब तक की कार्रवाई केवल जांच के कागजों तक सीमित है।

अब तक उनके खिलाफ किसी ठोस कानूनी कार्रवाई का अभाव यही संकेत देता है कि जो सत्ता के ज्यादा करीब होता है, वो कानून से ज्यादा दूर खड़ा हो जाता है।

सैयद रजिया : झारखंड कैडर की आईएएस अधिकारी, जिन पर 2010 में मनरेगा घोटाले में शामिल होने के आरोप लगे थे। हालांकि उन्हें बाद में तकनीकी आधार पर राहत मिली।

प्रशांत कुमारः झारखंड में अवैध खनन और ठेका आवंटन से जुड़े मामलों में इनका नाम आया। सीबीआई और ईडी दोनों की निगरानी में रहे।

संदीप कुमार : गोड्डा के उपायुक्त के रूप में कार्यरत रहते हुए इन पर जमीन आवंटन और निर्माण ठेकों में गड़बड़ी के आरोप लगे। जांच लंबित है।

अजय सिंह झ झारखंड शिक्षा परियोजना से जुड़े घोटाले में संदिग्ध भूमिका पर सवाल उठे। बाद में तबादला और विभागीय जांच।

झारखंड की अफसरशाहीः सेवा नहीं, सत्ता के साझेदार

इन मामलों से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड की नौकरशाही का एक वर्ग अब केवल 'नियोजन, निष्पादन और निगरानी' का कार्य नहीं कर रहा बल्कि यह वर्ग अब सत्ता की नीतियों को मोड़ने, संसाधनों को हड़पने और योजनाओं को लूटने के लिए जिम्मेदार हो गया है।

सरकारी निविदाओं में कमीशनबाजी, पदों का दुरुपयोग, संपत्ति का बेहिसाब विस्तार, जमीन सौदे और बिचौलियों से गठजोड़ – यह सब अब राज्य की नौकरशाही की नई पहचान बन गई है।

एक राज्य जहां खनिज, जंगल, जल और जनशक्ति भरपूर है, वहां सरकारी योजनाएं कागजों में पूरी और जमीनी स्तर पर अधूरी रहती हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है – प्रशासनिक भ्रष्टाचार।

मनरेगा, आवास योजना, पेंशन, स्वास्थ्य उपकरण खरीद, स्कूल निर्माण, सड़कें, जल-निकासी, खनन पट्टे, बालू घाट – किसी भी योजना या सेवा को लें, हर जगह कमीशन, दलाली, और घोटालों की परतें दिखेंगी। कारण, यहाँ के ऊपर अफसर अब नीति निमार्ता नहीं बल्कि नीति व्यापारी बन चुके हैं।

क्या ACB स्वतंत्र है?

इस कार्रवाई ने यह बहस भी छेड़ दी है कि क्या ACB जैसी एजेंसियां राजनीतिक इशारों पर कार्रवाई करती हैं या ईमानदारी से काम कर रही हैं? क्योंकि झारखंड में कई अन्य घोटाले भी उजागर हो चुके हैं – माइनिंग, एमजीएनरेगा, बालू घाटों की लीजिंग, स्वास्थ्य उपकरण, सोलर पैनल, विद्यालय निर्माण आदि, लेकिन कार्रवाई कुछ ही चेहरों पर होती है।

यदि ACB ईमानदारी से और बिना दबाव के कार्य करती है, तो आने वाले दिनों में कई और बड़े नाम सामने आ सकते हैं।

क्या केवल अफसर दोषी हैं? या पूरा तंत्र सड़ा हुआ है?

यह मान लेना मूर्खता होगी कि एक आईएएस अधिकारी अकेले पूरे तंत्र को गुमराह कर सकता है। हकीकत यह है कि हर घोटाले के पीछे नेताओं का संरक्षण, दलालों की लॉबी, मीडिया में चुप्पी और सिस्टम की शह शामिल रहती है।

आईएएस अफसर सिर्फ मोहरा हैं, असली खिलाड़ी वे लोग हैं जो सत्ता में बैठे हैं और इन अफसरों से मनमानी नीतियां लागू करवाते हैं। जनता का प्रश्नः क्या कार्रवाई केवल कुछ नामों तक सीमित रहेगी? पूजा सिंघल और विनय चौबे जैसे अफसरों पर कार्रवाई के बावजूद एक सवाल कायम है कि क्या पूरे सिस्टम पर चुप्पी एक सोची-समझी रणनीति है? क्योंकि अगर घोटाले होते हैं तो एक सचिव अकेले नहीं करता। उसमें निचले से ऊपरी स्तर तक पूरा तंत्र शामिल होता है – अधिकारी, ठेकेदार, राजनेता और सरकारी एजेंसियां। क्या उन सब पर भी कार्रवाई होगी? क्या हर घोटाले का सिर्फ एक 'चेहरा' मीडिया के लिए पेश करके मामला बंद कर दिया जाएगा? क्या भ्रष्टाचार की बुनियाद को जड़ से हटाने का कोई राजनीतिक-संवैधानिक इच्छाशक्ति राज्य में है?

यह समय झारखंड के लिए एक निर्णायक मोड़ है। अगर इस बार भी कार्रवाई केवल चेहरों तक सीमित रही, तो आने वाले समय में न केवल जनता का विश्वास टूटेगा, बल्कि राज्य की निवेश, विकास और सुशासन की संभावनाएं भी खत्म हो जाएंगी।

जरूरत हैः

- भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसियों को पूर्ण स्वतंत्रता और संसाधन देने की।
- प्रशासनिक कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही लाने की।

• घोटालों के दोषियों को राजनीतिक संरक्षण से बाहर कर न्याय के दायरे में लाने की।

• एक उच्च स्तरीय स्वतंत्र जांच आयोग के गठन की, जो पिछले 10 वर्षों के भ्रष्टाचार मामलों की समीक्षा करे।

लोकतंत्र का मतलब सिर्फ चुनाव नहीं होता बल्कि जवाबदेही भी होता है!

झारखंड जैसे जनजातीय, खनिज और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य में यदि कअर अधिकारी करोड़ों की लूट के लिए अपनी कलम बेचते हैं, तो यह लोकतंत्र की सबसे भयावह त्रासदी है। ऐसे में सिर्फ गिरफ्तारी नहीं, पूरे सिस्टम का शुद्धिकरण आवश्यक है।

आज आवश्यकता है ईमानदार प्रशासकों के साथ जनता की भागीदारी और सशक्त मीडिया की – जो हर भ्रष्टाचार की परत उधेड़े, भले वह किसी भी सत्ता या कुर्सी से जुड़ी हो।

झारखंड की जनता अब थक चुकी है। हर बार जब घोटाला होता है, कुछ दिन बाद किसी कअर का नाम सामने आता है, मीडिया हल्ला मचाता है, और फिर मामला ठंडा हो जाता है। क्या इस बार भी ऐसा ही होगा?

इ क्या विनय कुमार चौबे, पूजा सिंघल, राजीव एक्का जैसे नामों तक ही कार्रवाई सीमित रहेगी?

• क्या अब तक इन अफसरों से लाभ लेने वाले राजनेता भी कभी कटघरे में खड़े होंगे?

• क्या झारखंड सरकार खुद कोई उच्चस्तरीय स्वतंत्र जांच आयोग बनाएगी?

लोकतंत्र की लाचारीः जनता देख रही है, मगर कहां है उसकी आवाज?

जब अफसरशाही गुलाम बन जाए, न्यायपालिका मौन हो, मीडिया बिक जाए और सरकार रक्षा के बजाय मूकदर्शक बनी रहे – तो लोकतंत्र केवल एक खोखली अवधारणा बनकर रह जाता है। झारखंड का लोकतंत्र आज उसी दौर से गुजर रहा है।

झारखंड को केवल नाम बदलने, घोषणाएं करने या योजनाएं लाने की जरूरत नहीं है। उसे चाहिएः

• एक निडर प्रशासनिक व्यवस्था,
• एक प्रेस जो सत्ता से सवाल कर सके,
• एक जनता जो अपने अधिकार को सिर्फ वोट तक सीमित न रखे,
• और एक राजनीति जो सेवा से शुरू और जवाबदेही पर खत्म हो।

झारखंड के लिए यह अवसर है – या तो पूरा तंत्र शुद्धिकरण की ओर बढ़े, या फिर यह राज्य भ्रष्टाचार की स्थायी राजधानी बन जाए।

आज झारखंड की भोली भाली जनता पूछ रही है कि क्या इस बार सचमुच बदलाव होगा, या फिर एक और घोटाला गुमनामी के अंधेरे में खो जाएगा? किसे सजा मिलेगी – मोहरे को या बादशाह को भी ?

आज झारखंड को आत्मशुद्धि की जरूरत है – व्यवस्था बदलने की नहीं, उसे ईमानदार बनाने की। अंत में केवल एक सवाल यह बचता है कि क्या झारखंड का लोकतंत्र अब भी ज़िंदा है या वह भी इन गिरफ्तारियों की तरह कैद हो चुका है?

(लेखक, रांची दस्तक के प्रधान संपादक हैं। ये लेखक के अपने विचार हैं)

जीवन रेखा बनाना होगा जल संचयन को

दीपक कुमार शर्मा

भारत में वर्षा जल संचयन बाजार का मूल्य वर्ष 2024 में लगभग 263 मिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया था। इसके 2030 तक 378 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। वर्षा जल संचयन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्षा के जल को इकट्ठा करके, संगृहीत कर विभिन्न उपयोगों हेतु प्रयोग किया जाता है। जिससे यह जल व्यर्थ बहने के बजाय एक उपयोगी संसाधन बन जाता है। एक टिकाऊ तकनीक छतों, जमीन की सतहों अथवा अन्य संग्रहण क्षेत्रों से वर्षा जल को पाइपों या नालियों के माध्यम से टंकियों, हौदों अथवा जलाशयों में पहुंचाकर संचयित करती है। यह एक प्राचीन परंपरा है, जिसे आज जल संकट और पर्यावरणीय चुनौतियों को देखते हुए पुनः अपनाया जा रहा है।

संगृहीत वर्षा जल का उपयोग सिंचाई, घरेलू जरूरतों, औद्योगिक प्रक्रियाओं और भूजल पुनर्भरण के लिए किया जा सकता है। यह न केवल नगरपालिका जल आपूर्ति पर निर्भरता को घटाता है, बल्कि मिट्टी के कटाव को रोकने और शहरी बाढ़ को कम करने में भी सहायक होता है। इसके अतिरिक्त, यह आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है और अनिश्चित वर्षा वाले क्षेत्रों में एक स्थायी जल स्रोत उपलब्ध कराता है।

यह पर्यावरण-मित्र विधि विशेष रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में अत्यंत लाभदायक है, जहां जल संसाधनों की भारी कमी है। यह एक कम लागत और सरल पद्धति है, जिसे व्यक्तिगत आवासों से लेकर सामुदायिक परियोजनाओं तक विभिन्न स्तरों पर अपनाया जा सकता है। यदि इसे शहरी और ग्रामीण योजना में समाहित किया जाए तो जल संकट का समाधान संभव है और टिकाऊ जल प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सकता है।

केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जल प्रबंधन को लेकर सख्त नीतियां लागू की गई हैं। जैसे कि 'अमृत मिशन' में वर्षा जल संचयन को शहरी जल संकट के समाधान का अभिन्न अंग बनाया गया है। तमिलनाडु जैसे राज्यों ने सभी भवनों में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य कर दिया है, जो अब देश के अन्य हिस्सों में भी लागू किया जा रहा है। तमिलनाडु ने यह पहल 2001 में शुरू की गई थी। इसके अलावा, स्थानीय निकाय करों में छूट और वित्तीय सहायता भी प्रदान करते हैं जिससे इन प्रणालियों की स्थापना को प्रोत्साहन मिलता है। 2023 में केंद्रीय भूजल बोर्ड के अध्ययन के अनुसार, तमिलनाडु में निगरानी किए गए 72 फीसदी कुओं में भूजल स्तर में वृद्धि दर्ज की गई है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जैसे अनियमित वर्षा और सूखे की घटनाओं ने वर्षा जल संचयन की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। गैर-सरकारी संगठनों, स्कूलों और मीडिया द्वारा चलाए जा रही जागरूकता अभियानों ने लोगों को इस दिशा में प्रेरित किया है।

भारत का शहरीकरण तीव्र गति से हो रहा है–2021 में लगभग 500 मिलियन की शहरी आबादी 2031 तक 600 मिलियन तक पहुंचने की संभावना है। शहरी क्षेत्र जहां कंक्रीट का वर्चस्व होता है, वहां वर्षा जल का प्राकृतिक भूजल पुनर्भरण बहुत कम हो पाता है। ऐसी स्थिति में वर्षा

जल संचयन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

दरअसल, इस अभियान की एक प्रमुख चुनौती जनसामान्य में तकनीकी जानकारी और जागरूकता की कमी है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। अनेक लोग इसे जटिल और महंगा मानते हैं, जिससे इसका व्यापक स्तर पर क्रियान्वयन प्रभावित होता है। तकनीकी विशेषज्ञता की कमी, गलत डिजाइन और रखरखाव में लापरवाही के कारण कई प्रणालियां विफल हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय बाधाएं भी हैं। गरीब वर्ग और छोटे किसान इस प्रणाली की लागत वहन नहीं कर पाते, जबकि सरकारी सब्सिडी कई बार पर्याप्त नहीं होती या उन तक पहुंच नहीं पाती।

अब वर्षा जल संचयन में स्मार्ट तकनीक का प्रयोग होने लगा है। सेंसर-आधारित प्रणालियां, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और डेटा विश्लेषण की मदद से जल स्तर की निगरानी, गुणवत्ता परीक्षण और स्वचालित नियंत्रण संभव हो गया है। उदाहरण के लिए, टंकियों में लगे सेंसर पानी की मात्रा और स्वच्छता के स्तर की जानकारी देते हैं। शहरी क्षेत्रों में अब विकेंद्रीकृत वर्षा जल संचयन प्रणालियां लोकप्रिय हो रही हैं, जो एक-एक भवन या समाज स्तर पर काम करती हैं। यह प्रणाली नगरपालिका पर निर्भरता को घटाकर स्थानीय स्तर पर जल संकट का समाधान करती है। ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणीकरण और सरकारी प्रोत्साहनों ने इसे और बल दिया है।

उल्लेखनीय है कि हरियाणा सरकार के अनुसार, ह्यमेरा पानी झ मेरी विरासतह्न जैसी पहल से 2023-24 में लगभग 24.87 खरब लीटर पानी की बचत की गई। सितंबर, 2024 में प्रधानमंत्री ने गुजरात के सूरत में ह्यजल संचय जन भागीदारीह्न अभियान की शुरूआत की, जो 'जल शक्ति अभियान : कैच द रेन' के तहत समुदाय-आधारित जल संरक्षण को बढ़ावा देती है। फरवरी, 2023 में स्ट्रोमसेवर ने दो नई घरेलू वर्षा जल संचयन प्रणालियां पेश कीं, जो विशेष रूप से गर्मियों में जल संकट और आवासीय मांग को ध्यान में रखकर डिजाइन की गई हैं।

यदि सही नीति, जागरूकता और तकनीकी सहायता जल संचयन को मिलती रहे तो यह देश के जल संकट का एक स्थायी समाधान बन सकता है। विशेषकर हरियाणा जैसे राज्यों में जहां भूजल स्तर खतरनाक रूप से नीचे जा रहा है, वहां इस प्रणाली को अनिवार्य रूप से अपनाना आवश्यक हो गया है। सरकार, समाज और उद्योगों के सम्मिलित प्रयासों से ही बात बनेगी।

राज्य और केंद्र मध्यम अवधि के लक्ष्यों पर जुटे

नीति आयोग के लिए राज्यों की वित्तीय स्थिति एक प्रमुख विषय रहा है। आयोग ने पिछले छह महीनों के दौरान अपना पहला राजकोषीय सेहत सूचकांक जारी किया है जिसमें उसने पश्चिम बंगाल और पंजाब जैसे राज्यों की वित्तीय स्थिति पर गंभीर चिंता जताई है। आयोग ने राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक शोध परिषद के साथ मिलकर राज्य आर्थिक मंच की भी शुरूआत की। यह मंच राज्यों के पास उपलब्ध रकम का विश्लेषण करेगा और अपनी प्रतिक्रिया देगा।

ध्रुवाक्ष साहा

नीति आयोग ने राज्यों को लघु और मध्यम अवधि के लक्ष्य तैयार करने के लिए कहा है। नीति आयोग ने '2047 तक विकसित भारत के लिए विकसित राज्य' योजना के अंतर्गत विकास लक्ष्य पूरे करने के लिए यह रणनीति अपनाने के लिए कहा है। इनमें 2047 तक भारत को 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के प्रमुख लक्ष्य के साथ ही 2030 और 2035 तक सटीक एवं पूरे किए जाने वाले लक्ष्य भी शामिल हैं।

2030 के लिए निर्धारित लक्ष्यों के तहत आधारभूत सुधारों, त्वरित सफलताओं, विशेष परियोजनाओं पर बदलाव के शुरूआती संकेतकों पर ध्यान केंद्रित किए जाएंगे। जहां तक मध्यम अवधि के लक्ष्यों का सवाल है तो नीति आयोग के दृष्टिकोण पत्र के अनुसार राज्यों को संस्थागत बदलाव, वृहद स्तर पर बुनियादी ढांचों के विकास, विभिन्न क्षेत्रों को प्रतिस्पर्द्धी बनाना और समावेशी सामाजिक बदलाव पर जोर देना होगा।

नीति आयोग की संचालन समिति की बैठक के बाद एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने कहा, ' तत्कालीन लक्ष्यों को ध्यान में रखने से केंद्र को यह जानने में मदद मिलती है कि किन मोर्चों पर राज्यों की मदद करनी है। यह रणनीति अपनाकर सामाजिक, भौतिक एवं डिजिटल ढांचे में विकास और लॉजिस्टिक के निर्यात से जुड़े विषयों पर अधिक लाभकारी चर्चा करने में मदद मिलती है।'

आयोग के अनुसार अगले दो दशकों में भारत का आकार उसकी मौजूदा स्थिति की तुलना में लगभग 8 गुना हो जाएगा। इसका मतलब यह है कि 2047 में भारत का जो स्वरूप दिखेगा उसका 80 प्रतिशत हिस्सा अगले दो दशकों में तैयार होगा। आयोग के अनुसार केंद्र और राज्य सरकारों के संयुक्त प्रयासों से ही यह संभव हो पाएगा। नीति आयोग द्वारा जारी दृष्टिकोण पत्र में कहा गया है, 'विकसित भारत के लिए विकसित राज्य पहली शर्त है।'

गुजरात, आंध्र प्रदेश और पंजाब जैसे राज्य अपने दृष्टिकोण पत्र पहले

ही तैयार कर चुके हैं और मध्यम अवधि के लक्ष्य निर्धारित कर लिए गए हैं। इस मामले की जानकारी रखने वाले अधिकारियों के अनुसार शनिवार को नीति आयोग की संचालन परिषद की बैठक के दौरान अवसंरचना और लॉजिस्टिक पर कई राज्यों ने प्रमुखता से जिक्र किया था। पिछले केंद्रीय बजट में घोषित पूर्वोदय योजना में आने वाले राज्यों में ज्यादातर इस ढांचे में शामिल किए जा चुके हैं या शामिल कर लिए जाएंगे। बैठक के बाद आयोग के सीईओ बी वी आर सुब्रमण्यम और सदस्य रमेश चंद ने कहा कि एक समिति (चंद की अध्यक्षता में) ने पूर्वोदय योजना के लाभार्थी राज्यों ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड और आंध्र प्रदेश के लिए योजना रिपोर्ट तैयार की है।

चंद ने कहा, 'राज्य अपनी प्रतिक्रियाएं एवं अपने सुझाव देंगे और हम 15 जून तक रिपोर्ट जारी कर दी जाएगी।'

एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि पूर्वोदय योजना के अंतर्गत लॉजिस्टिक की निर्बाध निर्यात नीति आयोग के लिए एक प्रमुख लक्ष्य रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बैठक में राज्यों के साथ चर्चा के दौरान निर्यात पर विशेष जोर दिया।

नीति आयोग ने जारी एक बयान में कहा, 'प्रधानमंत्री ने राज्यों को इस अवसर का लाभ उठाने और निवेश का मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यूएई, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के साथ हाल में हुए व्यापार समझौतों का जिक्र किया और राज्यों से कहा कि उन्हें इनका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।'

ढांचागत क्षेत्र के लिए योजना तैयार करने और चुनौतियों को दूर करने के लिए गति-शक्ति योजना के अधिक इस्तेमाल पर भी राज्यों के साथ चर्चा चल रही है।

नीति आयोग के लिए राज्यों की वित्तीय स्थिति एक प्रमुख विषय रहा है। आयोग ने पिछले छह महीनों के दौरान अपना पहला राजकोषीय सेहत सूचकांक जारी किया है जिसमें उसने पश्चिम बंगाल और पंजाब जैसे राज्यों की वित्तीय स्थिति पर गंभीर चिंता जताई है। आयोग ने राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक शोध परिषद के साथ मिलकर राज्य आर्थिक मंच की भी शुरूआत की। यह मंच राज्यों के पास उपलब्ध रकम का विश्लेषण करेगा और अपनी प्रतिक्रिया देगा।

साइबर कवच की कमियां

दिनेश सी. शर्मा
विज्ञान मामलों के विशेषज्ञ

पिछले दिनों जब भारत-पाकिस्तान टकराव के दौरान देश के रणनीतिक महत्त्व के ठिकानों को निशाना बनाकर दागी गई मिसाइलों और ड्रोनों को मार गिराया जा रहा था तो ठीक उसी वक्त दुश्मन द्वारा सीमावर्ती क्षेत्र में चल रहे इस संग्राम के अलावा भी एक महत्वपूर्ण परिचालन को बाधित करने के प्रयास किए जा रहे थे। देश की साइबर सुरक्षा एजेंसी, भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (सीईआरटी-आईएन) ने रैनसमवेयर हमलों, डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस (डीडीओएस) घटनाओं के अतिरिक्त कुछ रक्षा संस्थाओं की वेबसाइटों को बिगाड़ने, डेटा में सेंध लगाने और मैलवेयर इन्फेक्शन के रूप में साइबर हमलों में अत्यधिक वृद्धि की पहचान की व उसे विफल किया।

ऐसे हमलों को सिस्टम और सेवाओं की इंटेग्रिटी, गोपनीयता और उपलब्धता के लिए बड़ा जोखिम माना जाता है। एजेंसी ने उच्च खतरे की रेटिंग वाले साइबर हमलों को लेकर चेतावनी जारी की थी। इसके आधार पर, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और अन्य वित्तीय एजेंसियों ने अपने सदस्यों और बाजार प्रतिभागियों को सतर्क किया। उन्हें साइबर सुरक्षा तंत्र की समीक्षा करने और महत्वपूर्ण डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के कदम उठाने के लिए आवश्यक उपाय करने की सलाह दी गई।

बैंकिंग, शेयर बाजार, वित्तीय सेवाएं, लाभ हस्तांतरण और ई-शिक्षा जैसी डिजिटल सेवाओं की सुरक्षा इस 'रीढ़' यानी दूरसंचार और इंटरनेट इंफ्रास्ट्रक्चर के सुरक्षित रहने पर निर्भर है। यह आगे हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और नेटवर्क सुरक्षित रहने पर आधारित है। इस ह्यरीढ़ह्व में किसी भी स्तर पर सेंध संभावित रूप से करोड़ों लोगों को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि लगभग 115 करोड़ भारतीय दूरसंचार नेटवर्क और उन पर आधारित सेवाएं उपयोग करते हैं। सुरक्षा में सेंध का जोखिम न्यूनतम रखने का मतलब है हार्डवेयर और स-ॉफ्टवेयर का हरेक अंग निरापद बनाना- दूरसंचार नेटवर्क और क्लाउड सर्वर से लेकर मोबाइल फोन और सुरक्षा कैमरे तक को।

हाल के वर्षों में, स्विच, राउटर, रिपीटर और गेटवे जैसे महत्वपूर्ण दू-

रसंचार नेटवर्क उपकरणों का आयात, या तो सीधे जेडटीई और हुआवे जैसी चीनी कंपनियों से या उनकी घटक कंपनियों से किया गया, जो भारत सहित कई देशों में चिंता का विषय है। ऐसे हार्डवेयर ऑनबोर्ड सॉफ़्टवेयर में, फैक्टरी सेटिंग्स और डिफॉल्ट पासवर्ड में पहले से ही संलग्न रहते हैं जिनसे गंभीर सुरक्षा जोखिम हो सकता है।

इस खतरे को भांपते हुए, जो बाइडेन प्रशासन ने दूरसंचार नेटवर्क से चीनी उपकरणों को 'चिह्नित करने और बदलने' के लिए 2021 में 'रिप-एंड-रिप्लेस' पहल शुरू की थी। कुछ यूरोपीय संघ के सदस्य देशों ने भी अपने 5-जी नेटवर्क में चीनी कंपनियों की भागीदारी सीमित करने या हटाने के कदम उठाए। भारत में भी विशेषज्ञों ने ऐसी ही पहलकदमी का सुझाव दिया, क्योंकि चीनी उपकरणों पर सरकारी प्रतिबंधों के बावजूद, कई आपूर्तिकर्ता चीनी कंपनियों से दूरसंचार उपकरण खरीदना जारी रखे हैं। पिछले साल वॉयस ऑफ इंडियन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी एंटरप्राइजेज नामक उद्योग संगठन के किए गए अध्ययन में चेतावनी दी गई कि सुरक्षा क्षेत्र में संवेदनशील उत्पादों सहित चीनी मूल के कई उत्पादों को सरकारी और सार्वजनिक उपक्रमों की खरीद में शामिल करने की अनुमति दी हुई थी। निर्देश हैं कि सरकारी एजेंसियों को अपनी आवश्यकता की पूर्ति गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) पोर्टल से करनी चाहिए। किंतु कई व्यापारी चीन से उपकरण खरीदकर, इन्हें वाया सिंगापुर या थाईलैंड भारत लाकर बेचते हैं, व इनमें मामूली हेरफेर कर, 'मेड इन इंडिया' का ठप्पा लगाकर जीईएम पर बेचने के लिए सूचीबद्ध करते हैं। रक्षा इकाइयों सहित सरकारी एजेंसियां, जीईएम पोर्टल से ऐसे ड्रोन खरीद रही थीं, जिनमें कुछ चीनी मूल के थे। सीईआरटी-आईएन के किए एक विश्लेषण के अनुसार, मानव रहित विमान प्रणाली या ड्रोनों के हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, संचार प्रणाली और परिचालन प्रक्रियाओं के अंदर जटिल अंतःक्रियाएं शामिल होती हैं- जिनमें मैलवेयर से संक्रमित होने का जोखिम बना रहा है। मसलन, मैलवेयर को स्वीकार किए गए किसी नए अपडेट या रिमोट सर्विस एक्सेस के माध्यम से ड्रोन के फर्मवेयर में इंजेक्ट किया जा सकता है, जिससे आगे भी मैलवेयर डालने, डाटा तक अनधिकृत पहुंच करने या परिचालन को बिगाड़ा जा सकता है। यह मैलवेयर छेड़छाड़ किए गए अपडेट्स या रिमोट सेवा से भी डालना संभव है। इसलिए, संवेदनशील उपकरण के लिए सोर्स कोड तक पहुंच होना महत्वपूर्ण है, और यह तभी संभव है जब सप्लायर भारत का हो।

सप्लायर मानकों और विनियमों में कमजोरियों का भी लाभ उठाते हैं। मसलन, लगभग 450 कंपनियां बिना कोई राष्ट्रीय मानक प्रमाणपत्र जीईएमपोर्टल पर सुरक्षा कैमरे बेचती पाई गईं। एसटीक्यूसी (मानकीकरण परीक्षण और गुणवत्ता प्रमाणन) प्रणाली के तहत गुणवत्ता, सुरक्षा और साइबर सुरक्षा मानकों पर कसने और लागू करने के बाद, इनमें केवल 13 कंपनियां ही योग्यता पर खरी उतरीं।

दूरसंचार प्रणाली का सबसे छोटा हिस्सा, जैसे सिम कार्ड भी असुरक्षित हो सकता है क्योंकि इसमें एम्बेडेड सॉफ़्टवेयर या ऑपरेटिंग सिस्टम (मोबाइल फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम के अलावा) होते हैं। मोबाइल फोन कंपनियां चीन सहित विभिन्न स्रोतों से सिम कार्ड में इस्तेमाल होने वाले चिपसेट खरीदती हैं। भारत में उपयोग किए जा रहे सिमकार्डों में बड़ी संख्या में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के तहत राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक कार्यालय द्वारा अनिवार्य 'विश्वसनीयता स्रोत अनुमोदन' प्रमाणपत्र बगैर चल रहे हैं। इनमें से कुछ सिम संवेदनशील पदों और स्थानों पर कार्यरत लोगों के फोन में हो सकते हैं, जो बड़ा जोखिम पैदा करते हैं। हाल ही में, सरकार ने इस मुद्दे पर ध्यान देना शुरू किया। इसका उपाय है, ऐसे करोड़ों सिम कार्ड बदलना और भारतीय ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग अनिवार्य करना। लेबनान में पेजर और वॉकी-टॉकी उपकरण फटने की याद अभी भी ताजा है। अतीत में, हमारे यहां निःशुल्क ईमेल सेवाएं, जैसे चीनी स्कैनिंग सॉफ़्टवेयर कैमस्कैनर (अब प्रतिबंधित) और सुरक्षा जोखिम वाले वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ़्टवेयर का उपयोग संवेदनशील सरकारी कार्यालयों में उपयोग किए जाने के उदाहरण हैं। अब, भारत में एलन मस्क के स्टारलिंक की हाई-स्पीड सैटेलाइट इंटरनेट सेवा को मंजूरी देने की संभावना है। सुरक्षा चिंताओं से इसे अब तक मंजूरी नहीं मिली थी।

पिछले साल नवंबर में, अंडमान में बड़ी मात्रा में नशीली दवाएं जब्त करते वक्त भारतीय एजेंसियों ने पाया कि इस धंधे में शामिल मछली पकड़ने वाला एक जहाज स्टारलिंक इंटरनेट डिवाइस का उपयोग कर रहा था। मणिपुर में भी सुरक्षा एजेंसियों ने सशस्त्र जनजातीय विद्रोहियों पर डाली दबिशों में हथियारों के अलावा स्टारलिंक इंटरनेट डिवाइसेस पकड़े। स्टारलिंक द्वारा भारत में आधिकारिक रूप से सेवाएं प्रदान न किए जाने के बावजूद ये घटनाएं दर्शाती हैं कि कैसे कोई शैतान उपयोगकर्ता इंटरनेट एक्सेस संबंधी प्रतिबंध बाईपास कर काम कर सकता है। कई देशों में इनके जरिए सीमापार जासूसी की चिंताएं जताई गई हैं।

सभी संचार सेवाएं महत्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा हैं, जिनका परिचालन विदेशी संस्थाओं द्वारा करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए या पूर्ण सुरक्षा उपाय किए बगैर एम्बेडेड ऑपरेटिंग सिस्टम वाले विदेशी उपकरणों पर निर्भर नहीं हों। ड्रोन या सैटेलाइट टर्मिनल जैसे हार्डवेयर में ऑपरेटिंग सिस्टम और एम्बेडेड सॉफ़्टवेयर के मामले में, सोर्स कोड तक पहुंच बनाने की मांग हमें उनसे करनी चाहिए। जहां उपलब्ध हो, घरेलू उत्पाद ही खरीदा जाना चाहिए। सभी नागरिकों और साथ ही रणनीतिक संचार प्रणालियों की साइबर सुरक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी भारतीय हवाई क्षेत्र की सुरक्षा के लिए 'आयरन डोम'।

(लेखक विज्ञान मामलों के विशेषज्ञ हैं।)

पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया

डॉ. जगदीप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

भारत निर्वाचन आयोग ने हाल ही में मतदाता सूची में इलेक्टर्स फोटो आइडेंटिटी कार्ड यानी ईपीआईसी नंबरों की डुप्लिकेशन समस्या को हल करने के लिए नए पहचान पत्र जारी करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय लगभग दो दशक पुरानी एक तकनीकी समस्या को संबोधित करता है, जिसमें विभिन्न राज्यों के मतदाताओं को गलती से एक जैसे ईपीआईसी नंबर आवंटित हो गए थे। इसके परिणामस्वरूप मतदान के दौरान भ्रम की स्थिति उत्पन्न हुई, कुछ मत अमान्य घोषित किए गए, और चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगने लगे।

ईपीआईसी नंबर, जिसे आमतौर पर वोटर आईडी के रूप में जाना जाता है, भारतीय मतदाताओं की पहचान का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह प्रत्येक मतदाता को मतदाता सूची में एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है, जो निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया के लिए आवश्यक है। निर्वाचन आयोग ने इस समस्या के समाधान के लिए नए और अद्वितीय ईपीआईसी नंबरों के साथ मतदाता पहचान पत्र जारी करने का निर्णय लिया है। यह कदम मतदाता डेटाबेस को अद्यतन और त्रुटिरहित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस निर्णय का प्रभाव केवल तकनीकी सुधार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह भारतीय राजनीति और चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता को भी सुदृढ़ करेगा।

डुप्लिकेट ईपीआईसी नंबरों की समस्या ने मतदाता सूची की सटीकता पर गंभीर प्रश्न खड़े किए थे। नए पहचान पत्रों के जारी होने से मतदाता डेटाबेस अधिक विश्वसनीय और पारदर्शी बन सकेगा, जिससे निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता और कार्यक्षमता को बल मिलेगा तथा मतदाताओं का विश्वास और बढ़ेगा। पूर्व में, डुप्लिकेट ईपीआईसी नंबरों के कारण कई मतदाताओं को मतदान करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, और कुछ मामलों में उनके मत अमान्य कर दिए जाते थे। अब, नए और अद्वितीय ईपीआईसी नंबरों के माध्यम से मतदाताओं को अपनी पहचान सत्यापित करने में सुविधा होगी, जिससे मतदान प्रक्रिया अधिक सुचारु और समावेशी बन सकेगी।

यह निर्णय निर्वाचन आयोग के डिजिटल और तकनीकी आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डुप्लिकेशन की समस्या को समाप्त करने के लिए डेटाबेस को अद्यतन करने और एक केंद्रीकृत प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता थी। यह भविष्य में अन्य तकनीकी सुधारों– जैसे आधार से मतदाता सूची को जोड़ने या बायोमेट्रिक सत्यापन को लागू करने – के लिए आधार प्रदान कर सकता है। साथ ही, यह निर्णय चुनावी धोखाधड़ी, जैसे फर्जी मतदान, को रोकने में सहायक सिद्ध होगा।

ईपीआईसी नंबर डुप्लिकेशन का मुद्दा हाल के महीनों में राजनीतिक विवाद का केंद्र रहा है। तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस जैसे विपक्षी दलों ने इस मुद्दे को उठाकर निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता पर प्रश्न उठाए थे। उनका आरोप था कि अन्य राज्यों के मतदाताओं के ईपीआईसी नंबरों का उपयोग करके फर्जी मतदान किया जा रहा है। इस समस्या के समाधान से आयोग अपनी साख में सुधार ला सकता है और राजनीतिक दलों के बीच विश्वास पुनः स्थापित कर सकता है। हालांकि, कुछ दल इस मुद्दे का राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करते रह सकते हैं, लेकिन अब यह मुद्दा पहले की तुलना में कम प्रासंगिक रहेगा।

यह निर्णय मतदाता सूची और संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इससे राजनीतिक दलों और नागरिक समाज को व्यापक चुनावी सुधारों, जैसे मतदाता सूची का डिजिटलीकरण,

पारदर्शी मतदान प्रणाली, और ईवीएम-वीवीपैट की विश्वसनीयता पर विमर्श के लिए प्रेरणा मिल सकती है।

हालांकि यह निर्णय सकारात्मक दिशा में एक बड़ा कदम है, लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियां होंगी। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में नए ईपीआईसी कार्डों का वितरण एक जटिल प्रक्रिया हो सकती है। साथ ही, मतदाताओं को नए कार्डों के बारे में जागरूक करना और पुराने कार्डों को अमान्य करने की प्रक्रिया को भी प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। भविष्य में, निर्वाचन आयोग को ऐसी समस्याओं से बचने के लिए और अधिक सुदृढ़ तकनीकी समाधानों– जैसे ब्लॉकचेन आधारित मतदाता डेटाबेस या बायोमेट्रिक एकीकरण – पर विचार करना चाहिए। साथ ही, राजनीतिक दलों और नागरिकों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना आवश्यक होगा ताकि चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर कोई संदेह न रहे।

निर्वाचन आयोग का ईपीआईसी नंबर डुप्लिकेशन समस्या के समाधान के लिए लिया गया निर्णय भारतीय चुनाव व्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। यह कदम मतदाता सूची की विश्वसनीयता को सुदृढ़ करेगा, मतदान प्रक्रिया को सुगम बनाएगा और चुनावी धोखाधड़ी को रोकने में मदद करेगा। राजनीतिक दृष्टिकोण से, यह आयोग की निष्पक्ष छवि को पुनर्स्थापित कर सकता है तथा विपक्षी दलों की रणनीतियों को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, इस निर्णय का पूर्ण प्रभाव इसके प्रभावी कार्यान्वयन और मतदाताओं के बीच जागरूकता पर निर्भर करेगा। यह पहल भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी तथा समावेशी बनाने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

(लेखक अस्सिटेंट प्रोफेसर हैं।)

जीत की संभावना तलाशें

डॉ. मधुसूदन शर्मा

जीवन एक यात्रा है-कभी सहज, तो कभी जटिल। जीवन यात्रा में जितनी सफलता की ऊंचाइयां हैं, उतनी ही हार की गहराइयां भी हैं। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में हार का सामना करता है तो उसका सबसे पहला स्वाभाविक भाव निराशा होता है। अपनी पराजय के लिए या तो हम हम स्वयं को दोष देने लगते हैं या फिर परिस्थितियों को कोसते हैं। लेकिन यदि हम थोड़ा धैर्य रखें तो पायेंगे कि हार केवल एक रुकावट नहीं बल्कि कुछ सीखने का अवसर है। यह हमारे दृष्टिकोण, योजनाओं तथा आत्ममूल्यांकन को गहराई से देखने का समय होता है।

हमारे समाज में हार को नकारात्मकता से देखा जाता है। बच्चों को बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि सिर्फ 'जीतना ही महत्वपूर्ण है।' समाज में कभी भी हार की स्वीकार्यता नहीं रही। जबकि सच्चाई यह है कि पराजय आत्मदृष्टि का अवसर प्रदान करती है। वह संकेत देती है कि कहीं कुछ अधूरा रह गया है-संभवतः हमारी तैयारी में,दृष्टिकोण में या आत्मविश्वास की दृढ़ता में। जब हम हार को एक शिक्षक के रूप में स्वीकार करते हैं, तब हम उसके अंदर निहित सफलता की संभावनाओं की तलाश कर पाते हैं।

इतिहास साक्षी है कि सफलता की नींव अक्सर असफलताओं की ईंटों से रखी जाती है। अब्राहम लिंकन ने कई चुनाव हारे। व्यापार में असफल रहे। लेकिन अंततः वह अमेरिका के सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रपति बने। हैरी पॉटर की लेखिका जे.के. रोलिंग को तमाम प्रकाशकों ने अस्वीकार कर दिया था। पर उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने आत्मविश्वास को बना प्रयत्न जारी रखा। अंततः एक छोटे से प्रकाशक ब्लूम्सबरी ने उनकी पांडुलिपि को स्वीकृति दे दी और वह इतिहास बन गया। वह कहती थीं, यदि आपका विश्वास अडिग है तो अस्वीकृतियां केवल सीढ़ियां है सफलता की ओर।

अगर हम सफल होना चाहते हैं तो असफलता की चेतना को आश्रय न दें। असफलता तब ही स्थाई बनती है,जब हम उसे भीतर बसा लेते हैं। एक असफल प्रयास को यदि हम आत्म छवि में बदल लें, तो वह हमे भीतर से खोखला कर देती है। लकिन यदि हम उसे केवल एक अनुभव मानें, एक पाठ की तरह ग्रहण करें तो वह हमें मजबूत बनाता है। चेतना की दिशा ही हमारे जीवन की दिशा तय करती है। इसलिए मन में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि आप असफल नहीं हैं।

परमहंस योगानंद जी का एक प्रेरणादायक कथन है- 'असफलता का समय ही सफलता के बीज बोने के लिए सर्वोत्तम समय है।' यह कथन जीवन के गहरे सत्य को उजागर करता है। जीवन के सबसे कठिन क्षणों में हमारा अंतर्मन सबसे अधिक उपजाऊ भूमि होती है। इस समय आत्मविश्वास, धैर्य और विवेक के बीज बोए जा सकते हैं। ये बीज एक दिन सफलता के वटवृक्ष बनते हैं। हमारी संस्कृति और अध्यात्म भी हमें सिखाते हैं कि असफलता कोई स्थाई स्थिति नहीं होती, बल्कि वह आत्मविश्लेषण, आत्मसुधार और आत्मोत्थान का एक अवसर होती है। श्रीराम का वनवास एक हार नहीं, बल्कि दिव्य जीवन के नए अध्याय की शुरूआत थी। महाभारत के कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन का मोह युद्ध से पहले ही पराजय लगता है पर वह विचार गीता के ज्ञान का द्वार बन गया।

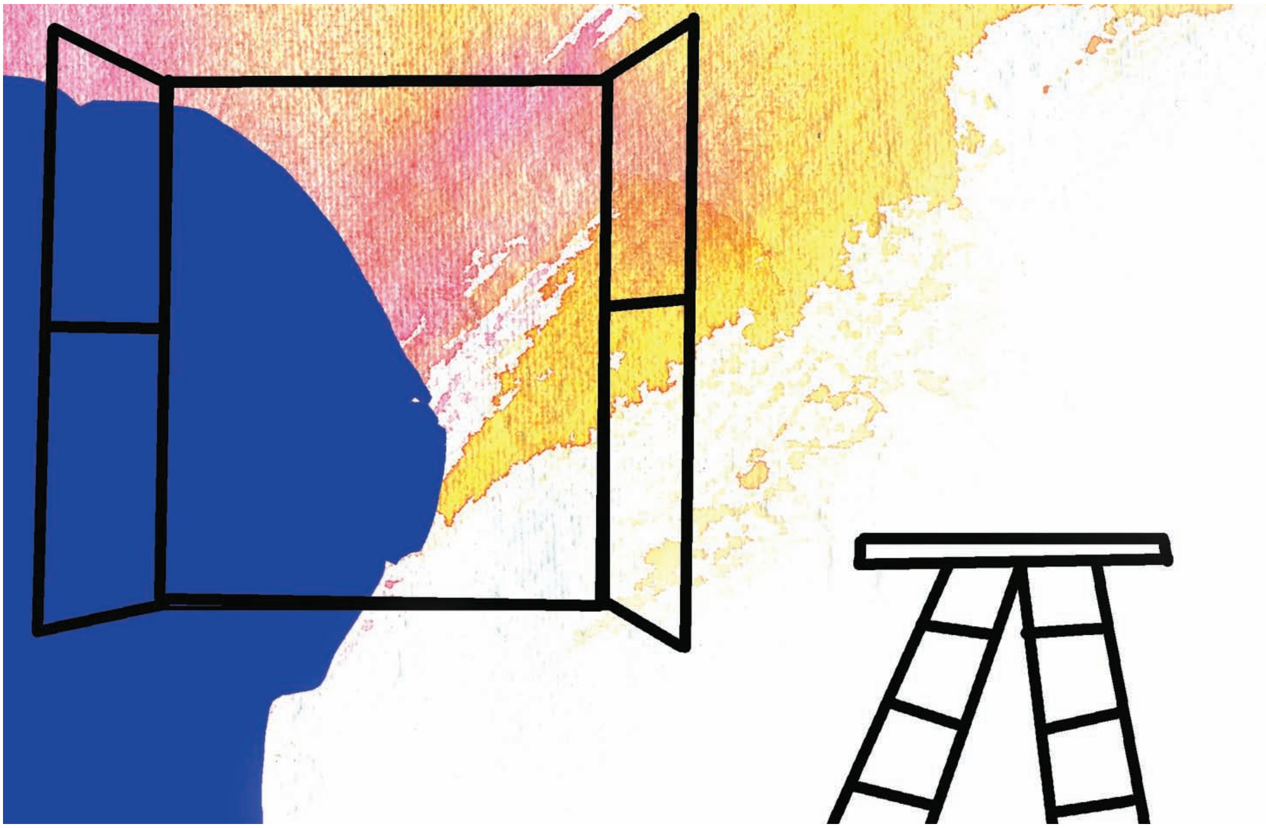

ये सभी उदाहरण बताते हैं कि असफलताओं के पीछे असीम सफलताओं की संभावना छिपी होती है। यहां परमहंस योगानंद जी का यह कथन मार्गदर्शक बनता है, ह्यजब असहनीय चुनौतियों का पहाड़ आप पर टूट पड़े, तब साहस और सूझबूझ न खोएं। अपनी अंतर्ज्ञानजनित सहज बुद्धि तथा ईश्वर में आस्था को सक्रिय रखिए, उस संकट से बच निकलने का कोई न कोई रास्ता खोजने का प्रयास कीजिए। चाहे वह रास्ता कितना भी असंभव क्यों न लगे और आपको मार्ग मिल जाएगा। अंत में सब ठीक हो जाएगा क्योंकि परमात्मा ने जीवन के क्षणभंगुर अनुभवों में दिखने वाले सतही विरोधाभासों के पीछे अपना वरदान छिपा कर रखा हुआ है। अपनी सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिए परमात्मा की सहायता लें।

हम सभी अपने जीवन में कभी न कभी असफलता देखते हैं। यह असफलता एक परीक्षा में भी हो सकती है किसी रिश्ते में, करिअर में या आत्मसंघर्ष के किसी गहरे मोड़ पर भी हो सकती है। इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। यह तो आत्ममंथन का अवसर है। जब हम असफलताओं से टूट रहे होते हैं तो हमारे अंतर्मन से एक आवाज आती है, 'उत्साह और धैर्य के साथ पुनः प्रयास करो। यह असफलता तुम्हारे लिए ऊपर उठने का एक अवसर है।' मनुष्य का अंतर्मन अद्भुत क्षमता से युक्त होता है। जैसे ही कोई असफलता जीवन यात्रा का एक द्वार बंद करती है, अंतर्मन सफलता की खिड़की खोल देता है। जब अंतर्मन कुछ करने के लिए संकल्प लेता है तो सारा ब्रह्मांड उसकी सहायता करने लगता है।

वैवाहिक रिश्ते बहाली कानून मतलब व्यक्तिगत आजादी और निजता को तरजीह

डॉ. सुधीर कुमार
सहायक प्रोफेसर, स्तंभकार

अगर पति-पत्नी अलग हो जाते हैं, तो कानून एक को मजबूर कर सकता है कि वह वापस दूसरे के साथ जाकर रहे। इसे वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना कहते हैं। भारतीय कानून में, यह प्रावधान प्रमुखतः हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 9 के तहत आता है। यानी अगर किसी पति या पत्नी को बिना किसी वजह छोड़ दिया है, तो यह कानून उन्हें अदालत में जाकर कहने का अधिकार देता है कि वे अपना वैवाहिक जीवन फिर शुरू करना चाहते हैं। इसे कहते हैं, 'चलो फिर से साथ रहो' का कानूनी तरीका।

लेकिन आजकल लोग अपनी आजादी और मर्जी को ज्यादा मानने लगे हैं। अदालतें भी सोचने लगी हैं कि किसी को जबरदस्ती साथ रहने के लिए कहना ठीक नहीं। इसलिए, अब वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना पहले जितना आसान नहीं रहा। अदालतें अब यह देखती हैं कि क्या वाकई दोनों साथ रह सकते हैं या फिर उन्हें अपनी ज़िंदगी अपनी मर्जी से जीने का हक है। अब यह ज्यादा 'पसंद' की बात हो गई है, न कि सिर्फ कर्तव्य की। अब कानून नहीं कहता कि हर हाल में साथ रहो। देखता है कि क्या दोनों अपनी इच्छा से साथ रहना चाहते हैं।

पहले माना जाता था कि विवाह में पति-पत्नी का एक साथ रहना उनका कर्तव्य है, और यदि कोई एक साथी अलग रहना चाहता था, तो अदालत उसे वापस आने के लिए मजबूर कर सकती थी। लेकिन, अब अदालतें भी समझने लगी हैं कि किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध रिश्ते में रहने को मजबूर करना सही नहीं। कानून 'कर्तव्य' से 'पसंद' की ओर बढ़ रहा है।

कई अन्य देशों में, वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना का कानून या तो पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है, या इसे बहुत ही कम और विशिष्ट हालात में इस्तेमाल किया जाता है। इन देशों में कानूनी दृष्टिकोण इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति को इस मामले में अधिकार होना चाहिए कि वह किसके साथ अपना जीवन बिताना चाहते हैं। यानी राज्य को इस व्यक्तिगत और अंतरंग मामले में हस्तक्षेप का हक नहीं। इस सोच के पीछे अहम कारण निजी स्वतंत्रता और स्वायत्तता को सर्वोपरि माना जाना है। पति हो या पत्नी, दूसरे के साथ रहने के लिए मजबूर करना मानवाधिकार उल्लंघन माना जाता है। यह निजता के अधिकार और यह तय करने की स्वतंत्रता का हनन है कि वे निजी जीवन में कैसे संबंध रखना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त, कई देश तर्क देते हैं कि जबरदस्ती से बनाए गए रिश्ते अक्सर अस्वस्थ और दुखद होते हैं। यदि एक साथी संबंध से बाहर निकलना चाहता है, तो उसे वापस रहने के लिए मजबूर करने से केवल तनाव, मनमुटाव और संभावित दुर्व्यवहार ही बढ़ सकता है। कानून का उद्देश्य रिश्तों को बनाए रखना होना चाहिए, लेकिन ऐसे रिश्तों को नहीं जो आपसी सहमति और सम्मान पर आधारित न हों। कुछ देशों ने इस कानून को इसलिए समाप्त कर दिया कि यह लैंगिक रूप से पक्षपातपूर्ण है। इस का इस्तेमाल अक्सर महिलाओं को उनके अनिच्छुक पतियों के साथ वापस रहने के लिए मजबूर करने को किया जाता था, जबकि पुरुषों को ऐसी बाध्यता का सामना शायद ही कभी करना पड़ा।

भारत में भी अदालतें वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना कानून के बारे में चिंताएं व्यक्त कर रही हैं। उनका मानना है कि इस कानून का इस्तेमाल किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह में बने रहने के लिए मजबूर करने के लिए किया जा सकता है। यह चिंता महिलाओं के लिए अधिक है, जिन्हें अक्सर अपने पति के साथ रहने के लिए बाध्य किया जाता है, भले ही वे दुर्व्यवहार, क्रूरता झेल रही हों। अदालतों की चिंता यह भी कि क्या यह कानून नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। मुख्य रूप से, अदालतें निजता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकारों के संभावित उल्लंघन पर फोकस कर रही हैं, जिसकी अनुच्छेद 21 के तहत गारंटी है।

आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने टी. सरिता बनाम टी. वेंकट सुब्बैया (1983) के अहम मामले में हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 9, जो वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना से संबंधित है, को असंवैधानिक घोषित किया था। तर्क दिया था कि यह कानूनी प्रावधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता के अधिकार का उल्लंघन करता है। इस मामले में न्यायमूर्ति पी.ए. चौधरी ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि यह धारा एक व्यक्ति को उसकी शारीरिक स्वायत्तता से वंचित करती है, जिससे राज्य को निजी संबंधों के क्षेत्र में हस्तक्षेप की अनुमति मिल जाती है, जो अस्वीकार्य है। हालांकि, इस निर्णय को अगले ही वर्ष, सरोज रानी बनाम सुदर्शन कुमार चोपड़ा (1984) के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने पलट दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने धारा 9 की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखते हुए तर्क दिया कि इस प्रावधान का मुख्य उद्देश्य वैवाहिक कलह रोकना और विवाह संस्था को संरक्षित करना है। हालांकि इस फैसले में भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद के अधिकारों पर चिंताएं व्यक्त की गईं। इसके बाद, के.एस. पुट्टस्वामी (सेवानिवृत्त) बनाम भारत संघ (2017) का ऐतिहासिक फैसला आया, जिसने निजता के हक को संविधान के तहत मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित किया। इस न्यायिक घोषणा के बाद, वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के प्रावधान की संवैधानिकता पर फिर से गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना का कानून भारत में मान्य है, लेकिन निचली अदालतें इसे लागू करने में सतर्कता बरत रही हैं। वे उन मामलों में पुनर्स्थापना की डिक्री पारित करने से हिचकिचाती हैं जहां स्पष्ट हो जाता है कि विवाह अपरिवर्तनीय रूप से टूट चुका है, जहां जबरदस्ती, क्रूरता या दुर्व्यवहार के गंभीर आरोप लगे हैं, या संभावना हो कि डिक्री जारी करने से मौलिक अधिकार का उल्लंघन होगा।

(लेखक कु.वि. के विधि विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।)

सबक सिखाने को जरूरी

डॉ. जयंतीलाल भंडारी
अर्थशास्त्री, स्तंभकार

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कार्रवाई पर चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा दिखाई दिया। चीन ने न केवल पाकिस्तान को पूर्ण समर्थन दिया, बल्कि उसे मिसाइलों सहित विभिन्न हथियारों की आपूर्ति भी की। हालांकि चीन निर्मित जिन हथियारों का पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ प्रयोग किया, वे पराक्रमी भारतीय सेना और प्रभावी सैन्य व्यवस्था को हानि

पहुंचाने में नाकाम रहे। दरअसल,चीन अप्रत्यक्ष रूप से भारत को आर्थिक शक्ति बनने से रोकना चाहता है। ऐसे में अब भारत द्वारा पाकिस्तान पर कड़े आर्थिक प्रतिबंधों के साथ ही चीन से बढ़ते आयात को नियंत्रित करके उसे भी आर्थिक सबक दिया जाना जरूरी है।

हालिया आंकड़ों के मुताबिक चीन के साथ द्विपक्षीय कारोबार में भारत लगातार घाटे में है। पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में चीन को भारत का निर्यात 14.5 प्रतिशत घटकर 14.25 अरब डॉलर रह गया, जबकि 2023-24 में यह 16.66 अरब डॉलर था। चिंताजनक यह कि चीन से 2024-25 में आयात 11.52 प्रतिशत बढ़कर 113.45 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2023-24 में यह 101.73 अरब डॉलर था। चीन के साथ व्यापार घाटा बीते वित्त वर्ष में करीब 17 प्रतिशत बढ़कर 99.2 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 में 85.07 अरब डॉलर था। चीन 2024-25 में 127.7 अरब डॉलर द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा। चीन पर निर्भरता कम करने के जो रणनीतिक कदम उठाए गए हैं, उनका कोई विशेष असर नहीं दिखा। अब पाकिस्तान को खुला समर्थन दे रहे चीन के साथ कोई छह माह पूर्व भारत ने मित्रता की जिस राह को आगे बढ़ाया था, उसे रोककर चीन के साथ कारोबार असंतुलन कम करने को कदम उठाने जरूरी हैं।

गौरतलब है कि पिछले वर्ष 31 अक्तूबर को दीपावली के दिन वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत-चीन के सैनिकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाई थी। इसका कारण था कि पिछले वर्ष 23 अक्तूबर को रूस के कजान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच सफल द्विपक्षीय वार्ता हुई जिसमें दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया था। दोनों नेताओं ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैन्य गतिरोध हल करने के लिए समझौते का स्वागत किया और अधिकारियों को लद्दाख में सीमा विवाद सुलझाने के लिए बातचीत जारी रखने के निर्देश दिए। इस वार्ता के बाद सैन्य स्तर पर क्रियान्वयन के साथ डेमचोक और डेपसांग क्षेत्रों में टकराव बिंदुओं से सैनिकों की वापसी के बाद से लगातार पेट्रोलिंग हो रही है। यद्यपि चीन से नए सैन्य समझौते के बाद भारत को वहां से ज्यादा आयात से बचने के लिए सावधानी बरतना जरूरी लग रहा था, लेकिन भारत ऐसा नहीं कर पाया व चीन से आयात बढ़ते गए।

कोई दो मत नहीं कि चीन पाकिस्तान को आतंकी प्रोत्साहन देते हुए भारत की तेजी से बढ़ती आर्थिकी की राह में बाधक बनना चाहता है। चीन जानता है कि भारत अपनी बढ़ती आर्थिक साख व तेजी से इसी वर्ष 2025 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिकी बनते हुए दिखाई देगा! हाल ही में प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की रिपोर्ट के अनुसार, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इसी वर्ष 2025 के अंत तक भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। उस समय देश का जीडीपी बढ़कर 4.187 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा और यह जापान के जीडीपी 4.186 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा होगा। रिपोर्ट में कहा गया कि विकास की ऊंची दर से भारत का जीडीपी 2028 में बढ़कर 5.584 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

इसी तरह हाल ही में वैश्विक रेटिंग एजेंसी मॉर्निंग स्टार डीबीआर-एस ने भारत की सॉवरेन रेटिंग को निम्नतम निवेश ग्रेड 'बीबीबी (कम)' से एक पायदान ऊपर उठाकर 'बीबीबी' कर दिया है। रेटिंग प्रवृत्ति को भी ह्रासकारात्मकह्न से ह्रस्थिरह्न कर दिया गया है। इस रेटिंग एजेंसी ने उन्नयन के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश और डिजिटलीकरण, राजकोषीय समेकन, व्यापक आर्थिक स्थिरता के साथ सतत उच्च विकास और लचीली बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से देश के संरचनात्मक सुधारों का हवाला दिया है। दुनिया के उभरते हुए देशों में भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से आगे बढ़ रही है। बीती अप्रैल में जीएसटी संग्रह 2.09 लाख करोड़ रुपए के स्तर पर पहुंच गया, जो किसी माह अभी तक का सर्वाधिक राजस्व है। पिछले वर्ष 2024-25 में जीएसटी और इनकम टैक्स संग्रह रिकॉर्ड ऊंचाई पर रहा।

निश्चित रूप से भारत को आर्थिक रूप से आगे बढ़ने से रोकने और शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रहे चीन से व्यापार घाटा कम करने के लिए सरकार को कारगर प्रयास करने होंगे। कोई दो मत नहीं कि पिछले एक दशक से स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहित करके चीन से आयात घटाने के प्रयास हुए। वर्ष 2019 और 2020 में चीन की भारत के प्रति आक्रामक और विस्तारवादी नीति सामने आई, तो स्थानीय उत्पादों के उपयोग की लहर देश में बढ़ती दिखाई दी। वोकल फॉर लोकल मुहिम के प्रसार ने स्थानीय उत्पादों की खरीदी को पहले की तुलना में अधिक समर्थन दिया। अब एक बार फिर से देश के करोड़ों लोगों को चीनी उत्पादों की जगह स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के नए संकल्प के साथ आगे बढ़ना होगा। चीन के लिए भारत के विशाल बाजार में आयातों में कमी आर्थिक प्रहार के रूप में दिखाई देगी और इससे स्वदेशी उद्योग तथा एमएसएमई लाभान्वित होंगे।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं।)

▸▸ललित गर्ग
स्तंभकार

पत्रकारिता को मिशन बनाना होगा

भारत में हिन्दी पत्रकारिता की न केवल आजादी के संघर्ष में बल्कि उससे पूर्व के गुलामी की बेड़ियों में जकड़े राष्ट्र की संकटपूर्ण स्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, नए बनते भारत में यह भूमिका अधिक महसूस की जा रही है, क्योंकि तब से आज तक समाज की आवाज उठाने, सत्ता से सवाल पूछने और जनभावनाओं को मंच देने में इसका योगदान अविस्मरणीय रहा है। हिंदी पत्रकारिता या स्थानीय पत्रकारिता, लोगों को उनकी भाषा में जानकारी उन तक पहुंचाता है और देश भर में ज्ञान के व्यापक प्रसार को सुगम बनाता है। हर साल 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है, दरअसल दो शताब्दी पूर्व ब्रिटिशकालीन भारत में जब तत्कालीन हिन्दुस्तान में दूर दूर तक मात्र अंग्रेजी, फारसी, उर्दू एवं बांग्ला भाषा में अखबार छपते थे, तब देश की राजधानी 'कलकत्ता' से हिन्दी भाषा में 'उदन्त मार्तण्ड' के नाम से पहला हिन्दी समाचार पत्र वर्ष 1826 को छपा था। पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने इसे साप्ताहिक के तौर पर शुरू किया था। इसके प्रकाशक और संपादक भी वे खुद थे। भले ही अब यह समाचार पत्र बंद हो गया है, लेकिन इसने हिंदी पत्रकारिता के सूर्य को उदित कर दिया था जो आज भी देदीप्यमान है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदी के अनेक दैनिक समाचार पत्र निकले जिनमें हिन्दुस्तान, भारतोदय, भारतमित्र, भारत जीवन, अभ्युदय, विश्वमित्र, आज, प्रताप, विजय, वीर अर्जुन आदि प्रमुख हैं। बीसवीं शताब्दी के चौथे-पांचवें दशकों में अमर उजाला, आर्यावर्त, नवभारत टाइम्स, नई दुनिया, जागरण, पंजाब केसरी, नव भारत आदि प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार पत्र सामने आए। लोकतंत्र में मीडिया चौथे स्तंभ के रूप में खड़ा है, पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से हम देश की वर्तमान स्थिति से अवगत रहते हैं। पत्रकार अथक परिश्रम करते हैं, ताकि समाचार हमारे घर तक तुरंत पहुंचे। चाहे अखबारों के जरिए हो, टीवी चैनलों के जरिए हो या सोशल मीडिया के व्यापक प्रभाव के जरिए, नित-नये बनते एवं बदलते समाज में पत्रकारिता की शक्ति को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाने और सूचित संवाद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिन्दी पत्रकारिता में क्रांतिकारिता का रंग गणेश शंकर विद्यार्थी ने भरा था। उन्होंने उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर से 9 नवंबर, 1913 को 16 पृष्ठ का 'प्रताप' समाचार पत्र शुरू किया था। यह काम शिव नारायण मिश्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, नारायण प्रसाद अरोड़ा और कोरोनेशन प्रेस के मालिक यशोदा नंदन ने मिलकर किया था। शिव नारायण मिश्र और गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' को अपनी कर्मभूमि बना लिया। विद्याथीर्जी के समाचार पत्र प्रताप से क्रांतिकारियों को काफी बल मिला। मुंशी प्रेमचंद महा- लेखक-कहानीकार होने के साथ-साथ हिन्दी के क्रांतिकारी एवं जुझारू पत्रकार थे, उनकी पत्रकारिता भी क्रांतिकारी थी, लेकिन उनके पत्रकारीय योगदान को लगभग भूला ही दिया गया है। जंगे-आजादी के दौर में उनकी पत्रकारिता ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध ललकार की पत्रकारिता थी। वे समाज की कुरीतियों एवं आडम्बरों पर प्रहार करते थे तो नैतिक मूल्यों की वकालत भी करते थे। मेरा सौभाग्य है कि मैं राजस्थान के यशस्वी पत्रकार स्व. श्रीरामस्वरूप गर्ग के पुत्र होने के नाते विरासत में पत्रकारिता के मूल्यों को आत्मसात करने का मौका मिला। उन्होंने 1936 एवं उसके बाद के दौर में 'राष्ट्रवाणी' एवं 'परिवर्तन' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। वे राजस्थान के प्रतिष्ठित दैनिक नवज्योति के साप्ताहिक रूप में निकले प्रारंभिक अंकों के सम्पादक रहे। इसका प्रारंभ पण्डित जवाहरलाल नेहरू के निजी सचिव रहे श्री रामनारायण चौधरी ने किया था।

आज जबकि हिन्दी देश एवं दुनिया में सर्वाधिक बोली एवं प्रयोग की जाने वाली तीसरी भाषा बन चुकी है, ऐसे में सहज ही हिन्दी पत्रकारिता का मूल्य बढ़ा है। निस्संदेह, सजग, सतर्क और निर्भीक हिन्दी पत्रकार एवं पत्रकारिता एक सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाकर सत्ताधीशों को राह ही दिखाता है। अकबर इलाहाबादी ने इसकी ताकत एवं महत्व को इन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है कि 'न खींचो कमान,

न तलवार निकालो, जब तोप हो मुकाबिल तब अखबार निकालो।' उन्होंने इन पंक्तियों के जरिए हिन्दी पत्रकारिता को तोप और तलवार से भी शक्तिशाली बता कर इनके इस्तेमाल की बात कह गए हैं। अर्थात कलम को हथियार से भी ताकतवर बताया गया है। पर खबरनवीसों की कलम को तोड़ने, उन्हें कमजोर करने एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को निस्तेज करने के लिए बुरी एवं स्वार्थी ताकतें सत्ता, तलवार और तोप का इस्तेमाल कर रही हैं। लेकिन तलवार से भी धारदार कलम इसीलिये इतनी प्रभावी है कि इसकी वजह से बड़े-बड़े राजनेता, उद्योगपतियों और सितारों को अर्श से फर्श पर आना पड़ा।

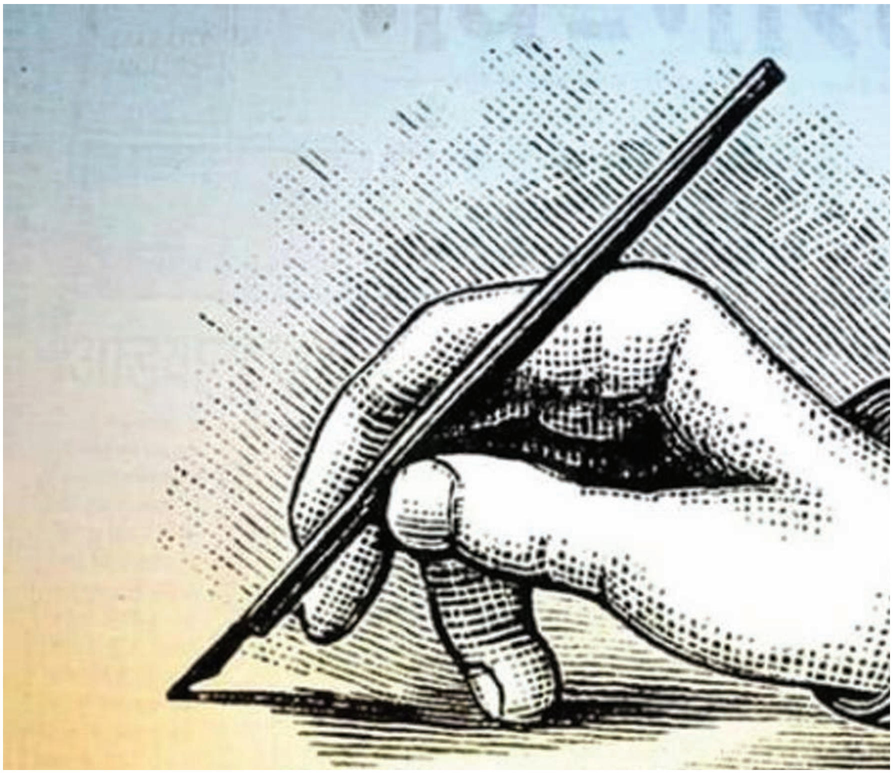

हिन्दी पत्रकार एवं पत्रकारिता कई संकटों का सामना कर रहे हैं- संघर्ष और हिंसा, आतंक एवं अलगाव, साम्प्रदायिकता एवं अंधधार्मिकता, युद्ध एवं राजनीतिक वर्चस्व, गरीबी एवं बेरोजगारी, लगातार सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, पर्यावरणीय संकट और लोगों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए चुनौतियां आदि जटिलतर स्थितियों के बीच हिन्दी पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोकतंत्र, कानून के शासन और मानवाधिकारों को आधार देने वाली संस्थाओं पर गंभीर प्रभाव के कारण ही यह भूमिका महत्वपूर्ण है। बावजूद इसके हिन्दी पत्रकारिता की स्वतंत्रता, पत्रकारों की सुरक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगातार हमले हो रहे हैं। कभी-कभी भारत में हिन्दी पत्रकारिता की स्वतंत्रता पर सख्त पहरे जैसा भी प्रतीत होता है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। जबकि बड़ी सचाई है कि इन्हीं पत्रकारों के बल पर हमें आजादी मिली है। पत्रकारिता लोकहित में सरकार को कदम उठाने का रास्ता सुझाती रहती है, इसीलिए उसकी विश्वसनीयता होती है। मगर सरकारें जब उसके मूल स्वभाव को ही बदलने का प्रयास करती हैं, तो उसकी विश्वसनीयता पर प्रहार करती हैं। ऐसे में पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ न होकर प्रचारतंत्र में तब्दील होने लगती है। पत्रकारिता आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को दूर करने में मदद करती है। उसका लाभ उठाने के बजाय अगर उसका गला घोटने का प्रयास होगा, तो सही अर्थों में विकास का दावा नहीं किया जा सकता, नया भारत-सशक्त भारत निर्मित नहीं किया जा सकता। अगर कोई सरकार सचमुच उदारवादी और लोकतांत्रिक होगी, तो वह आलोचना से कुछ सीखने का प्रयास करेगी। हिन्दी पत्रकारिता कभी मिशन था, आज व्यवसाय बन गया है। आजादी के आंदोलन तक मिशन रहा। धीरे-धीरे इसमें व्यापारी आने लगे। औद्योगिक घराने उतर गए। इनका उद्देश्य समाज सेवा नही रहा, व्यापार हो गया। ये व्यापार करने लगे। वह छापने लगे जिससे इन्हें लाभ हो। डिजिटल युग में टीआरपी और व्यूज ही सफलता का पैमाना बन गए हैं। गंभीर पत्रकारिता की जगह सनसनीखेज खबरें, गॉसिप, और 'डिबेट तमाशों' ने ले ली है। तथ्य की जगह धारणा, विश्लेषण की जगह उत्तेजना, और संवाद की जगह शोर ने कब्जा कर लिया है। एंकर शोर मचाकर ची-खकर पाठकों को आकर्षित करन में लगे हैं। हिन्दी पत्रकारिता ऐसी अनेक चुनौतियों एवं विसंगतियों का सामना कर रही है। बीते कुछ वर्षों में पत्रकारिता का स्तर चिंताजनक रूप से गिरा है, जबकि पत्रकारों की प्रसिद्धि, प्रभाव और पहुंच पहले से कहीं अधिक बढ़ी है। यह विरोधाभास क्यों? पत्रकार बड़े होते जा रहे हैं, पर पत्रकारिता एवं उसके मूल्य-मानक क्यों सिकुड़ रहे है? आज फेसबुक पत्रकार, न्यूज पोर्टल चलाने वाले पत्रकार, यूट्यूब चैनल चलाने वाले पत्रकारों की देश में बाढ़ सी आ गई है। टीवी पत्रकारिता का वर्चस्व बढ़ रहा है, बड़े एवं बहु-संस्करणों के दैनिक अखबार भी तेजी से बढ़ रहे हैं। आन लाइन समाचार पत्रों की रोज गिनती बढ़ती जा रही है। जिसे देखो पत्रकारिता कर रहा है। इतना सब होने के बावजूद पिछले कुछ साल में खबर एवं हिन्दी पत्रकारिता की विश्वसनीय घटी है। पत्रकारिता का स्तर गिरा है। पत्रकार का सम्मान घटा है। पहले माना जाता कि अखबार में छपा है तो सही होगा, किंतु मीडिया में आई खबर की आज कोई गारंटी देने को तैयार नहीं। पहले हिन्दी पत्रकारिता वैचारिक-क्रांति होती थी, आज खबर प्रधान बन गयी है, विचार लुप्त है। हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब उसे व्यवसाय नहीं, मिशन के तौर पर नये व्यक्ति, नए समाज, नये राष्ट्र का प्रेरक बनाएंगे।

भारत की अर्थव्यवस्था चौथे नंबर पर लेकिन चुनौतियां भी कम नहीं

संजय सिन्हा

स्तंभकार

भारत ने अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में एक कीर्तिमान हासिल किया है। वस्तुतः एक इतिहास रचा है भारत ने। नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम ने बताया है कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए यह उपलब्धि हासिल की है। अब भारत की अर्थव्यवस्था चार बिलियन डॉलर की हो चुकी है। बता दें कि अर्थव्यवस्था के आकार के मामले में इस समय भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन और जर्मनी रह गए हैं। अनुमान यह भी जताया गया है कि अगले ढाई से तीन साल में भारत जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारत की इस तेज रफ्तार वृद्धि के पीछे निर्माण क्षेत्र की ताकत को सबसे प्रमुख माना जा रहा है। केंद्र सरकार ने पिछले 11 वर्षों में निर्माण क्षेत्र में लगातार पैसा झोंका है। सड़क मार्ग, रेल परिवहन, पोर्ट निर्माण और आवासीय भवनों के निर्माण को केंद्र सरकार ने अपनी नीतियों के केंद्र में रखा है। इसका लाभ कोर सेक्टर के स्टील, सीमेंट, बिजली, तेल सहित औद्योगिक सेक्टर के 50 बड़े क्षेत्रों को मिला है। इससे इसके साथ जुड़े अन्य सेक्टरों में भी तेज वृद्धि देखी गई है।

केंद्र सरकार ने देश में लगातार निवेश का माहौल बेहतर बनाए रखा है। इसका असर हुआ है कि विदेशी निवेशकों ने यहां निवेश को अपनी प्राथमिकता बना रखा है। इससे देश के अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त निवेश प्राप्त हुआ है और इससे इन सेक्टरों को बढ़ाने में वित्तीय मदद मिली है। अभी जिस तरह के वैश्विक माहौल बने हैं, उसमें आगे भी भारत में निवेश की संभावनाएं बेहतर बनी रह सकती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने हथियारों के निर्माण को अपनी प्राथमिकता में रखा है। इसका यह असर हुआ है कि भारत आज दुनिया में हथियार आयातकों के साथ-साथ हथियारों का बड़ा निर्यातक भी बन चुका है। आज भारत के ब्रह्मोस, आकाश और अन्य आयुध निर्माण की खरीद करने वाले दर्जनों देश की सेवाएं ले रहे हैं। इससे भी भारत की धमक पूरी दुनिया में बढ़ी है। केंद्र सरकार के इस कदम ने भारत को न केवल हथियारों का निर्यातक बनाया है बल्कि इसके जरिए भारत को बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा भी प्राप्त हुई है।

जिस तरह भारत ने मोबाइल निर्माण के सेक्टर में अपनी ताकत दिखाई है, अब उस ने दुनिया का दूसरा सबसा बड़ा मोबाइल उत्पादक और निर्यातक देश होने का सम्मान हासिल किया है। स्मार्ट चिप के निर्माण और सोलर पैनल के निर्माण के क्षेत्र में भी भारत लगातार अपनी बढ़त

बना रहा है। आने वाले समय में भारत चिप निर्माण के क्षेत्र में भी दुनिया की चुनिंदा शक्तियों में शामिल हो जाएगा। आर्थिक मामलों के विशेषज्ञों के मुताबिक निर्माण को अपनी ताकत बनाने का असर साफ दिखने लगा है। भारत अब निर्माण के मामले में लगातार आगे बढ़ रहा है लेकिन अब भारत को औद्योगिक विकास के चौथे चरण के लिए तैयार होना चाहिए जहां ऑटोमेशन की सबसे बड़ी भूमिका होगी। अमेरिका, चीन, ताइवान और अन्य यूरोपीय देशों के मामले में अपने उत्पादों की बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उसे सर्कुलर इकॉनमी का अगुवा भी बनना पड़ेगा। इस समय भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती ऑटोमेशन के कारण बेरोजगार हुए लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की होगी। इसके लिए सरकार को एक तरफ कामगर आबादी को तकनीकी दक्ष बनानी होगी, वहीं श्रम आधारित रोजगार भी बनाए रखने होंगे। यह उपलब्धि कृषि और निर्माण क्षेत्र में भारी निवेश करके ही हासिल किया जा सकता है। सुब्रमण्यम ने नीति आयोग की 10वीं गवर्निंग काउंसिल की मीटिंग के बाद यह बात कही। उन्होंने कहा कि भारत के लिए अभी माहौल अच्छा है। देश की आर्थिक स्थिति मजबूत है। सुब्रमण्यम ने मीडिया को बताया, 'अभी हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। हमारी अर्थव्यवस्था 4 ट्रिलियन डॉलर की है।'

सुब्रमण्यम ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के आंकड़ों का हवाला दिया। आईएमएफ के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था जापान से बड़ी हो गई है। उन्होंने आगे कहा, 'सिर्फ अमेरिका, चीन और जर्मनी ही भारत से आगे हैं। अगर हम योजना के अनुसार काम करते रहे, तो अगले 2.5-3 सालों में हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे।'

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में कहा था कि वे चाहते हैं कि ऐपल कंपनी आईफोन अमेरिका में ही बनाए, भारत में नहीं। इस पर सुब्रमण्यम ने कहा कि टैरिफ क्या होगा, यह कहना मुश्किल है लेकिन अभी भारत में चीजें बनाना सस्ता है। सुब्रमण्यम ने यह भी बताया कि सरकार एक बार फिर अपनी संपत्तियों को किराए पर देगी या बेचेगी। इसे एसेट मोनेटाइजेशन कहते हैं। इसका दूसरा दौर अगस्त में शुरू होगा। इससे सरकार को और पैसे मिलेंगे जिससे देश का विकास होगा।

फिच रेटिंग्स ने साल 2028 तक भारत की औसत वार्षिक वृद्धि क्षमता का अनुमान बढ़ाकर 6.4 प्रतिशत कर दिया है। रेटिंग एजेंसी ने नवंबर 2023 में इसके 6.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। फिच ने पांच साल के संभावित सकल घरेलू उत्पाद अनुमानों को अपडेट करते हुए कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने 2023 की रिपोर्ट के समय की हमारी अपेक्षा से अधिक मजबूती से वापसी की है। इससे वैश्विक महामारी के झटकों के कम प्रतिकूल प्रभाव के संकेत मिलते हैं।यूएन ने भी दिए अच्छे संकेत।

भारत की अर्थव्यवस्था इस समय तेजी से बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की एक रिपोर्ट के मुताबिक इस साल भारतीय अर्थव्यवस्था न केवल चीन बल्कि अमेरिका और यूरोप को भी पीछे छोड़ देगी। इस के साथ अर्थव्यवस्था के मामले में भारत पहले स्थान पर होगा।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था इस साल 6.3% की दर से बढ़ेगी। यह दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे ज्यादा है। चीन की अर्थव्यवस्था 4.6%, अमेरिका की 1.6%, जापान की 0.7% और यूरोप की 1% की दर से बढ़ने का अनुमान है। जर्मनी की अर्थव्यवस्था में तो 0.1% की गिरावट आ सकती है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और सोशल एक्टिविस्ट हैं)

▸▸ संदीप सृजन
स्तंभकार

हिंदी पत्रकारिता डिजिटल युग तक

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह न केवल सूचना का माध्यम है, बल्कि समाज को जागरूक करने, विचारों को प्रेरित करने और परिवर्तन की दिशा में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है। हिंदी पत्रकारिता ने अपने उद्भव से लेकर आज तक कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। हिंदी पत्रकारिता का सफर संघर्षों और उपलब्धियों से भरा रहा है। 19वीं सदी में अपने उद्भव से लेकर डिजिटल युग तक, इसने समाज को जागरूक करने और परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक दबाव, डिजिटल युग की चुनौतियाँ, और पत्रकारों की सुरक्षा जैसे मुद्दों ने इसके सामने कई बाधाएँ खड़ी की हैं। फिर भी, डिजिटल क्रांति, स्थानीय पत्रकारिता, और तकनीकी नवाचारों के साथ हिंदी पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है।

हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत 19वीं सदी में हुई, जब भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन अपने चरम पर था। इस दौर में हिंदी पत्रकारिता ने न केवल सूचना प्रसार का कार्य किया, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पहला हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' 30 मई, 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से प्रकाशित किया। हालांकि, आर्थिक तंगी और अन्य संसाधनों की कमी के कारण यह पत्र केवल डेढ़ साल तक चल सका। यह हिंदी पत्रकारिता के शुरूआती संघर्ष का एक उदाहरण है।

उस दौर में हिंदी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप, सीमित पाठक वर्ग, और तकनीकी संसाधनों की कमी ने पत्रकारों के लिए काम को और कठिन बना दिया। इसके बावजूद भारतेंदु हरिश्चंद्र, बाल गंगाधर तिलक, और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे दिग्गजों ने हिंदी पत्रकारिता को एक मजबूत आधार प्रदान किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिका कवि वचन सुधाऔर हरिश्चंद्र मैगजीन ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को एक नई दिशा दी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी पत्रकारिता ने जनजागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया। स्वदेश,कर्मवीर और प्रताप जैसे समाचार पत्रों ने लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। इस दौरान पत्रकारों को जेल, उत्पीड़न, और आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। फिर भी, हिंदी पत्रकारिता ने अपनी आवाज को दबने नहीं दिया।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता ने नए आयाम हासिल किए। 1950 और 1960 के दशक में हिंदी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, धर्मयुग और साप्ताहिक हिंदुस्तान जैसे प्रकाशनों ने हिंदी पत्रकारिता को लोकप्रिय बनाया। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता ने शिक्षा, सामाजिक सुधार, और राष्ट्रीय एकता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

हालांकि, इस दौर में भी हिंदी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हिंदी भाषी क्षेत्रों में साक्षरता दर कम होने के कारण पाठक वर्ग सीमित था। इसके अलावा, अंग्रेजी पत्रकारिता के मुकाबले हिंदी पत्रकारिता को कम गंभीरता से लिया जाता था। फिर भी, हिंदी पत्रकारिता ने अपनी पहुंच और प्रभाव को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किए।

आज के दौर में हिंदी पत्रकारिता एक ओर जहां तकनीकी प्रगति और डिजिटल क्रांति के साथ कदमताल कर रही है, वहीं इसे कई नई और पुरानी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी पत्रकारिता पर कॉर्पोरेट और विज्ञापनदाताओं का प्रभाव बढ़ रहा है। बड़े मीडिया हाउस विज्ञापन राजस्व पर निर्भर हैं, जिसके कारण कई बार पत्रकारिता की निष्पक्षता प्रभावित होती है। पेड न्यूज और प्रायोजित सामग्री ने पत्रकारिता की

विश्वसनीयता पर सवाल उठाए हैं। छोटे और स्वतंत्र हिंदी समाचार पत्रों को बड़े मीडिया समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो रहा है, जिसके कारण कई प्रकाशन बंद हो चुके हैं।

डिजिटल युग ने हिंदी पत्रकारिता को नई संभावनाएं दी हैं, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियां भी सामने आई हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर फेक न्यूज और मिसइन्फॉर्मेशन का प्रसार एक बड़ी समस्या है। हिंदी समाचार वेबसाइट्स और यूट्यूब चैनल्स की बाढ़ ने गुणवत्तापूर्ण पत्रकारिता को प्रभावित किया है। कई डिजिटल प्लेटफॉर्म सनसनीखेज और भ्रामक खबरों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर असर पड़ता है। हिंदी पत्रकारों को अक्सर खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। खोजी पत्रकारिता करने वाले पत्रकारों को धमकियाँ, हमले, और यहाँ तक कि हत्या का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण और छोटे शहरों में काम करने वाले पत्रकारों को स्थानीय नेताओं और अपराधियों से खतरा रहता है। पत्रकारों की सुरक्षा के लिए ठोस कानूनी और सामाजिक ढाँचा अभी भी अपर्याप्त है।

हिंदी पत्रकारिता में प्रशिक्षित और कुशल पत्रकारों की कमी एक बड़ी चुनौती है। कई युवा पत्रकार अंग्रेजी मीडिया की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि इसे अधिक प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से लाभकारी माना जाता है। इसके अलावा, हिंदी पत्रकारिता में नई तकनीकों और डेटा पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण की कमी है। हिंदी पत्रकारिता को सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। जातिगत, धार्मिक, और क्षेत्रीय संवेदनशीलताओं के कारण कई बार पत्रकारों को अपनी बात कहने में सावधानी बरतनी पड़ती है। इसके अलावा, हिंदी पत्रकारिता को अक्सर पिछड़ा या क्षेत्रीय माना जाता है, जो इसकी छवि को प्रभावित करता है। हिंदी भाषा की मानकता और शुद्धता को लेकर भी बहस चलती रहती है। डिजिटल युग में हिंदी में तकनीकी शब्दावली और आधुनिक भाषा का अभाव एक समस्या है। साथ ही, हिंदी पत्रकारिता को अंग्रेजी और अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जो वैश्विक स्तर पर अधिक स्वीकार्य हैं।

हिंदी पत्रकारिता का भविष्य आशावादी होने के साथ-साथ चुनौतियों से भरा हुआ है। डिजिटल क्रांति और तकनीकी प्रगति ने हिंदी पत्रकारिता के लिए नए अवसर खोले हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी पत्रकारिता को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने में मदद की है। द वायर हिंदी, क्विंट हिंदी, बीबीसी हिंदी और न्यूजलॉन्ड्री जैसे डिजिटल मीडिया हाउस ने हिंदी पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे ट्विटर, फेसबुक, और यूट्यूब ने हिंदी समाचारों को तेजी से प्रसारित करने में मदद की है। भविष्य में, डिजिटल पत्रकारिता हिंदी भाषी क्षेत्रों में और अधिक लोकप्रिय होगी, क्योंकि इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों तक बढ़ रही है।

हिंदी पत्रकारिता में खोजी और डेटा पत्रकारिता का विकास एक सकारात्मक संकेत है। डेटा-आधारित पत्रकारिता से न केवल खबरों की विश्वसनीयता बढ़ती है, बल्कि यह जटिल मुद्दों को सरलता से समझाने में भी मदद करती है। भविष्य में, डेटा पत्रकारिता और विश्लेषणात्मक लेखन हिंदी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।

हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थानीय और ग्रामीण पत्रकारिता का महत्व बढ़ रहा है। खबर लहरिया जैसे स्वतंत्र मीडिया संगठनों ने ग्रामीण भारत की समस्याओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लाने का काम किया है। भविष्य में, स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित पत्रकारिता हिंदी भाषी समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और डेटा एनालिटिक्स जैसे तकनीकी नवाचार हिंदी पत्रकारिता को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। अकआधारित उपकरण समाचारों के अनुवाद, विश्लेषण, और प्रसार में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, पॉडकास्ट और वीडियो सामग्री जैसे नए प्रारूप हिंदी पत्रकारिता को और अधिक आकर्षक बना रहे हैं।

हिंदी पत्रकारिता के भविष्य के लिए पत्रकारों का प्रशिक्षण और शिक्षा महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता संस्थानों को हिंदी पत्रकारों के लिए विशेष पाठ्यक्रम शुरू करने चाहिए, जिसमें डिजिटल पत्रकारिता, खोजी पत्रकारिता, और डेटा विश्लेषण जैसे विषय शामिल हों। इससे हिंदी पत्रकारिता में गुणवत्ता और पेशेवरता बढ़ेगी।

हिंदी पत्रकारिता के भविष्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितनी निष्पक्ष और विश्वसनीय रह पाती है। पाठकों का भरोसा जीतने के लिए हिंदी मीडिया को पेड न्यूज, सनसनीखेज खबरों, और पक्षपात से बचना होगा। स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता ही हिंदी पत्रकारिता को दीर्घकालिक सफलता दिला सकती है। हिंदी पत्रकारिता को अपने मूल्यों निष्पक्षता, विश्वसनीयता, और सामाजिक जिम्मेदारी को बनाए रखते हुए आगे बढ़ना होगा। पत्रकारों, मीडिया संगठनों, और पाठकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी पत्रकारिता न केवल जीवित रहे, बल्कि समाज के लिए एक सकारात्मक बदलाव का माध्यम बने। यदि हिंदी पत्रकारिता अपनी चुनौतियों का सामना कर पाए और नई संभावनाओं को अपनाए, तो यह निश्चित रूप से भारत के लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार और स्तम्भकार हैं)

राजनीति में अपशब्द

विनीत नारायण
वरिष्ठ स्तंभकार

भारत, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है, एक ऐसा देश है जहां विविधता उसकी ताकत और चुनौती दोनों है। यहां की राजनीति में विभिन्न दलों के राजनेता अपने विचारों, नीतियों और नेतृत्व के माध्यम से जनता का विश्वास जीतने का प्रयास करते हैं लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय राजनीति में अपशब्दों और गैर-जिम्मेदाराना बयानों का बढ़ता उपयोग एक गंभीर मुद्दा बन गया है। यह न केवल सार्वजनिक विमर्श के स्तर को नीचे लाता है, बल्कि यह लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों, जैसे स्वतंत्रता, समानता, सम्मान और संवाद के खिलाफ भी है।

भारतीय राजनीति में अपशब्दों का प्रयोग पहले कतई नहीं होता था लेकिन हाल के दशकों में इसकी तीव्रता और आवृत्ति में चिंताजनक वृद्धि हुई है। विभिन्न दलों के राजनेता, चाहे वे सत्ताधारी हों या विपक्षी, अक्सर एक-दूसरे पर निजी हमले करने, अपमानजनक टिप्पणियां करने और समाज को विभाजित करने वाले बयान देने में संकोच नहीं करते। उदाहरण के लिए, कुछ राजनेताओं ने अपने विरोधियों को 'नीच', 'मवाली', 'गद्दार', जैसे शब्दों से संबोधित किया है।

ऐसे बयानों का उद्देश्य अक्सर अपने समर्थकों को उत्तेजित करना और विपक्ष को कमजोर करना होता है लेकिन यह लोकतांत्रिक मयार्दाओं को तोड़ता है। 2017 में एक सांसद ने एक धार्मिक आयोजन में जनसंख्या वृद्धि के लिए एक विशेष समुदाय को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा, 'देश में समस्याएं खड़ी हो रही हैं जनसंख्या के कारण। इसके लिए हिंदू ज़िम्मेदार नहीं हैं। ज़िम्मेदार तो वो हैं जो चार बीवियों और चालीस बच्चों की बात करते हैं।' इस तरह के बयान न केवल सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देते हैं, बल्कि समाज में विभाजन को और गहरा करते हैं। बढ़ती जनसंख्या चिंता का विषय है, पर उस पर प्रहार जनसंख्या नियंत्रण की नीति बना कर किया जाना चाहिए न कि केवल भड़काऊ बयान देकर।

लोकतंत्र का गुण यह है कि ये जनता की भागीदारी, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और विचारों के खुले आदान-प्रदान का मौका देता है। भारत का संविधान,

जब से संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण टीवी पर होना शुरू हुआ है, तब से देश के कोने-कोने में बैठे आम जन अपने राजनेताओं का आचरण देख कर उनके प्रति हेयदृष्टि अपनाने लगे हैं। युवा पीढ़ी पर तो इसका बहुत ही खराब असर पड़ रहा है। भगवान श्री कृष्ण भगवद् गीता में कहते हैं कि बड़े लोग जैसा आचरण करते हैं, तो समाज उनका वैसे ही अनुसरण करता है। नेताओं के उद्दंड व्यवहार से समाज में अराजकता और हिंसा बढ़ रही है, जो सबके लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

विशेष रूप से अनुच्छेद 19, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है लेकिन इसके साथ ही यह अपेक्षा भी करता है कि यह स्वतंत्रता जिम्मेदारी के साथ प्रयोग की जाए। जब राजनेता अपशब्दों और गैर-जिम्मेदाराना बयानों का सहारा लेते हैं तो वे लोकतंत्र के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हैं। जब राजनेता नीतियों और विचारों के बजाय व्यक्तिगत हमलों और अपशब्दों का प्रयोग करते हैं तो यह विमर्श का स्तर गिराता है। सार्वजनिक जीवन में हमें एक-दूसरे की नीयत पर भरोसा करना चाहिए, हमारी आलोचना नीतियों पर आधारित होनी चाहिए, व्यक्तित्व पर नहीं। आज के काफी राजनेताओं का व्यवहार इस सिद्धांत के विपरीत हो रहा है। गत दस वर्षों से मुसलमानों के लेकर कार्यकताओं और नेतृत्व के लगातार आने वाले विरोधी बयानों ने देश में भ्रम की स्थिति पैदा कर दी। उदाहरण के लिए, एक महिला नेता ने 2014 में एक सभा में लोगों को 'रामजादों' और 'हरामजादों' में बांटने की बात कही। दूसरी तरफ सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत कहते हैं कि 'हिंदू और मुसलमानों का डीएनए एक है, या मुसलमानों के बिना हिंदुत्व नहीं हैं।' ऐसे विरोधाभासी बयानों से समाज में वैमनस्य और भ्रम की स्थिति फैलती है। जब राजनेता गैर-जिम्मेदाराना बयान देते हैं तो यह लोकतांत्रिक संस्थाओं, जैसे संसद और न्यायपालिका के प्रति जनता के विश्वास को कम करता है। उदाहरण के लिए, 2024 में एक सांसद ने भाजपा पर संविधान को 'हजार घावों से खून बहाने' का आरोप लगाया, जबकि भाजपा नेताओं ने विपक्षी नेताओं पर 'संविधान का अपमान' करने का आरोप लगाया। इस तरह के आपसी आरोप-प्रत्यारोप संसद जैसे मंच की गरिमा को कम करते हैं। अपशब्दों और गैर-जिम्मेदाराना बयानों का उपयोग अक्सर असहमति को दबाने के लिए किया जाता है। पत्रकारों और आलोचकों को 'प्रेस्टीट्यूट' जैसे शब्दों से संबोधित करना या उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करता है। यह लोकतंत्र के लिए खतरा है, क्योंकि असहमति और आलोचना लोकतंत्र के आधार हैं। राजनेताओं के अपशब्द और गैर-जिम्मेदाराना बयान समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। ये बयान न केवल जनता के बीच नकारात्मक भावनाओं को भड़काते हैं, बल्कि सामाजिक समरसता को भी नुक्सान पहुंचाते हैं। सोशल मीडिया के युग में जहां ये बयान तेजी से वायरल होते हैं, इनका प्रभाव और भी व्यापक हो जाता है। इससे न केवल राजनीतिक तनाव बढ़ता है, बल्कि सामाजिक ध्रुवीकरण भी होता है। इसके अलावा, जब राजनेता लैंगिक, धार्मिक या जातीय आधार पर अपमानजनक टिप्पणियां करते हैं तो यह समाज के कमजोर वर्गों, जैसे महिलाओं, अल्पसंख्यकों और दलितों के प्रति असंवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, 2013 में एक नेता ने अपनी ही पार्टी की सांसद को 'सौ टंच माल' कहकर संबोधित किया, जो न केवल अपमानजनक था, बल्कि लैंगिक रूप से असंवेदनशील भी था।

इस समस्या से निपटने के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं। चुनाव आयोग को राजनेताओं के अपशब्दों और गैर-जिम्मेदाराना बयानों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। 2019 में चुनाव आयोग ने कुछ नेताओं को नोटिस जारी किए थे लेकिन ऐसी कार्रवाइयों को और प्रभावी करने की आवश्यकता है। मीडिया को भी गैर-जिम्मेदाराना बयानों को बढ़ावा देने के बजाय स्वस्थ विमर्श को प्रोत्साहित करना चाहिए। सोशल मीडिया पर भी ऐसी सामग्री को नियंत्रित करने के लिए नीतियां बनानी चाहिए। जनता को जागरूक करने की आवश्यकता है कि वे ऐसे नेताओं का समर्थन न करें जो अपशब्दों और विभाजनकारी बयानों का सहारा लेते हैं। शिक्षा और जागरूकता अभियान इस दिशा में मदद कर सकते हैं। राजनेताओं को अपने बयानों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। संसद और विधानसभाओं में आचार समितियों को और सक्रिय करना होगा। जब से संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण टीवी पर होना शुरू हुआ है, तब से देश के कोने-कोने में बैठे आम जन अपने राजनेताओं का आचरण देख कर उनके प्रति हेयदृष्टि अपनाने लगे हैं। युवा पीढ़ी पर तो इसका बहुत ही खराब असर पड़ रहा है। भगवान श्री कृष्ण भगवद् गीता में कहते हैं कि बड़े लोग जैसा आचरण करते हैं, तो समाज उनका वैसे ही अनुसरण करता है। नेताओं के उद्दंड व्यवहार से समाज में अराजकता और हिंसा बढ़ रही है, जो सबके लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

क्या शशि थरूर भी कहेंगे 'बाय-बाय'

»रामस्वरूप रावतसरे
वरिष्ठ स्तंभकार

कांग्रेस सांसद शशि थरूर अब कांग्रेस में बेवजह गुस्से का शिकार हैं। उनका अपराध यह है कि थरूर ने वैश्विक स्तर पर भारत के आतंकवाद विरोधी रुख को स्पष्ट करने और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में बताने के लिए सांसदों के एक बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए मोदी सरकार के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया।

गांधी परिवार के वफादार कॉन्ग्रेसी अब पार्टी के अंदर इस बात पर गुस्से का इजहार कर रहे हैं कि आखिर क्यों शशि थरूर को केन्द्र ने बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बनाया? शशि थरूर को केन्द्र सरकार ने विदेश भेजे जा रहे डेलिगेशन का नेतृत्व करने के लिए चुना है। उनका ग्रुप अमेरिका, पनामा, गुयाना, ब्राजील और कोलंबिया जाएगा। दरअसल, कांग्रेस के खफा होने की वजह ये है कि बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल के लिए कॉन्ग्रेस पार्टी द्वारा सुझाए गए नामों में थरूर का नाम शामिल नहीं था। कांग्रेस ने आनंद शर्मा, गौरव गोगोई, नासिर हुसैन और राजा बरार के नाम भेजे थे।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 17 मई, 2025 को कहा कि कॉन्ग्रेस पाकिस्तान से आतंकवाद पर भारत के रुख को स्पष्ट करने के लिए विदेश जा रहे सांसदों के रूप में अपने दिए गए चार सांसदों के नाम नहीं बदलने जा रही है। जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि औपचारिक रूप से चार नाम दिए जाने के बावजूद सरकार ने उनमें से अधिकांश को नजर-अंदाज कर दिया जिससे संसदीय परंपराओं, विपक्ष- सत्तारूढ़ दल के बीच विश्वास को ठेस पहुंचा।

जानकारी के अनुसार केंद्रीय मंत्री किरन रिजिजू ने केंद्र सरकार की ओर से कॉन्ग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से संपर्क किया और बहुदलीय संसदीय दल में शामिल होने के लिए पार्टी से चार नामों का अनुरोध किया। राहुल गाँधी ने उसी दिन दोपहर से पहले वरिष्ठ नेताओं आनंद शर्मा, गौरव गोगोई, नासिर हुसैन और राजा बरार का नाम भेजा। इस पर जयराम रमेश ने कहा, ह्लसरकार ने कांग्रेस के सुझाए गए नामों में से केवल आनंद शर्मा को चुना और मामले का राजनीतिकरण किया।

शशि थरूर का पार्टी से पहले राष्ट्र को प्राथमिकता देना और स्वतंत्र राय रखना कॉन्ग्रेस पार्टी को नागवार गुजर रहा है। कॉन्ग्रेस पार्टी ने भले ही शशि थरूर पर सीधे तौर पर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की ओर झुकाव रखने का आरोप नहीं लगाया है लेकिन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) ने उन्हें 'बीजेपी का स्लीपर सेल' कहा है। जानकारों की माने तो कांग्रेस हाईकमान थरूर को पार्टी से निकालने पर विचार कर रहा है। हालांकि कांग्रेस ने इस संबंध में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है।

अब सवाल यह उठता है कि कॉन्ग्रेस पार्टी अपने उन नेताओं को क्यों नजरअंदाज करती है जो मूल रूप से 'दरबारियों' की तरह काम नहीं करते हैं और बौद्धिक स्वतंत्रता बनाए रखना पसंद करते हैं। क्या यह इस डर की वजह से है कि ऐसे मजबूत नेता गांधी परिवार को पीछे छोड़ सकते हैं या पार्टी में समानांतर सत्ता बना सकते हैं?

शशि थरूर की जगह राहुल गांधी के वफादार गौरव गोगोई को चुनना क्या उचित है? गांधी परिवार के करीबी न होने के बावजूद शशि थरूर न केवल विदेशी मामलों में विशेषज्ञता रखने वाले अहम सासंद हैं बल्कि संसद की विदेश मामलों की स्थायी समिति के अध्यक्ष भी हैं। कांग्रेस पार्टी के दरकिनार और अपमानित किए जाने के बावजूद शशि थरूर ने हार नहीं मानी। उन्होंने कहा कि वे अपनी सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरी लगन से निभाएंगे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पार्टी नेतृत्व को अपनी राय रखने का अधिकार है लेकिन उनकी प्रतिबद्धता अटल है। कांग्रेस की अधीनता के बजाए थरूर ने राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने का फैसला किया और संदेश दिया कि वह 'आसानी से अपमानित' नहीं होंगे।

हालांकि कांग्रेस ने थरूर का नाम नहीं भेजा जबकि वे संयुक्त राष्ट्र के पूर्व राजनयिक हैं और इस कार्य में उनकी विशेषज्ञता है। यह स्पष्ट हो गया कि थरूर की बौद्धिकता, वाकपटुता और स्वतंत्र सोच पार्टी आलाकमान, खासकर गांधी परिवार को पसंद नहीं है। पार्टी आलाकमान के करीबियों को ही यहां प्राथमिकता दी जाती है। कांग्रेस का ये दृष्टिकोण कोई नया नहीं है। कांग्रेस पार्टी में गांधी परिवार के प्रति वफादारी हमेशा योग्यता पर भारी रही है। कांग्रेस पार्टी के कई वरिष्ठ और मजबूत नेताओं को सिर्फ इसलिए हार का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने गांधी परिवार की अवहेलना करने की जुर्रत की और विभिन्न मुद्दों पर स्वतंत्र राय व्यक्त करने का साहस किया। हाल के वर्षों में शशि थरूर को लगातार अपनी ही पार्टी ने निशाना बनाया, दरकिनार किया और अपमानित किया।

जानकारों की माने तो नवंबर, 2022 में, थरूर को गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनावों के लिए स्टार प्रचारकों की सूची में जगह नहीं दी गई थी। लगभग उसी समय केरल कांग्रेस ने थरूर से खुद को दूर कर लिया था और कोझीकोड में एक आरएसएस विरोधी सेमिनार की मेजबानी करने से पीछे हट गई थी जहां कांग्रेस सांसद को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उस समय ऐसी खबरें आई थीं कि कॉन्ग्रेस

नेतृत्व ने पार्टी की स्थानीय इकाइयों को शशि थरूर का कोई भी कार्यक्रम आयोजित न करने का अनाधिकारिक आदेश दिया था।

फरवरी, 2025 में शशि थरूर ने पार्टी में अपनी भूमिका को लेकर असंतोष जताया था। उन्होंने पार्टी में दरकिनार किए जाने और संसद के अंदर प्रमुख बहसों में भाग लेने का अवसर न दिए जाने पर रोष व्यक्त करने के लिए राहुल गाँधी से मुलाकात की थी हालांकि, थरूर संतुष्ट नहीं हुए। थरूर का असंतोष ऑल इंडिया प्रोफेशनल कॉन्ग्रेस (एआईपीसी) के प्रभार से हटाए जाने से भी पैदा हुआ। कॉन्ग्रेस पार्टी भी थरूर से तब से नाराज है, जब उन्होंने पार्टी के आधिकारिक रुख से हटकर प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा की प्रशंसा की थी। पीएम मोदी की ट्रंप से मुलाकात के बारे में थरूर ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह बहुत अच्छा नतीजा है क्योंकि अन्यथा डर था कि वाशिंगटन में जल्दबाजी में कुछ फैसले लिए जा सकते हैं जिससे हमारे निर्यात पर असर पड़ता। इस तरह, चर्चा और बातचीत के लिए समय है।'

कांग्रेस में जो शशि थरूर के साथ हो रहा है वैसा 2021 में तत्कालीन पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के साथ भी हो चुका है जब अमरिंदर सिंह ने यह कहते हुए कॉन्ग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया था कि वह अपने साथ हुए अपमान को बर्दाश्त नहीं कर सकते। सिंह ने कांग्रेस छोड़ने का फैसला तब किया जब पार्टी ने उन्हें सूचित किए बिना पंजाब में कॉन्ग्रेस विधायक दल की बैठक बुलाई। इससे पहले पार्टी ने अमरिंदर सिंह की कड़ी आपत्तियों के बावजूद जुलाई 2021 में नवजोत सिंह सिद्धू को पंजाब कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष चुनकर उन्हें नकार दिया था।

ऐसे ही कॉन्ग्रेस आलाकमान की दरबारी नीतियों के चलते ने हिमंत बिस्वा सरमा को पार्टी छोड़ने पर किया मजबूर होना पड़ा था। सितंबर 2015 में कॉन्ग्रेस पार्टी ने असम से एक बेहतरीन नेता खो दिया, जब हिमंत बिस्वा सरमा ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देते हुए कहा कि पार्टी में कनिरंकुश परिवार-केंद्रित राजनीति और कलोकतंत्र की कमी' है।

सरमा ने कांग्रेस से इस्तीफा देते हुए कहा, '2012 से मैं देख रहा हूं कि स्थिति बिगड़ती जा रही थी और राज्य नेतृत्व के उदासीन रवैये के कारण पार्टी सम्मान खो रही थी। तीसरी बार जीत सिर पर चढ़ गई थी और लोगों के लिए काम करने के प्रति करुणा और समर्पण की जगह अहंकार ने लेना शुरू कर दिया था। पार्टी नेतृत्व में आत्मसंतुष्टि और यथास्थितिवाद की भावना समा गई थी। चाटुकारों के एक समूह से लगातार प्रोत्साहित की जाने वाली निरंकुश परिवार-केंद्रित राजनीति ने कभी भी राज्य में कांग्रेस नेतृत्व तक तर्कसंगत और तटस्थ आवाज नहीं पहुंचने दी।' 2022 में सरमा ने एक इंटरव्यू में कहा था कि उन्होंने कांग्रेस में अपने जीवन के 22 साल बर्बाद कर दिए हैं। कांग्रेस और भाजपा के बीच अंतर के बारे में बोलते हुए सरमा ने कहा, 'कांग्रेस में हम एक परिवार की पूजा करते थे। भाजपा में हम देश की पूजा करते हैं।'

पार्टी आलाकमान से अलग राय रखने पर दरकिनार किए जाते हैं कांग्रेसी या उन्हें 'संघी' करार दिया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि कांग्रेस पार्टी में बने हुए तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कई मौकों पर ऐसे फैसले लिए हैं जिससे पार्टी नेतृत्व को निराशा हुई है। चाहे वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बड़े भाई कहना हो या गुजरात मॉडल की प्रशंसा करना हो। जब राहुल गाँधी बार-बार पीएम मोदी पर व्यवसायी गौतम अडानी के कथित क्रोनी कैपिटलिज्म में मिली भगत का आरोप लगाते हुए हमला कर रहे थे, उस वक्त रेवंत रेड्डी विकास परियोजनाओं के लिए अडानी समूह के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर रहे थे। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान केंद्र और सशस्त्र बलों का समर्थन करने वाले रेड्डी ने कई बार स्वतंत्र रूप से काम किया है। हालांकि, पार्टी नेता और समर्थकों ने उन्हें संघी एजेंट भी कहा।

ज्योतिरादित्य सिंधिया, मिलिंद देवड़ा से लेकर कपिल सिब्बल तक कई कॉन्ग्रेस नेता, जो पार्टी में बड़े नेता बनने की क्षमता रखते थे, उन्हें दरकिनार कर दिया गया और आखिरकार उन्हें कॉन्ग्रेस छोड़नी पड़ी। पार्टी में साफतौर पर समझा जा सकता है कि जिस नेता के विचार पार्टी हाईकमान की लाइन से मेल नहीं खाता, वह दरकिनार रहेंगे। गुलाम नबी आजाद ने पार्टी में 50 से अधिक साल बिताने के बाद कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि हाईकमान फीडबैक और आलोचना के प्रति उदासीन हो गया था। अपने विदाई नोट में गुलाम नबी आजाद ने पार्टी के पतन के लिए कांग्रेस आलाकमान को जिम्मेदार ठहराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने कांग्रेस के वारिस राहुल गाँधी पर पार्टी के भीतर परामर्श तंत्र को अकेले ही नष्ट करने का आरोप लगाया। आजाद का कॉन्ग्रेस के प्रति असंतोष तब स्पष्ट हो गया, जब वे पिछले साल जम्मू में जी-23 असंतुष्ट समूह में शामिल हो गए। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी प्रशंसा की थी। उन्होंने अलग पार्टी बना ली।

कांग्रेस पार्टी के लिए राष्ट्र नहीं, गांधी परिवार सबसे पहले आता है। इस अघोषित नियम का उल्लंघन करने वाले को या तो तिरस्कार, अपमान और 'भाजपा एजेंट' अथवा संघी करार दिया जाता है या पार्टी से सीधे निष्कासित कर दिया जाता है। जाहिर है गांधी परिवार अपने वरिष्ठ पार्टी नेताओं को अपनी बौद्धिक स्वतंत्रता की आजादी देकर नियंत्रण खोने का जोखिम नहीं उठाना चाहता।

यही कारण है कि जिस प्रकार सक्षम और स्वतंत्र विचार रखने वाले नेताओं ने कांग्रेस से किनारा कर लिया, उसी प्रकार संभव है शशि थरूर भी नया रास्ता देख ले। कांग्रेस के विधान और संविधान में सबसे पहले गांधी परिवार ही आता है। यहां बुद्धता और प्रबुद्धता की कदर उस समय तक ही होती है जब तक कि वह परिवार के अनुसार काम कर रहा होता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

क्या थरूर को मोदी कैबिनेट में लिया जाएगा?

त्रिदेव रोमन

'तू मुझे अपने साथ रखना नहीं चाहता, मैं तेरे साथ रहना नहीं चाहता
फिर क्या हुआ जो हम दोनों अपने-अपने अलग रास्तों पर चल पड़े हैं'

कांग्रेस नेता शशि थरूर की बदली भाव-भंगिमाओं से राहुल मंडली की पेशानियों पर बल हैं, पिछले कुछ दिनों में थरूर ने जिस तरह पीएम मोदी और भाजपा के प्रति अपने नरम रुख का इजहार किया है इससे कांग्रेस शीर्ष की भाव-भंगिमाएं उनके प्रति किंचित और कठोर हो गई हैं। थरूर से जुड़े सूत्र खुलासा करते हैं कि अब चूंकि थरूर 70 साल के हो गए हैं तो वे अब और लंबा इंतजार नहीं कर सकते। हालांकि अगले वर्ष केरल में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं सो, राज्य के तिरुवनंतपुरम से सांसद थरूर चाहते थे कि कांग्रेस उन्हें इस बार केरल से अपना सीएम फेस बनाए, ऐसा नहीं है कि केरल कांग्रेस में थरूर को चाहने वालों की कोई कमी है, पर कांग्रेस में आमतौर पर ऐसे अहम निर्णय राहुल गांधी की ओर से लिए जाते हैं, फिर राहुल अपनी भावनाओं से पार्टी अध्यक्ष खड़गे को अवगत करा देते हैं, जहां से राहुल के चाहे अनुरूप फैसला हो जाता है। कहते हैं केरल को लेकर राहुल के मन में बस दो ही नाम चल रहे हैं, इनमें से एक नाम उनके बेहद भरोसेमंद केसी वेणुगोपाल का है, दूसरा नाम रमेश चेन्निथला का है। राहुल की भावनाओं को समझते हुए ही शशि थरूर ने धीरे-धीरे भाजपा से अपनी पींगें बढ़ानी शुरू कर दीं, उन्होंने कई मौकों पर खुल कर पीएम मोदी की तारीफ में कसीदे पढ़ दिए, पीएम ने भी उनकी तारीफ कर एक संवाद सेतु बनाने का काम किया। अब सूत्र बताते हैं कि थरूर बहुत जल्दी मोदी कैबिनेट में शामिल हो सकते हैं, इससे पहले वे अपनी लोकसभा की सदस्यता छोड़ सकते हैं और राज्यसभा के सहारे ऊपरी सदन में लाए जा सकते हैं। सूत्रों का दावा है कि उन्हें देश का अगला मानव संसाधान विकास मंत्री बनाया जा सकता है, फिलहाल यह मंत्रालय धर्मेंद्र प्रधान के जिम्मे हैं, प्रधान के बारे में माना जा रहा है कि वे भाजपा के अगले राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जा सकते हैं। एक बात और अगर थरूर केंद्र में मंत्री बन जाते हैं तो भी भाजपा केरल चुनाव में उन्हें अपने सीएम फेस के तौर पर प्रोजेक्ट कर सकती है।

क्या प्रधान को मिलेगी भाजपा की प्रधानी?

यूं कायदे से तो भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम की घोषणा मई के आखिरी सप्ताह तक हो जानी चाहिए थी, पर पहले पहलगाम आतंकी हमला और उसके बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' से भारत के पलटवार की वजह से यह मामला टल गया। भाजपा से जुड़े सूत्र खुलासा करते हैं कि 15 जून के बाद कभी भी नए अध्यक्ष के नाम की घोषणा हो सकती है, क्योंकि यूपी समेत चार अहम राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों के नाम की घोषणा होनी अभी बाकी है। नए अध्यक्ष के तौर पर फिलहाल केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का नाम फाइनल माना जा रहा है। हालांकि उनके समांतार भूपेंद्र यादव का नाम भी रेस में बरकरार है। पर कहा जा रहा है कि संघ और मोदी की पसंद के तौर पर धर्मेंद्र प्रधान को ही देखा जा रहा है। वैसे भी प्रधान और यादव दोनों ही ओबीसी नेता हैं, जिसका फायदा भाजपा को बिहार और यूपी के चुनाव में मिल सकता है। बिहार विधानसभा चुनाव अक्तूबर-नवंबर माह में प्रतीक्षित हैं।

माया का असीमित आकाश

सियासी बियांबा के गर्दो-गुबार में माया का भटका हुआ हाथी अब भी अपने सही ठौर की तलाश में है। ताजा मामला मायावती के अपने भतीजे आकाश आनंद से जुड़ा हुआ है। पहले तो अपने भतीजे पर अनुशासन का चाबुक चलाती माया मेमसाहब ने आकाश को बसपा से बाहर का दरवाजा दिखा दिया। अब फिर से उन्हें एक मौका और देने की बात कहते हुए पार्टी का नंबर दो बनाते हुए सीधे 'चीफ नेशनल कोऑर्डिनेटर' बना दिया, इससे पहले आकाश दो बार पार्टी के नेशनल कोऑर्डिनेटर रह चुके हैं।, बसपा तीन हिस्सों में बंटी है, उत्तर भारत, पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत। इसके लिए पहले से तीन नेशनल कोऑर्डिनेटर नियुक्त हैं, ये हैं-राजा राम, रामजी गौतम और रणधीर सिंह बेनीवाल, अब ये तीनों आकाश को रिपोर्ट करेंगे। एक वक्त जब मायावती को लगा कि आकाश अपने ससुराल वालों के ज्यादा प्रभाव में है तो नाराज होकर उन्होंने अपने

भतीजे को बसपा से बाहर कर दिया। आकाश ने बाकायदा एक ट्वीट कर इस बात के लिए अपनी बुआ से माफी मांग ली, आकाश ने लिखा-'मैं अपने रिश्ते-नातों व खास कर अपने ससुराल वालों को पार्टी के हित में कभी आड़े नहीं आने दूंगा' इसके बाद आकाश की पत्नी ने भी मायावती से जाकर माफी मांग ली और उनसे यह वायदा किया कि 'अब वह उनकी अनुमति के बगैर कभी अपने मायके का रुख नहीं करेगी।' इसके बाद मायावती ने इन दोनों को माफ कर दिया और आकाश को पार्टी में नंबर दो के ओहदे पर विराजमान करा दिया।

क्या सुप्रिया की भी होगी ताजपोशी

खबर है कि मोदी कार्यकाल-3 के एक साल पूरे होने के उपलक्ष्य में भाजपा जहां देशभर में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित कर रही है, वहीं अंदरखाने चर्चा यह भी है कि इस मौके पर मोदी कैबिनेट में व्यापक फेरबदल भी हो सकता है। जिन नए मंत्रियों के नाम की चर्चा है, उसमें सुप्रिया सूले से लेकर शशि थरूर भी शामिल हैं।

पिछले काफी समय से शरद पवार ने भी केंद्रनीत मोदी सरकार को लेकर अपने सुर बदल लिए हैं, जब शिवसेना उद्धव के नेता संजय राउत ने सांसदों के प्रतिनिधिमंडल विदेश भेजे जाने को लेकर सवाल उठाए तो सीनियर पवार ने उन्हें आड़े हाथों लेते हुए कहा कि 'भारत सरकार की यह परंपरा पुरानी है, वे खुद भी वाजपेयी के साथ भारत का पक्ष रखने के लिए एक बार विदेश जा चुके हैं।'

मोदी सरकार ने पवार पुत्री सुप्रिया सूले को भी सांसदों के एक प्रतिनिधिमंडल का मुखिया बनाया है। सूले की नेतृत्व वाला यह प्रतिनिधिमंडल मिस्त्र, कतर, इथोपिया और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर निकला हुआ है। इससे पहले सुप्रिया ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को ही बेतरह लताड़ दिया था, जब खड़गे ने भारत-पाक मौजूदा संघर्ष को छुटपुट लड़ाई करार दिया था। सूत्रों की मानें तो चाचा (शरद), भतीजे (अजित) के पार्टी के विलय की पूरी पटकथा लिखी जा चुकी है और अगर यह पटकथा अपने मुकाम तक पहुंचती है तो केंद्रनीत मोदी सरकार को शरद पवार गुट के 8 सांसदों का अतिरिक्त समर्थन प्राप्त हो जाएगा, इससे भाजपा की नीतीश-नायडू पर से निर्भरता थोड़ी कम हो जाएगी।

यूपी में साइकिल

'ऑपरेशन सिंदूर' होने के बाद उसके व्यापक असर व जन समर्थन को आंकने के लिए सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव ने दो प्रमुख एजेंसियों से यूपी में दो अलग-अलग सर्वे करवाए हैं, इस सर्वेक्षण के नतीजों से अखिलेश के हौसले बम-बम हैं, क्योंकि पहले की तरह ही राज्य में सपा का ग्राफ उठता दिखाई दे रहा है। योगी आदित्यनाथ को अखिलेश की सपा बराबर की टक्कर देती दिख रही है, इस बात से उत्साहित होकर अखिलेश ने एक बार फिर से कह दिया है कि 2027 का यूपी विधानसभा चुनाव वे इंडिया गठबंधन के साथ मिल कर ही लड़ेंगे।

मोदी और महिला वोटर

पीएम मोदी 31 मई को भोपाल में होंगे, जहां वे लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लेते दिखेंगे। यह कार्यक्रम कई मायनों में अभूतपूर्व रहने वाला है क्योंकि मंच संचालन से लेकर मोदी की सुरक्षा व्यवस्था तक का सारा जिम्मा महिलाएं ही संभालेंगी।

यानी ट्रैफिक संचालन, समस्त सुरक्षा व्यवस्था, अतिथि सत्कार से लेकर मंच संचालन का संपूर्ण जिम्मा केवल महिलाओं का ही होगा। माना जाता है कि इस कार्यक्रम में दो लाख से ज्यादा महिलाएं शिरकत करेंगी।

कहते हैं पीएम मोदी को देश की महिला वोटरों का समय-समय पर विशेष समर्थन मिला है। सो, उनका यह मौजूदा उपक्रम बिहार की महिला वोटरों को प्रभावित कर सकता है जहां अगले कुछ महीनों में विधानसभा के चुनाव होने हैं।

...और अंत में

सूत्रों का दावा है कि एक रीजनल पार्टी की फायरब्रांड महिला नेत्री का विवाह तय हो गया है। सूत्र बताते हैं कि वह अपने एक पुराने वकील मित्र के साथ 20 जून को डेनमार्क में सात फेरे लेने वाली हैं।

यह वकील एक पूर्व सांसद भी हैं। पिछले दिनों इनका तलाक एक बड़ी राशि (कई सौ करोड़ रुपयों) के साथ सेट्ल हुआ है। माना जाता है कि वकील साहब के पुत्र व पुत्री को भी उनके इस नए रिश्ते से कोई खास परेशानी नहीं है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

शेखर गुप्ता
वरिष्ठ पत्रकार, चर्चित स्तंभकार

एन शब्द, सॉफ्ट पावर और कठोर सचाई

हकीकत यह है कि मित्रहीन होने से दूर आज भारत विश्व में जिस स्थिति में है वैसी बेहतरीन हैसियत उसकी शीतयुद्ध के बाद कभी नहीं रही। यह विडंबना ही है कि तमाम दोस्तों के बीच भी भारत एकला चलो रे की नीति पर चल रहा है। साथ ही यह जी20 वाले दौर से एक जबरदस्त वापसी है जब भारत को दुनिया का उभरता सितारा माना जाता था और नरेंद्र मोदी को ऐसा नेता जिसका हर कोई सम्मान कर रहा था।

नहीं, हम यहां 'एन' का प्रयोग न्यूक्लियर या परमाणु हथियारों के लिए नहीं कर रहे हैं। हम ऐसे सरल उदाहरणों का इस्तेमाल नहीं करते। यही वजह है कि इस आलेख में हमने 'एन' का इस्तेमाल नैरेटिव या आख्यान निर्माण के लिए किया है। यह एक अभिव्यक्ति इतनी घिसी-पिटी है कि मैंने इसे लगातार न्यूजरूम में प्रतिबंधित किया है, जब तक कि, निश्चित रूप से, नैरेटिव वह न हो जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। पहलगाम आतंकी हमले के तुरंत बाद चचाएं आरंभ हो गईं। दुनिया पाकिस्तान की आलोचना क्यों नहीं कर रही है? ऑपरेशन सिंदूर के साथ यह शिकायत एक शोर में बदल गई। कोई भी हमें 'शाबाश' क्यों नहीं कह रहा है? पश्चिमी मीडिया इसका संदिग्ध था। वे हमारे सशस्त्र बलों की कामयाबी को रेखांकित क्यों नहीं कर रहे हैं? वे ऐसा कैसे कह सकते हैं कि हमें नुकसान हुआ है?

उसके बाद डॉनल्ड ट्रंप कूद पड़े और शोर-शराबा कोलाहल में बदल गया। एक अपरिहार्य निष्कर्ष सामने आया कि कोई हमारे साथ नहीं है। भारत को अपनी लड़ाई अकेले लड़नी है। पीड़ित होने की मानसिकता यकीनन आकर्षक होती है और हमने बीती तमाम पीढ़ियों के दौरान इसे एक बीमारी के रूप में विकसित कर लिया है। हालांकि इसके साथ तथ्यात्मक दिक्कतें हैं।

पहली बात, 1965 के अलावा हम कभी अकेले नहीं रहे। 1971 में सोवियत संघ हमारा संधि से जुड़ा सहयोगी था। करगिल के दौरान, ऑपरेशन पराक्रम में और 26/11 के समय लगभग पूरा का पूरा शेष विश्व हमारे साथ था। यहां तक कि चीन भी खामोश था। वर्ष1998 में पोकरण-2 के बाद अमेरिका ने प्रतिबंध हटाने में अधिक समय नहीं लगाया, उसने भारत को रणनीतिक रूप से अहम, परमाणु हथियार संपन्न मित्र माना और कश्मीर पर कभी कोई विपरीत बात नहीं कही। वर्ष2000 में एक यात्रा के दौरान पाकिस्तान में अपने संक्षिप्त पड़ाव में बिल क्लिंटन ने कैमरे पर पाकिस्तान से कहा कि इस क्षेत्र के नक्शे की रेखाएं अब खून से नहीं खींची जा सकतीं। पाकिस्तान इस तरह अमेरिका का सहारा गंवा बैठा और चीन के संरक्षण में चला गया।

पुलवामा-बालाकोट के बाद अमेरिका ने शांति स्थापना में वह भूमिका निभाई जो भारत के अनुकूल थी। तब से अब में अंतर यह है कि 47वें राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप अपने पिछले कार्यकाल से एकदम अलग हैं। इस बार वह एक स्कूली बच्चे की तरह व्यवहार कर रहे हैं जिसे हर चीज का श्रेय चाहिए। ट्रंप पर नजर रखने वाले जानते हैं कि उन्हें अपने मित्रों और सहयोगियों तक को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने में मजा आता है। वे उनके साझा प्रतिद्वंद्वियों को खुश करने का दिखावा भी करते हैं। उन्होंने कनाडा के मार्क कार्नी, यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लोदीमीर जेलेंस्की और अभी हाल में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा का अपमान किया। इसके लिए उन्होंने व्हाट्सऐप विश्वविद्यालय के स्तर

के 'श्वेतों के नरसंहार' के जुमले का इस्तेमाल किया।

दुनिया अभी भी नौटंकी करने वाले ट्रंप और प्रशासन संभालने वाले ट्रंप में अंतर करना सीख रही है। जब भी आप ट्रंप के ट्वीट्स में बढ़ाचढ़ाकर कही गई बातों से नाराज हों तो आप मार्को रुबियो, जेडी वेंस, तुलसी गैबार्ड, काश पटेल और अन्य लोगों के ट्वीट्स पढ़िए। यहां तक कि भारत और पाकिस्तान को संबोधित रुबियो के बयान भी बारीक होते हैं। पाकिस्तान को सलाह दी गई कि वह भारत के साथ सहयोग करे और भारत को सलाह दी गई कि वह अपनी जमीन पर सक्रिय आतंकियों के विरुद्ध कार्रवाई करे। भारत और क्या चाहता है? गोली मारने का लाइसेंस?

आत्मदया से ग्रस्त और पीड़ित दिखना दरअसल पराजित होने से भी बुरा है क्योंकि यह आपको हताश करता है। हाल के दिनों में सुनी गई सबसे मूर्खतापूर्ण बात यह है कि पश्चिम (पढ़ें अमेरिका) ने भारत को पाकिस्तान की बराबरी पर रख दिया है। सुनिए, क्या किसी ने आपसे कहा कि आप कश्मीर मुद्दे पर बातचीत में शामिल होकर मध्यस्थता की पेशकश कीजिए? यहां तक कि ट्रंप का बड़बोलापन भी युद्ध विराम तक भी है। भारत द्वारा जम्मू-कश्मीर का संवैधानिक दर्जा बदले करीब छह वर्ष हो चुके हैं।

किसी मित्र शक्ति ने आपत्ति नहीं की। यह भी नहीं कहा कि दर्जा वापस बदला जाए। तुर्किये हमारे लिए मायने नहीं रखता और अजरबैजान तो बिल्कुल भी नहीं। जहां तक इस्लामिक सहयोग संगठन की बात है तो किसी मुस्लिम देश के पास इस लगभग निष्क्रिय संगठन के लिए समय नहीं है। ताजा दौर में भी इंडोनेशिया, बहरीन और मिस्र जैसे महत्त्वपूर्ण इस्लामिक देशों ने यह सुनिश्चित किया कि भारत की आलोचना बहुत कम हो।

हकीकत यह है कि मित्रहीन होने से दूर आज भारत विश्व में जिस स्थिति में है वैसी बेहतरीन हैसियत उसकी शीतयुद्ध के बाद कभी नहीं रही। यह विडंबना ही है कि तमाम दोस्तों के बीच भी भारत एकला चलो रे की नीति पर चल रहा है। साथ ही यह जी20 वाले दौर से एक जबरदस्त वापसी है जब भारत को दुनिया का उभरता सितारा माना जाता था और नरेंद्र मोदी को ऐसा नेता जिसका हर कोई सम्मान कर रहा था।

ऐसे में क्या बदलाव आया है इसे लेकर हमारी समझ इस बात पर निर्भर करती है कि हमारी अपेक्षाएं क्या हैं? हम अमेरिका को सहयोगी देश कहने से बचे। हमने जोर दिया कि क्वाड को सुरक्षा गठजोड़ नहीं कहा जाए (हालांकि ट्रंप ने मोदी की मौजूदगी में ऐसा कहा), हमने यूक्रेन के बाद बार-बार यूरोप की आलोचना की। हमने रणनीतिक स्वायत्तता की बात की जिसने भारत की मदद की है। ऐसे में वर्तमान में हम अपने दोस्तों से क्या अपेक्षा कर सकते हैं? कि वे पाकिस्तान के विरुद्ध हमारे साथ आएं? क्या हमने ऐसा किया? हकीकत तो यह है कि कई अमेरिकियों ने अपने ट्वीट और वक्तव्यों में भारत को साझेदार बताया।

दोबारा एन-शब्द पर आते हैं। हम अजीब लोग हैं, बल्कि हम तो सत्ता प्रतिष्ठान से भी ज्यादा अजीब हैं, जो पश्चिमी मीडिया, गैर-सरकारी संगठनों, थिंक टैंक, बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। हम यह मानते हैं कि वे सभी हमारे प्रति पूर्वग्रह रखते हैं। वे भारत के उभार को नहीं सह सकते। उनका हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं है। हमें बिना परवाह किए आगे बढ़ना चाहिए। ऐसे में हम उनकी आलोचना और सवालों को इतनी तरजीह देते क्यों हैं?

बीते वर्षों में हमारे प्रतिष्ठान ने पश्चिमी मीडिया के साथ संपर्क घटाया है। खासकर उनके साथ जो भारत में हैं। उनमें से अधिकांश को वीजा की दिक्कतों का सामना करना पड़ा है और उन्हें भारत-विरोधी माना गया है। उसके बाद भी हम शिकायत करते हैं कि वैश्विक मानस हमारे खिलाफ है और हम सांसदों को जनता के धन से विदेश भेज रहे हैं ताकि इस नुकसान को कम किया जा सके। हमें पहले यह तय करना होगा कि दुनिया की राय हमारे लिए मायने रखती है या नहीं।

वैश्विक राय महज शिखर बैठकों या ऑपरेशन सिंदूर जैसी घटनाओं से नहीं आकार लेती। यह कुछ जटिल कारकों का मिश्रण होती है जिसमें किसी देश की सॉफ्ट पावर शामिल है। जब पाकिस्तान के इंटर सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस के महानिदेशक ने कहा कि भारतीय मीडिया भी अपनी सरकार के दावों पर सवाल उठा रहा है तो विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने यह कहकर सही जवाब दिया कि लोकतंत्र ऐसे ही काम करता है और भला पाकिस्तान यह सब कैसे जानेगा? क्या इसके साथ ये बातें सही बैठती हैं कि उन्हें उनकी बेटी के विचारों के कारण निशाने पर लिया गया या फिर अशोक विश्वविद्यालय के प्रोफसर को ऐसी फेसबुक पोस्ट के कारण गिरफ्तार किया गया जिसे समझने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय को भी तीन वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों की मदद लेनी पड़ी कि वे समझाएं कि उसमें आपत्तिजनक क्या है?

अली खान महमूदाबाद (उक्त प्रोफेसर) का मामला न्यूयॉर्क टाइम्स तक में छपा। परंतु हमारे कमांडोनुमा मजाक बन गए समाचार चैनल किसी निजी लड़ाई की खबरें देते रहे जहां नौसेना ने कराची पर, सेना ने इस्लामाबाद पर और वायु सेना ने बीच की तमाम जगहों पर कब्जा कर लिया। यह इतना शर्मनाक हो गया था कि आखिरकार सरकार को उन्हें चुप कराना पड़ा कि वे हवाई हमले वाले सायरन का इस्तेमाल अपने पार्श्व संगीत में न करें। इन सभी बातों ने भारत को क्षति पहुंचाई है और देश की साफ्ट पावर को कमजोर किया। इस नैरेटिव वाले एन-शब्द को सही करने के लिए हमें यहां से शुरूआत करनी होगी। इस बीच हमें उम्मीद है कि हमारे सांसद कुछ हासिल करके लौटें।

विश्व में युद्ध का कारोबार: भारत का आयात 104% बढ़ा

शिखा शालिनी
वरिष्ठ स्तंभकार

भारत की रक्षा कंपनियों हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स ने वैश्विक रैंकिंग में अपनी स्थिति सुधारी है, जो 'मेक इन इंडिया' पहल और निर्यात के लिए बढ़े उत्साह को दर्शाता है।

भारत की रक्षा कंपनियों हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स ने वैश्विक रैंकिंग में अपनी स्थिति सुधारी है, जो 'मेक इन इंडिया' पहल और निर्यात के लिए बढ़े उत्साह को दर्शाता है।

दुनिया भर में युद्ध से जुड़े रक्षा हथियारों के आयात-निर्यात में वर्ष 2000-10 के दशक की तुलना में 2011 से 2024 के दशक के बीच अच्छी खासी बढ़ोतरी देखी गई है। वैश्विक सुरक्षा से जुड़े आंकड़ों पर शोध करने वाली संस्था स्टॉकहोम इंटरनैशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिपरी) के आंकड़ों के मुताबिक दुनिया भर में हथियारों की खरीद फरोख्त में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

सिपरी के आंकड़ों के विश्लेषण के मुताबिक, वैश्विक हथियार बाजार में अमेरिका का दबदबा अब भी बरकरार है और उसने हथियारों के बलबूते वर्ष 2023 में 316.75 अरब डॉलर की कमाई की है। अमेरिका की हथियारों से हुई कमाई दूसरे स्थान पर रहे चीन को हथियारों से मिले कुल राजस्व के तीन गुना से भी अधिक है। इन आंकड़ों के एक दिलचस्प रुझान के मुताबिक प्रमुख सैन्य शक्ति होने के बावजूद, चीन के हथियार आयात में 47 प्रतिशत कमी आई है जो रक्षा क्षेत्र में उसकी बढ़ती घरेलू क्षमता और आत्मनिर्भरता के संकेत देती है।

सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल विनोद जी. खंडारे ने वर्ष 2000 से ही वैश्विक हथियारों के आयात-निर्यात में वृद्धि का श्रेय चीन के रक्षा से जुड़े विनिर्माण क्षेत्र में आई तेजी को दिया है जिसके कारण उन देशों को एक विकल्प मिला है जो पहले अमेरिका पर निर्भर थे।

उन्होंने कहा, 'इसके कारण दक्षिण पूर्व एशिया में चीन के हथियारों की बिक्री बढ़ी और यूरोप के रक्षा हथियार उत्पादकों की बाजार हिस्सेदारी कम हो गई। दरअसल चीन उन देशों में बिक्री पर जोर दे रहा है जहां हथियारों का आयात करने की होड़ है और यह अमेरिका के रक्षा हथियारों की बिक्री के मॉडल से अलग है।'

सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी अमेरिका और चीन के बीच हो रही इस प्रतिस्पर्द्धा को एक वैचारिक टकराव के रूप में देखते हैं जिसके मुताबिक अमेरिका एकध्रुवीय विश्व के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना चाहता है जबकि चीन का जोर बहुध्रुवीयता पर है।

चीन का घरेलू निर्माण पर जोर

भारत दुनिया का प्रमुख हथियार आयातक देश है जिसके आयात में एक दशक के दौरान 104 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। एशिया क्षेत्र में होने वाले कुल हथियार आयात में भारत की हिस्सेदारी 27 प्रतिशत है। लेफ्टिनेंट जनरल खंडारे ने चीन की बढ़ती नौसैनिक क्षमता को अमेरिका के समुद्री रक्षा क्षेत्र के प्रभुत्व के लिए एक चुनौती बताया है। वह कहते हैं, 'चीन के रक्षा क्षेत्र की संरचना में एक रणनीतिक बदलाव देखा जा रहा है जिसमें सेना

के कर्मियों को नौसेना में स्थानांतरित करना और नौसेना का अनुभव एवं परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिए वैश्विक समुद्री डकैती विरोधी अभियानों का इस्तेमाल करना शामिल है।'

भारत ने इस बीच अपने पारंपरिक साझेदार रूस के अलावा अन्य हथियार आपूर्तिकर्ता देशों से जुड़कर भागीदारी में विविधता लाने की कोशिश की है। भारत की प्रमुख रक्षा खरीद में रूस की एस-400 मिसाइल प्रणाली, फ्रांस के राफेल जेट और अमेरिका के चिनूक हेलीकॉप्टर शामिल हैं। इसके अलावा एयरबस-टाटा जैसे घरेलू उत्पादन के लिए भी समझौते हुए हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल चतुवेर्दी जहां मिसाइलें, तोप, गोला-बारूद, टैंक, विमान और नौसैनिक जहाजों के बढ़ते उत्पादन के साथ भारत के आत्मनिर्भर होने की बात पर जोर देते हैं वहीं लेफ्टिनेंट जनरल खंडारे कहते हैं कि 'मेक इन इंडिया' के प्रयास दिखने के बावजूद तकनीकी जानकारी और कच्चे माल तक की उपलब्धता में कई बाधाओं के कारण भारत का पूरी तरह आत्मनिर्भर होना अब भी मुश्किल है।;

दक्षिण एशिया का रुझान

वैश्विक रुझानों के अनुरूप, दक्षिण एशिया में हथियारों के आयात में तेज वृद्धि देखी गई है। भारत और पाकिस्तान दो सबसे प्रमुख खरीदार बने हुए हैं, जिसमें पाकिस्तान के हथियार आयात में 74 प्रतिशत की महत्त्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। लेफ्टिनेंट जनरल खंडारे पाकिस्तान के रक्षा क्षेत्र की प्रगति की बात स्वीकारते हुए कहते हैं, 'पाकिस्तान के पास आजादी के बाद के दौर में कोई आयुध कारखाने नहीं हुआ करते थे लेकिन अब वहां 14 ऐसे कारखाने हैं।'

दबदबा बरकरार और उभरते दावेदार

वैश्विक हथियार उद्योग में लगातार बदलाव आ रहे हैं, जो भू-राजनीतिक तनावों और संघर्षों के कारण बने हैं। अमेरिका अब भी इस दौड़ में सबसे आगे है और इसकी प्रमुख कंपनियां लॉकहीड मार्टिन और आरटीएक्स बाधाओं के बावजूद शीर्ष पायदान पर जमी हुई हैं। यूरोप में हथियारों से मिलने वाले राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिसमें ब्रिटेन (47.68 अरब डॉलर), फ्रांस (25.53 अरब डॉलर), इटली (15.21 अरब डॉलर) और जर्मनी (10.67 अरब डॉलर) जैसे देश सबसे आगे रहे।

भारत की रक्षा कंपनियों हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स ने वैश्विक रैंकिंग में अपनी स्थिति सुधारी है, जो 'मेक इन इंडिया' पहल और निर्यात के लिए बढ़े उत्साह को दर्शाता है।

राजेश कुमार पासी
स्तंभकार

विदेश नीति पर सवाल

यह सवाल हर भारतवासी के मन में गूंज रहा है कि मोदी सरकार विभिन्न देशों को सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल क्यों भेज रही है।इस सवाल के पीछे की वजह भारत की घरेलू राजनीति भी है ।सोशल मीडिया में यह विमर्श चलाया जा रहा है कि मोदी की विदेश यात्राओं के बावजूद संकट के समय कोई भी देश भारत की मदद को क्यों नहीं आया ।इसके विपरीत पाकिस्तान के साथ चीन, तुर्की और अजरबैजान मजबूती के साथ खड़े रहे ।यह नैरेटिव चलाने की कोशिश हो रही है कि भारत की विदेश नीति असफल साबित हुई है और इसके पीछे विदेश मंत्री एस जयशंकर की नाकामी बताई जा रही है ।अजीब बात तो यह है कि भारत सरकार चाहती है कि विश्व के सामने अपनी बात रखने के लिए प्रतिनिधिमंडल भेजा जाए लेकिन विपक्ष इसे मोदी सरकार की कमजोरी सिद्ध करने पर लगा हुआ है ।एक सच यह भी है कि ज्यादातर विपक्षी दलों ने अपने नेताओं को सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में भेज दिया है ।

राहुल गांधी लगातार सवाल उठा रहे हैं कि भारत की विदेश नीति असफल हो गई है ।वो युद्ध-विराम को लेकर भी सवाल उठा रहे हैं और उनका कहना है कि डोनाल्ड ट्रंप के द्वारा मध्यस्थता की गई है और उनके दबाव में सरकार ने युद्ध-विराम समझौता किया है ।ये भी विडम्बना है कि एक तरफ कांग्रेस सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में अपने नेताओं को भेज रही है तो दूसरी तरफ देश के खिलाफ जाकर पाकिस्तान का विमर्श चलाने की कोशिश कर रही है ।राहुल गांधी के बयानों के खिलाफ जाकर कई वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने सरकार का साथ दिया है लेकिन राहुल गांधी कुछ समझने को तैयार नहीं हैं ।अब सवाल यह उठता है कि सरकार सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल क्यों भेज रही है और पाकिस्तान के साथ संघर्ष में किसी भी देश ने भारत की मदद क्यों नहीं की है।

जहां तक बात है कि क्या हमें पूरी दुनिया ने इस संघर्ष में अकेला छोड़ दिया था लेकिन इस सवाल के जवाब में ही दूसरा सवाल खड़ा हो जाता है कि क्या हमने दुनिया में मदद मांगी थी ।आज भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और चौथी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है।दूसरी बात यह है कि हमारे पास दुनिया की सबसे बड़ी आबादी है। आज हमारे पास हथियारों का विशाल भंडार है जिसमें से ज्यादातर भारत में ही बनाये जाते हैं ।पाकिस्तान पर कार्यवाही करने से पहले भारत सरकार ने कई देशों से सम्पर्क स्थापित किया था और पाकिस्तान की कारस्तानियों के बारे में बताया था। भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ अपनी संभावित कार्यवाही के बारे में भी सूचना दी थी।

अब सवाल उठता है कि भारत ने यह सब क्यों किया था ? क्या यह सब दूसरे देशों से मदद मांगने के लिए किया गया था ।वास्तव में भारत की सारी कार्यवाही सिर्फ अपने मित्र देशों से समर्थन हासिल करना था ।भारत ने किसी से मदद नहीं मांगी थी क्योंकि भारत जैसी शक्ति के लिए पाकिस्तान जैसे देश के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए किसी भी देश से मदद की जरूरत नहीं है ।यह बात तीन दिन के युद्ध से साबित भी हो गई है ।जब भारत ने किसी देश से मदद मांगी ही नहीं तो मदद आने का सवाल ही पैदा नहीं होता ।भारत सिर्फ यह चाहता था कि जब भारत कार्यवाही करे तो सभी देश उसके पक्ष को अच्छी तरह से समझें ।

दूसरी बात यह है कि कोई भी देश बिना किसी स्वार्थ के किसी दूसरे देश की मदद नहीं करता ।बिना जरूरत के मदद मांगना अपना ही नुकसान करना होता है ।इजराइल और यूक्रेन दूसरों की मदद से जंग लड़ रहे हैं और उसकी कीमत भी चुका रहे हैं ।1971 के युद्ध के समय भारत को मदद की जरूरत थी और इसके लिए रूस से समझौता किया गया था ।उस समझौते के अनुसार भारत पर हमला रूस पर हमला था और रूस पर हमला भारत पर हमला था ।आज भी हमें रूस, इजराइल, फ्रांस और अमेरिका से हथियार मिल रहे हैं और इसी तरह पाकिस्तान को तुर्की, चीन और अमेरिका से हथियार मिलते हैं ।कैसे कहा जा सकता है कि भारत अकेला था. उसे जैसी मदद चाहिए थी वो तो पहले ही मिल चुकी थी । विपक्ष का यह शोर मचाना पूरी

तरह से गलत है कि भारत इस युद्ध में अकेला था । भारत को कई देशों का समर्थन हासिल था लेकिन उसे देखने की कोशिश नहीं की गई । सबसे बड़ी बात पाकिस्तान का पड़ोसी देश अफगानिस्तान इस मुद्दे पर पूरी तरह से भारत के समर्थन में आ गया है ।

जहां तक पाकिस्तान के समर्थन की बात है तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान भारत के मुकाबले अब बहुत कमजोर देश बन चुका है । बेशक पाकिस्तान भारत के खिलाफ आतंकवादी कार्यवाहियों में शामिल है लेकिन वो उन्हें नॉन स्टेट एक्टर्स कहकर विश्व को गुमराह करता आया है । भारत की बड़ी कार्यवाही से उसे खुद को पीड़ित दिखाने में कामयाबी हासिल हुई है । दुनिया को लगता है कि भारत जैसी बड़ी शक्ति पाकिस्तान जैसे छोटे देश को दबा रही है । यही कारण है कि भारत सरकार ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला किया है ताकि पाकिस्तान के कारनामों को सबूत के साथ दुनिया के सामने रखा जा सके । 26 लोगों की हत्या दुनिया की दृष्टि में इतना बड़ा अपराध नहीं है जितनी बड़ी सजा भारत द्वारा पाकिस्तान को दी गई है । भारत दुनिया को बताना चाहता है कि यह कार्यवाही सिर्फ पहलगाम हमले के बदले में नहीं है बल्कि वर्षों से भारतीयों का खून बहा रहे आतंकवादियों को सजा देकर अपनी जनता को न्याय देने के लिए है ।

इस सच्चाई को समझने की जरूरत है कि अभी भी ज्यादातर देश आतंकवाद की गम्भीरता को नहीं समझते हैं । प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की है कि आतंकवाद को एक्ट ऑफ वॉर माना जायेगा और उसका वैसा ही जवाब भी दिया जायेगा । इस घोषणा के बाद दुनिया को समझ आ गया है कि आतंकवाद को भारत कितनी गंभीरता से ले रहा है । सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला इसलिए भी किया गया है ताकि पूरी दुनिया को बताया जा सके कि यह कार्यवाही सिर्फ सत्ताधारी दल की नहीं है बल्कि इसे भारत के सभी राजनीतिक दलों का समर्थन हासिल है । अब यह प्रतिनिधिमंडल सरकारी नहीं रह गया है बल्कि देश की आवाज बन गया है । कोई भी देश इस प्रतिनिधिमंडल की बात को यह सोचकर अनदेखा नहीं कर सकता कि यह एक सरकारी प्रोपेगेंडा है । सरकार ने यह भी कोशिश की है कि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व रहे । इसमें महिलाओं को भी उचित स्थान दिया गया है ।

युद्ध के बाद भारत पूरी दुनिया को युद्ध करने की वजह बताना चाहता है ताकि दुनिया पाकिस्तान को पीड़ित न समझे । दुनिया यह जाने कि वास्तविक रूप से तो भारत पाकिस्तान के आतंकवाद से पीड़ित है लेकिन अब वो सहने को तैयार नहीं है । दुनिया अभी तक भारत को ही समझाती आई है क्योंकि वो नहीं चाहती कि दो परमाणु शक्ति सम्पन्न देश आपस में भिड़े । भारत दुनिया को बताना चाहता है कि अब वो परमाणु बम की धमकी से डरने वाला नहीं है । अब दुनिया को पाकिस्तान को समझाने की जरूरत है कि वो भारत से मत उलझे और आतंकवाद को समर्थन देना बंद करे । यह प्रतिनिधिमंडल सिर्फ विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों से ही बात नहीं करेगा बल्कि दुनिया के प्रभावशाली थिंक टैंकों से भी वातार्लाप करेगा । दुनिया के कई प्रभावशाली थिंक टैंक हैं जो दुनिया के नैरेटिव पर नियंत्रण रखते हैं । अब भारत दुनिया के नैरेटिव को बदलने की जंग भी लड़ रहा है जिसमें पाकिस्तान हमेशा जीतता आया है । वो हमलावर होने के बावजूद पीड़ित होने का नाटक करता आया है और दुनिया उसके झांसे में रही है । नैरेटिव वॉर जीतने का पाकिस्तान हमेशा फायदा उठाता रहा है लेकिन भारत अब वहां भी उसे मात देने की तैयारी कर रहा है । कितनी अजीब बात है कि पूरी दुनिया को आतंकवाद का निर्यात करने वाला देश ही खुद को आतंकवाद से पीड़ित बताता है ।

देखा जाए तो प्रतिनिधिमंडल भेजना न तो भारत की कमजोरी है, न ही विदेश नीति की असफलता है और न ही दूसरे देशों को मध्यस्थता के लिए आमंत्रण है । वास्तव में यह सरकार पाकिस्तान को किसी भी मोर्चे पर छूट नहीं देना चाहती । पाकिस्तान की असलियत दुनिया के सामने लाने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला बहुत सोच समझकर लिया गया है । यही कारण है कि थोड़ी झिझक के बाद ज्यादातर दलों ने अपने प्रतिनिधि इस मंडल में भेज दिये हैं । वो भी समझ गए हैं कि घरेलू राजनीति के कारण अपने राष्ट्रीय कर्तव्य से पीछे हटना ठीक नहीं होगा । मेरा मानना है कि भारत को अपने उद्देश्य में कामयाबी जरूर हासिल होगी क्योंकि पूरा देश आज एक साथ खड़ा नजर आ रहा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

रमेश सर्राफ धमोरा
वरिष्ठ स्तंभकार, राजस्थान

सेना में महिला शक्ति का दमखम

भारतीय सेना में महिला शक्ति का दम दिखाई देने लगा है। पुरुषों की तरह महिलाएं भी सेना में बढ़ चढ़कर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग में सेना की दो महिला अधिकारियों द्वारा युद्ध से संबंधित जानकारी देना एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भारत के पराक्रम की तस्वीर को पूरी दुनिया के सामने पेश किया और बताया कि आखिर ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने कैसे और क्या कार्यवाही की। सेना की दोनों महिला अधिकारियों ने सैनिक कार्यवाही की हर दिन प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से देश दुनिया को ताजा जानकारी प्रदान कर यह दिखा दिया कि भारत में महिला शक्ति भी किसी से कम नहीं है।

भारत में सदियों से महिलाओं को मातृशक्ति का दर्जा दिया जाता रहा है। कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।

अर्थातः जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमते हैं। जहां नारियों की पूजा नहीं होती, वहां किए गए सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। हम देश में साल में दो बार नवरात्र पर मातृशक्ति रूपी मा दुर्गा की पूजा कर देश दुनिया को यह संदेश देते हैं कि मातृ शक्ति भी किसी से कम नहीं है। अब तो हमारी सेना में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी उत्कृष्ट क्षमता दिखा दी है। महिलाएं फाइटर प्लेन उड़ा रही है। तो युद्ध भूमि में हर प्रकार की भूमिका निभाने को तैयार नजर आ रही है।

भारतीय सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी का इतिहास लंबे संघर्ष और बदलावों से भरा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही महिलाएं भारत की सुरक्षा और सेवा में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती रही हैं। लेकिन सेना में औपचारिक तौर पर उनकी नियुक्ति का रास्ता बहुत बाद में खुला। साल 1943 में बनी रानी झांसी रेजिमेंट, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज का हिस्सा थी। यह पहली बार था जब महिलाएं युद्ध के मोर्चे पर सक्रिय रूप से दिखाई दी। आजादी के बाद भी सशस्त्र बलों में महिलाओं को लंबे समय तक सहायक भूमिकाओं तक ही सीमित रखा गया।

भारत की तीनों सेनाओ (थल सेना,

नौसेना, वायु सेना) में महिलाओं की संख्या को लेकर अगस्त 2023 में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट ने संसद में बताया था कि तीनों सेना में 11414 महिलाएं सेवाएं दे रही है। थल सेवा में 7054 महिलाएं सेवारत है। इनमें 1733 महिला अधिकारी है। यह आंकड़ा 1 जनवरी 2023 तक का है। भारतीय वायु सेवा में 1654 अधिकारी सेवारत है जबकि 155 महिलाएं एयर मेन (अग्निवीर) के रूप में सेवा दे रही है। भारतीय नौसेना में 580 महिलाएं अधिकारी के रूप में सेवारत है जबकि 727 महिलाएं सैलर्स (अग्निवीर) के तौर पर तैनात है।

इसी तरह 1212 महिलाएं भारतीय थल सेना के आर्मी मेडिकल कॉर्प्स में 168 महिलाएं आर्मी डेंटल कार्स में और 3841 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में कार्यरत है। 151 महिलाएं नौसेना के मेडिकल कॉर्प्स में 10 महिलाएं डेंटल कार्य और 380 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है। 274 महिलाएं भारतीय वायु सेवा के मेडिकल कॉर्प्स में पांच महिलाएं डेंटल कॉर्प्स में और 425 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है।

पहले महिलाओं को शार्ट सर्विस कमीशन में ही लिया जाता था। लेकिन फरवरी 2020 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन मिलने लगा है। अब एनडीए की कुल सीटों का 10 प्रतिशत सीटों पर लड़कियां सिलेक्ट होती है और वह भी ओपन कंपटीशन में मुकाबला करके। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने मार्च 2025 में संसद में बताया था कि 2022 में महिला कैडेट्स के पहले बैच की एंट्री के बाद से अब तक एनडीए में 126 महिलाओं को एडमिशन मिला है। आर्म्ड फोर्सज में आने के बाद उनके लिए भी अवसर समान होते हैं। उनका करियर प्रोग्रेस वैसा ही होगा जैसा लड़कों का होगा। सर्विस रूट समान होते हैं। अब हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारी सेना में पूरी तरह जेंडर न्यूट्रलाइजेशन हो गया है।

सेना में आज हमारी महिला कॉम्बैट पायलट भी है। जो मिसाइल चलती है मोर्चे पर भी जाती है। वह इंजीनियरिंग का कार्य भी देखती है और सैटेलाइट को भी नियंत्रित करती है। अब महिलाएं डिफेंस भी करती है। टेक्निकल इंटेलिजेंस भी एकत्रित करती है। अभी तक आमने-सामने की लड़ाई में महिलाओं को नहीं भेजा जाता है। राजस्थान में झुंझुनू जिले की स्क्वाड्रन लीडर मोहन सिंह 2016 में भारतीय वायु सेवा की तेजस फाइटर स्पाइडर में शामिल होने वाली पहली महिला बनी। इससे पहले वह मिग 21 बाइसन फाइटर प्लेन भी उड़ा चुकी है। ग्रुप कैप्टन सालिया धामी वायु सेवा की ऐसी पहली महिला अधिकारी बनी है जो फ्रंटलाइन काम्बैक्ट यूनिट की कमान संभाल रही है। फ्लाइंग यूनिट की फ्लाइट कमांडर बनने वाली भी वह पहली महिला अधिकारी है। भारत की सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा और थलसेना एवं नौसेना की चिकित्सा सेवाओं का नेतृत्व महिला अधिकारी ही कर रही हैं।

रक्षा बलों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भारत की प्रगति धीमी रही है। लेकिन लोगों का मानना है कि इसमें लगातार प्रगति हुई है। अब एक साथ बहुत सारी महिलाएं प्रमुख भूमिकाओं में हैं। वे दूसरों के लिए रास्ता बना रही हैं। उनके प्रदर्शन पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। अगर वे अच्छा काम कर रही हैं तो उन्हें स्वीकार करना आसान होगा और आने वाली महिलाओं के लिए रास्ता साफ हो जाएगा।

शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत महिलाएं केवल 10 या 14 साल तक सेवाएं दे सकती हैं। इसके बाद वो सेवानिवृत्त हो जाती हैं। लेकिन अब उन्हें स्थायी कमीशन के लिए आवेदन करने का भी मौका मिलेगा। जिससे वो सेना में अपनी सेवाएं आगे भी जारी रख पाएंगी और रैंक के हिसाब से सेवानिवृत्त होंगी। साथ ही उन्हें पेंशन और सभी भत्ते भी मिलेंगे। 1992 में पांच साल के लिये शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए महिलाओं का पहला बैच भर्ती हुआ था। इसके बाद इस सर्विस की अवधि को 10 साल के लिए बढ़ाया गया। 2006 में शार्ट सर्विस कमीशन को 14 साल कर दिया गया।

भारतीय सेना अब महिलाओं को सशत्र बल में नियुक्ति के लिए उनके लिए तय की गई नीतियों को लागू कर प्रोत्साहित करती है। इसके लिए महिलाओं के लिए आर्मी मेडिकल कोर, आर्मी डेंटल कोर और मिलिटरी नर्सिंग सेवाओं के लिए परमानेंट कमिशन को मंजूरी दी गई है। अब 11 आर्म्स एंड सर्विसेज में महिला अधिकारियों को परमानेंट कमिशन मिलता है। जिनमें आर्मी सर्विस कोर, आर्मी आर्डनेंस कोर, आर्मी एड्डुकेशन कोर, जज एडवोकेट जनरल ब्रांच, इंजीनियर कोर, सिगनल कोर, इलेक्ट्रॉनिक्स और मकैनिकल कोर, इंटेलीजेंस कोर, आर्मी एयर डिफेंस, आर्मी एविएशन, रीमाउंट एंड वेटनरी कोर आदि शामिल हैं।

परमानेंट कमिशन के बाद महिला अधिकारी इंडियन आर्मी के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में शामिल आर्टिलरी का हिस्सा बनने लगी है। सेना आर्टिलरी की लगभग 300 रेजिमेंट और लगभग 5,000 अधिकारी हैं। आर्टिलरी में शामिल महिला अधिकारियों की बोफोर्स, होवित्जर, के-9 वज्र जैसी तोपों पर भी 2023 में तैनाती की अनुमति दी जा चुकी है।

वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बलों में नियुक्तियों में लैंगिक आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। पुरुष और महिला जवानों की हथियारों और सेवाओं के लिए तैनाती में किसी प्रकार का अंतर नहीं किया जाता है। सभी की पोस्टिंग सेना की जरूरतों के अनुसार की जाती है। भारतीय सेना में महिला अफसरों को परमानेंट कमिशन के लिए 23 नवंबर 2021 को एक जेंडर न्यूट्रल करियर प्रोग्रेशन पॉलिसी लाई गई थी। इसके जरिए महिलाओं को हथियारों व अन्य सेवाओं में समान अवसर उपलब्ध कराए गए हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

डिजिटल लेनदेन में रफ्तार तेज : सिडबी सर्वे

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में उभरते रुझानों पर अंतर्दृष्टि पेश करते हुए 'अंडरस्टैंडिंग दि इंडियन एमएसएमई सेक्टरः प्रोग्रेस एंड चैलेंजेज' नामक एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट 19 उद्योगों में 2,000 से अधिक एमएसएमई के प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है और सेकेंडरी डेटा स्रोतों से समर्थित है।

रिपोर्ट के निष्कर्ष बताते हैं कि सर्वेक्षण में शामिल 90% उत्तरदाता डिजिटल भुगतान स्वीकार करते हैं, जो डिजिटल लेनदेन को अपनाने में तेज रफ्तार का संकेत देता है। डिजिटल ऋण देने वाले प्लेटफार्मों के माध्यम से एमएसएमई की ऋण तक पहुंच बढ़ रही है, लेकिन 18% पर, एमएसएमई के बीच डिजिटल ऋण की पहुंच, विश्वास और जागरूकता को बढ़ाकर आगे पहुंच के लिए महत्वपूर्ण गुंजाइश है।

रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि खासकर सूक्ष्म उद्यमों के लिएअनौपचारिक ऋण अभी भी एक सच्चाई है। जबकि केवल 3% लघु उद्यम और 2% मध्यम उद्यम क्रेडिट के लिए अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर रहने की रिपोर्ट करते हैं, वहीं 12% सूक्ष्म उद्यम अभी भी ऐसा करते हैं। यह एमएसएमई पिरामिड के निचले स्तर पर विशेष रूप से औपचारिक ऋण पहुंच का विस्तार करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सिडबी ने एमएसएमई क्षेत्र के लिए ₹30 लाख करोड़ के कुल क्रेडिट गैप का आकलन किया है, जो कुल अनुमानित वित्त पोषण आवश्यकताओं का 24% है। सेवा क्षेत्र में क्रेडिट गैप 27% अधिक है, और महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों के लिए यह गैप 35% पर और भी अधिक साफ दिखता है। ये आंकड़े लक्षित, डेटा-समर्थित नीतिगत समाधानों की आवश्यकता का सुझाव देते हैं जो क्रेडिट पहुंच में क्षेत्रीय और जनसांख्यिकीय असमानताओं को दूर करते हैं।

औपचारीकरण में प्रगति सरकारी पहलों जैसे उद्यम पंजीकरण और उद्यम असिस्ट पोर्टल के माध्यम से साफ दिखती है। मार्च 2025 तक, इन ढांचों के तहत 6.2 करोड़ से अधिक उद्यम पंजीकृत किए गए थे, जो मार्च 2024 में 2.5 करोड़ थे। यह वृद्धि एमएसएमई के बीच औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल होने के लिए बढ़ती जागरूकता और इच्छाशक्ति की ओर भी इशारा करती है।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि 26.2% उद्यमों का स्वामित्व महिलाओं के पास है, जो उद्यमिता में लैंगिक समावेशन की दिशा में एक सकारात्मक प्रवृत्ति को दशार्ता है।

दिल्ली मेट्रो की टिकट ऊबर पर हुई लाईव

ओएनडीसी से पावर्ड
अगला कदम बी2बी लॉजिस्टिक्स
तीन और शहरों में यह सुविधा होगी उपलब्ध

ऊबर ने 19 मई, 2025 को ऊबर ऐप पर मेट्रो टिकट्स रोलआउट करने की घोषणा की। यह ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी) से पावर्ड है। दिल्ली शहर में सबसे पहले इस सुविधा की शुरूआत की गई, जिसके चलते दिल्ली मेट्रो की टिकट्स ऊबर पर लाईव हो चुकी हैं। यह भारत के अग्रणी डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ ऊबर का पहला एकीकरण है, जो सार्वजनिक परिवहन को अधिक कनेक्टेड बनाने की दिशा में बड़ा कदम है। 2025 में देश के तीन और शहरों में यह सर्विस लाईव हो जाएगी।

लॉन्च के अवसर पर प्रवीण नेपल्ली नागा, चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर, ऊबर ने कहा, 'भारत ने ओएनडीसी जैसे डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहित करने में प्रभावशाली कदम बढ़ाए हैं। ऊबर ऐप पर मेट्रो टिकटिंग की शुरूआत करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है, इस घोषणा के साथ हम परिवहन संबंधी सभी जरूरतों के लिए वन-स्टॉप शॉप बनने के अपने दृष्टिकोण के और करीब आ गए हैं। ओएनडीसी के साथ काम करते हुए हमने इस बात को समझा कि किस तरह प्राइवेट इनोवेशन और पब्लिक प्लेटफॉर्म्स एक साथ मिलकर स्मार्ट और सहज समाधान ला सकते हैं। यह इसी दिशा में हमारी शुरूआत है।'

विभोर जैन, एक्टिंग सीईओ एवं सीओओ, ओएनडीसी ने कहा, 'ऊबर का ओएनडीसी नेटवर्क के साथ जुड़ना भारत में भरोसेमंद एवं इंटरोपेरेबल डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एक ग्लोबल प्लेटफॉर्म के रूप में ऊबर पर मेट्रो टिकटिंग और लॉजिस्टिक्स के एकीकरण से संभावनाओं के नए मार्ग प्रशस्त होंगे। यह साझेदारी भावी इनोवेशन्स की बुनियाद है, जो यूजर्स, पार्टनर्स को बेहतर सेवाएं प्रदान कर परिवहन एवं सेवाओं का दायरा बढ़ाने में मदद करेगी।'

दिल्ली मेट्रो टिकट को अपने ऐप पर लाकर ऊबर टू-व्हीलर, ऑटो, कार एवं बस के बाद अपनी मल्टीमॉडल पेशकश को सशक्त बनाना जारी रखे हुए हैं। अब राइडरों के लिए यात्रा की योजना बनाना और यात्रा को एक ही ऐप के जरिए पूरा करना बेहद आसान हो जाएगा।

इसी क्रम में ऊबर ओएनडीसी नेटवर्क के जरिए जल्द ही बी2बी लॉजिस्टिक्स का लॉन्च भी करेगी। इस समाधान से कारोबार ऊबर के डिलीवरी नेटवर्क के जरिए ऑन डिमांड लॉजिस्टिक्स के लिए रिक्वेस्ट कर सकेंगे और उन्हें अपने खुद के फ्लीट की जरूरत नहीं होगी। इस तरह ऊबर के 1.4 मिलियन ड्राइवर नेटवर्क को कमाई के अतिरिक्त अवसर मिलेंगे। शुरूआत में इस सर्विस के जरिए फूड डिलीवरी की जाएगी, बाद में इसे ई-कॉमर्स, ग्रॉसरी, फामेर्सी एवं हेल्थकेयर लॉजिस्टिक्स में भी विस्तारित किया जाएगा।

रिपोर्ट सैयद असद आजाद

समकालीन चेतना के सुप्रतिष्ठित कवि हरिबल्लभ सिंह 'आरसी'

प्रो. (डॉ.) सत्येन्द्र अरूण
वरिष्ठ साहित्यकार

वैदुष्य विमंडित व्यक्तित्व में स्वामी और दो दर्जन आलोकमयी काव्यकृतियों के प्राणवंत प्रणेता एवं लोक को आलोक देकर सृजन की माननीय सार्थकता सिद्ध करने की लालसा रखने वाले कवि श्रेष्ठ हरिबल्लभ सिंह 'आरसी' आधुनिक काव्यधारा के सशक्त एवं महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। समाज की धड़कनें कविता में और कविता की घड़कने समाज में सुनने के आग्रह ने उन्हें जीवन की समग्रता का कवि बना दिया है। इनकी कविता समकालीन घटनाओं, स्थितियों और बदलावों का काव्यात्मक आलेख होने के साथ ही अपने में अंतिर्निहित शाश्वत मूल्यों की सांकेतिक अभिव्यक्ति के कारण चिरन्तन भी है। जाहिर है कि कोई भी बड़ा रचनाकार न तो अपने दिक्-काल से आंखें मूंद कर रचना में प्रवृत्त होता है और न ही रचना की कालजयता से निरपेक्ष होता है। यहाँ तक कि 'स्वान्तः सुखाय' रचनाओं में भी न तो युगबोध की अनुपस्थिति संभव है और न ही युगातीत होने की आकांक्षा की वर्जना। सच तो यह है कि अपने समकाल से आबद्ध रचना की सार्थकता भी उसके देश कालातीत हो जाने में है। यही कारण है कि आरसीजी की कविता सामयिक और समयातीत के दोनों ध्रुवों के बीच निरंतर आवाजाही करती है।

कविवर आरसीजी की कविताओं को पढ़ना एक प्रतिकर अनुभव है। उनकी छोटी-छोटी अर्थगर्भित कविताओं की तासीर अलग है और कहने का अंदाज भी। उनके पास सहज मौलिकता है और उनकी कविताओं में भी हमारे बदलते हुए समय के अनुभवों की एक नयी जमीन है। आरसीजी मूलतः समाज और जनता से जुड़े हुए कवि हैं। वे वायंवीय पथगमिता के कवि नहीं हैं और न ही कल्पना कं पंखों पर नभचारी होने में उनका कोई विश्वास है। उनकी कविताओं के पैर जमीन पर हैं और दृष्टि जीवन जगत के विविध आयामों पर टिकी है। इसलिए उसमें पाठकों को सहज भाव से आकर्षित करने की क्षमता है। यहां यह ध्यातव्य है कि आरसीजी की कविता यथास्थिति का बोध कराकर अपने कर्त्तव्य की पूर्णता नहीं मान लेती बल्कि साहस, संकल्प, संधर्ष और विरोध के जागरण-भाव से युगोपरि तथा नव निर्माण का विधान भी रचती है यही उनका काव्य-प्रयोजन भी है। उनकी जीवन यात्रा का यही पाथेय है जो उन्हें जनधर्मी और जीवनधर्मी कवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है ।

प्रगतिवाद से लेकर प्रयोगवाद और नयी कविताओं के विभिन्न काव्यान्दोलनों के काल में रचनारत होते हुए भी इन आंदोलनों से सर्वथा अलग राह पर चलने वाले श्री हरिबल्लभ सिंह 'आरसी' की कविता उस रस्सी की तरह है जिसमें कवि ने हर बिखरे अनुभव को रेशे की तरह समेट लिया है। अतः उनकी कविता को किसी वाद विशेष के फॉर्म में कसकर उसका निहितार्थ निकालना कथमपि उचित नहीं होगा। सीधी एवं सच्ची बात तो यह है कि आरसीजी संस्कारतः मानवतावादी चेतना के उर्जस्वित कवि हैं। 'आत्मवत सर्वभूतेषु' 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' जैसे आर्य वचनों से निःसृत रूपहली ज्योत्स्ना से जन-मन को मांज एक ऐसे समाज को देखने के अभिलाषी हैं जिसमें स्वार्थ, शोषण, आतंक, अत्याचार, भ्रष्टाचार, लूट, हत्या, मिथ्याचरण आदि मानवता के आंचल पर कालिख सदृश लगने वाला अमानवीय तत्वों का नामोनिशान न रहे । इसलिए कवि युचा-वर्ग के शिराओं में उत्तेजना की आग उ-ड़ेलते हुए कहता है :-

'उठो प्रजातंत्र की चुनौतियों को स्वीकार करो
एकजुट हो नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करो
भ्रष्टाचार जग से मिटाओ, देश बचाओ
विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र को मंझधार से निकालो
उठो युवाओ, उठो-उठो ।'

समरस चिंतन के अभाव में सत्ता के गोमुख पर विराजमान व्यक्ति शक्ति के संपूर्ण जल को स्वयं के अभिषेक के लिए संचित और सुरक्षित रखना चाहता है। ऐसी स्थिति में सामान्य मनुष्य का क्या होगा? मानवीयता के लिए समर्पित मूर्धन्य कवि आरसीजी की सबसे बड़ी चिन्ता यही है। यह कैसी विडंबना है कि सत्ता का मुकुट धारण करते ही कोई नेता मानवीय मूल्यों को पददलित और धूलधूसरित करने के लिए कमर कस लेता है। सत्ता के रथ को अमानवीयता के पद पर हांव वाले नेताओं के चारित्रिक

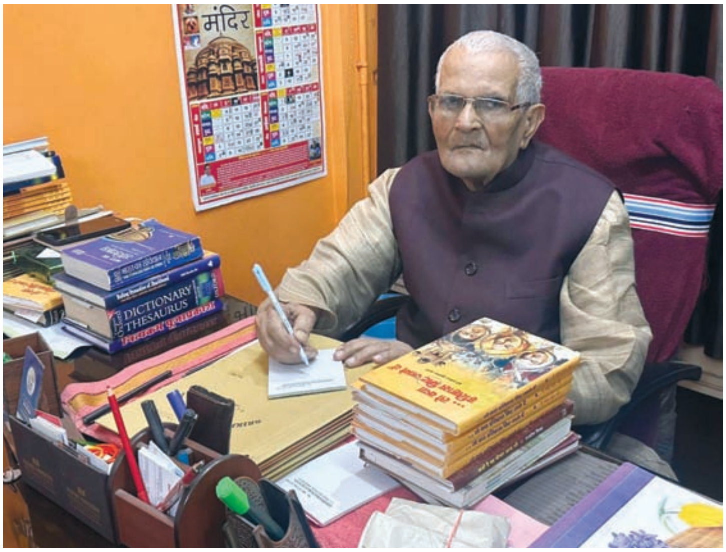

पतन को देखकर कवि के दिमाग में आक्रोश के शोले खदकने लगते है सिंह की तरह दहाड़ते हुए वह इन भ्रष्ट आचरण पर आक्रमण करते हैं :-

‘निष्ठा उठती जाती है सांसद के आचरणों से
विश्वास मिटता जाता है विधि विधानों से
संभव है अपराधी का कब्जा संसद पर होगा
मिट जाएगा संविधान, संसद लोप हो जाएगा
लोकतंत्र में मात्र नेता ही लूटेगा
कर्मचारी अपनी किस्मत पर रोयेगा
असली समाजवाद तभी आयेगा
जब सब मिलकर देश को लूटेगा ।’

राष्ट्र की धमनियों पर दांत गड़ाकर आम जनता का रक्त पीने वाले लूटेरे नेताओं पर आक्रोष की छड़ी बरसाते हुए कवि दो टूक शब्दों में पूछता है :-

‘जवाब दो कल तक हम
आजादी खोजते रहेंगे
भूखे पेट आजादी की
कुबार्नी कब तक देते रहेंगे
शोषण और भ्रष्टाचार के शिकार
कब तक हम होते रहेंगे
शासन की कुर्सी पर कब तक
लुटे बैठे रहेंगे।’

आरसीजी भारतीय संस्कृति के उद्‌गाता कवि और प्रखर प्रवक्ता है। वे शुद्ध भारतीय ढंग के आदमी और रचनाकार हैं। उन्हें अपनी माटी, इतिहास, दर्शन, परंपरा, संस्कृति, भाषा और सभ्यता से सतिशय प्यार है। आज चिंता की बात यह है कि भूमंडलीकरण और बाजारवाद की नकेल में पड़कर भारतवर्ष पश्चिम दिशा से उगने वाले सूरज की ओर अपनी आंखें टिकाए हुए है। अपनी संस्कृति अस्मिता, महान जीवन-मूल्यों, सभ्यता-संस्कार और विचारधारा से आंखें मूंदकर पश्चिम की ओर कृपा पात्र बनने पर आरसीजी को जो पीड़ा होती है उसकी अभिव्यक्ति उनकी कई कविताओं में हैं। उदाहरणस्वरूप अग्रांकित पंक्तियां दृष्टव्य हैं :-

‘भारत की सभ्यता संस्कृति पुकारती
हमला है पश्चिम से आज फिर
देश उसी रंग में आज रंग गया है फिर
शेष नहीं है कोई पहचान आज अपनी ।’

चांदी के खनकते सिक्कों के लिए अपने चरित्र का सौदा नहीं करनेवाली भारतीय नारी आज पाश्चात्य संस्कृति के सरोवर में प्रसन्न मन से नहा कर गौरवान्वित हो रही है। भारतीय नारी के आदर्श और चारित्रिक सौंदर्य की धज्जियां उड़ा कर पाश्चात्य संस्कृति के सांचे में ढली नारियों को देखकर कवि का दर्द छलक पड़ता है :-

‘अब कृष्ण को दौड़ना नहीं पड़ेगा
द्रौपदी की लाज बचाने
वह तो स्वयं फैशन शो में
अर्धनग्न होकर घूमती है
अब चीर हरण कराने वाला
दूर्योधन फैशन शो का प्रहरी है।’

अपने समकालीनों में आरसीजी में गांधी और जयप्रकाश नारायण के प्रति अपार श्रद्धा और आदर का भाव है तो इसलिए कि इनमें भारतीयता अपनी संपूर्ण आभा के साथ विद्यमान रही है। गांधी की आलोक वृष्टि में सर्वाधिक भींगे है आरसीजी, जिसका परिणाम उनकी गांधी पर कविता है ।सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि महनीय मूल्यों से युक्त गांधी-विचार-दर्शन स्वतंत्रता के संघर्ष काल में जितना आभावान था उतना वह आज भले ही न हो, मगर उसकी चमक सदियों तक लोगों का पथ प्रशस्त करती रहेगी। आरसीजी का स्थिर मत है कि आज भी गांधी की विचारधारा देश की भयावह समस्याओं का हल ढूंढने में समर्थ सिद्ध होगी। इसलिए वे गांधी के सपनों को पूरा करने का आह्वान करते हैं :-

‘गांधी गए छोड़ कर अपना
काम अधूरा राम राज्य का
सत्ता भोगी ने राम राज्य को दफन किया है
वही बोलता सत्य-अहिंसा व्रत हमारा
लो पीड़ित-पिछड़ों की सेवा का संकल्प
गांधीवाद का यही है मूलमंत्र
सबको रोटी शिक्षा होगी
तब घर-घर में खुशहाली होगी।’

सारतः आरसीजी के संवेदन संसार में यथार्थ अपने वास्तविक रूप में दृश्यमान है। उसमें सम सामयिकता का स्पंदन है। विसंगतियों और विडंबनाओं का मंथन है। परिवेश की मूल्यहीनता से उपजा पीड़ा-बोध है। संत्रास है, भय है और आशंका एवं आक्रोश है।

आरसीजी शतायु होकर साहित्य और समाज में कीर्तिमान स्थापित करें, यह मेरी एकांत कामना है।

सेमीकंडक्टर उद्योग में कैरियर

▸▸विजय गर्ग
वरिष्ठ स्तंभकार

सेमीकंडक्टर उद्योग आधुनिक वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें चिप्स के डिजाइन, निर्माण और वितरण शामिल हैं, जिसे एकीकृत सर्किट के रूप में भी जाना जाता है

आईसी सेमीकंडक्टर सामग्रियों से बने इलेक्ट्रॉनिक घटक हैं जो इंसुलेटर और कंडक्टरों के बीच विद्युत चालकता प्रदान करते हैं और कंप्यूटर, स्मार्टफोन, कैमरा, स्मार्टफोन, ऑटोमोटिव सिस्टम और औद्योगिक मशीनरी जैसे रोजमर्रा के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, आपने शायद चिप की कमी के बारे में सुना है। चल रही आपूर्ति श्रृंखला वसूली और अमेरिका के लिए धन्यवाद 2022 के चिप्स और विज्ञान अधिनियम, उद्योग पूरे जोरों पर है, संपन्न है, और चिप्स अर्धचालक करियर की मांग करने वाले मेहनती पेशेवरों की आवश्यकता है।

मई 2023 के सेमीकंडक्टर उद्योग संगठन के लेख के अनुसार, वैश्विक सेमीकंडक्टर की बिक्री 2022 में $ 574 बिलियन तक पहुंच गई, जिसमें यू.एस. $ 275 बिलियन के लिए बिक्री लेखांकन। जैसे-जैसे उद्योग पलटाव जारी रखता है, इसे पेशेवरों को चल रही जरूरतों और नई वृद्धि का समर्थन करने की आवश्यकता होगी।

जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में वैश्विक अर्धचालक उद्योग में कई कंपनियां हैं, अन्य देश इस क्षेत्र पर हावी हैं, जिनमें जापान, ताइवान, दक्षिण कोरिया और नीदरलैंड शामिल हैं।

सेमीकंडक्टर उद्योग में करियर यदि आपने अभी इस रोमांचक क्षेत्र में करियर पर विचार करना शुरू किया है, तो यह आपको कुछ कैरियर विशेषज्ञता को समझने में मदद कर सकता है जो आप सही फिट के लिए विचार कर सकते हैं।

यहां कुछ अर्धचालक उद्योग विशेषज्ञता हैं जिन पर आप ध्यान केंद्रित कर सकते हैं:

सिस्टम और एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर विकास सिस्टम एकीकरण और परीक्षण गर्मी और बड़े पैमाने पर स्थानांतरण इमेजिंग और लिथोग्राफी प्रदर्शन इलेक्ट्रानिक्स मेक्ट्रोनिक्स इलेक्ट्रॉन प्रकाशिकी बुनियादी नौकरी कर्तव्यों और समग्र आवश्यकताओं जबकि इस उद्योग में पेशेवरों के लिए कुछ कर्तव्य विशिष्ट करियर से संबंधित हैं, कुछ अतिव्यापी कौशल की भी आवश्यकता है:

सेमीकंडक्टर का उपयोग करके निर्मित उपकरणों को डिजाइन करना, विकसित करना और परीक्षण करना आईसी और अर्धचालक के डिजाइन और विनिर्माण प्रक्रिया का अनुकूलन चिप्स और अर्धचालक की उपज, विश्वसनीयता और प्रदर्शन में सुधार एकीकृत सर्किट डिजाइन और विकसित करना अर्धचालक उपकरणों के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों का संचालन और रखरखाव अर्धचालक उपकरणों के शिपमेंट के लिए उचित पैकेजिंग सुनिश्चित करना विपणन अर्धचालक उपकरण चिप्स और अर्धचालक का उपयोग करने के नए तरीके खोजने और विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) का संचालन करना रिलीज और शिपमेंट से पहले अर्धचालक उपकरणों का परीक्षण करके गुणवत्ता नियंत्रण और आश्वासन प्रदान करना आप अपनी भूमिका में उद्योग का समर्थन कैसे करेंगे? जैसा कि आप देख सकते हैं, ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आप उद्योग का समर्थन कर सकते हैं। यदि आप विपणन जैसे क्षेत्र का पीछा करते हैं तो आपको सबसे तकनीकी, विज्ञान-आधारित कौशल की आवश्यकता नहीं हो सकती है। हालांकि, आपको अभी भी उन उत्पादों की दृढ़ समझ रखने की आवश्यकता है जिन्हें आप विपणन करेंगे।

लेकिन आपका चुना गया कोई भी रास्ता विकास बढ़ाने के लिए निर्धारित इस आकर्षक उद्योग का समर्थन करने में मदद कर सकता है।

सेमीकंडक्टर इंजीनियर एक अर्धचालक इंजीनियर के रूप में, आप अर्धचालक उपकरणों, एकीकृत सर्किट (आईसी, या माइक्रोचिप्स), सॉफ्टवेयर, मॉड्यूल और इंटरफेस और संरचनाओं को डिजाइन, विकसित और परीक्षण करने में मदद करेंगे। आप सर्किट डिजाइन, डिवाइस इंजीनियरिंग, या प्रक्रिया इंजीनियरिंग जैसे अध्ययनों में विशेषज्ञ चुन सकते हैं।

प्रोसेस इंजीनियर एक प्रोसेस इंजीनियर सेमीकंडक्टर उपकरणों का

उत्पादन करने वाली विनिर्माण प्रक्रियाओं के विकास और अनुकूलन पर केंद्रित है। आपके काम में उपयोग किए जाने वाले उपकरण, प्रक्रिया डिजाइन और अनुकूलन जैसे कारकों को समायोजित करके प्रदर्शन, उपज और विश्वसनीयता में सुधार करना शामिल होगा।

सत्यापन अभियंता एक सत्यापन इंजीनियर यह सुनिश्चित करता है कि उत्पाद बाजार में जारी होने से पहले ही कार्य करें। वे यह सत्यापित करने के लिए आईसी के मॉक संस्करण बनाते हैं और परीक्षण करते हैं कि वे प्रदर्शन विनिदेर्शों और गुणवत्ता मानकों को पूरा करते हैं।

अर्धचालक विनिर्माण तकनीशियन इस कैरियर में, आप अर्धचालक उपकरणों के उत्पादन और असेंबली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, उपकरण का संचालन और रखरखाव, उत्पादन प्रक्रियाओं की निगरानी और गुणवत्ता नियंत्रण जांच का संचालन करेंगे।

एकीकृत सर्किट डिजाइनर यह अत्यधिक तकनीकी कैरियर विकल्प आईसी पर केंद्रित है, और आप सर्किट फ्रेमवर्क डिजाइन करने, चिप प्रदर्शन का अनुकूलन करने और चिप प्लेसमेंट असाइन करने के लिए वीएचडीएल या वेरिलॉग सहित टूल और प्रोग्रामिंग भाषाओं का उपयोग करेंगे।

इस कैरियर के लिए वैकल्पिक नौकरी के शीर्षक में शामिल हैंः

हार्डवेयर इंजीनियर अरक्ठ डिजाइन इंजीनियर पीसीबी लेआउट इंजीनियर सेमीकंडक्टर पैकेजिंग इंजीनियर एक अर्धचालक पैकेजिंग इंजीनियर आईसीएस की भौतिक और विद्युत पैकेजिंग का समर्थन करने के लिए डिजाइन और विकास गतिविधियों को अंजाम देता है, विचार से सिमुलेशन तक अंतिम पैकेजिंग निर्णय। आप चिप्स की उचित सुरक्षा, इंटरकनेक्शन और थर्मल प्रबंधन सुनिश्चित करेंगे।

फील्ड सर्विस इंजीनियर अर्धचालक उद्योग में एक फील्ड सर्विस इंजीनियर (ऋ्रए) एक तकनीशियन है जो अर्धचालक प्रसंस्करण उपकरणों की स्थापना, रखरखाव और मरम्मत के लिए जिम्मेदार है। इस भूमिका में, आप नए उपकरण स्थापित करेंगे, मौजूदा उपकरणों का निवारण और मरम्मत करेंगे, ग्राहक सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, और बहुत कुछ। आपको ग्राहकों और अन्य इंजीनियरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में भी सक्षम होना चाहिए।

टेस्ट इंजीनियर यह जानना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक अर्धचालक उपकरण जनता को बिक्री के लिए जारी होने से पहले कितनी अच्छी तरह काम करता है। एक परीक्षण इंजीनियर के रूप में, आप उपकरणों की कार्यक्षमता और प्रदर्शन को मापने, परीक्षण करने, परिणामों का विश्लेषण करने, समस्या निवारण मुद्दों और संतुष्ट होने तक पूरी प्रक्रिया को दोहराने के लिए परीक्षण विधियों को विकसित करने और लागू करने के लिए जिम्मेदार होंगे।

बिक्री और विपणन जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बिक्री और विपणन उपभोक्ताओं के लिए हर किसी की कड़ी मेहनत को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण घटक हैं। इस भूमिका में, आप निर्मित अर्धचालक उपकरणों को बढ़ावा देंगे और बेचेंगे, बाजार के अवसरों की पहचान करेंगे, ग्राहक संबंधों का निर्माण करेंगे, व्यावसायिक रणनीतियों का विकास करेंगे, और राजस्व वृद्धि सुनिश्चित करेंगे।

एक मेज के आसपास सहयोग करने वाले लोग

अनुसंधान और विकास (अनुसंधान एवं विकास) अनुसंधान एवं विकास में, आप नई अर्धचालक प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए नई तकनीकों, सामग्रियों और डिवाइस फ्रेमवर्क का पता लगाएंगे। इस कैरियर में, आप अपने संगठन के लिए नए विचारों की ओर आपका और आपके व्यवसाय का मार्गदर्शन करने के लिए रुझानों, नवाचारों और भविष्य की तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

अनुप्रयोग अभियंता एक एप्लिकेशन इंजीनियर के रूप में, आप अपने संगठन के अर्धचालक उपकरणों के उपयोगकर्ता अनुभव (यूएक्स) में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए ग्राहकों के साथ मिलकर काम करेंगे। आप अपनी खुद की अंतर्दृष्टि और सहानुभूति का उपयोग करेंगे क्योंकि आप अपने उत्पादों के साथ ग्राहकों की जरूरतों, इच्छाओं और निराशाओं को सुनते हैं। आप तकनीकी सहायता प्रदान करके भी उनकी मदद कर सकते हैं जो उन्हें अपने जीवन के सापेक्ष विभिन्न अनुप्रयोगों में अर्धचालक उत्पादों को एकीकृत करने की अनुमति देगा।

इस भूमिका में अपने काम के साथ, आप मौजूदा उत्पादों में सुधार और विस्तार करने में मदद कर सकते हैं।

आपूर्ति श्रृंखला और संचालन इंजीनियर यह विशेष काम शायद पिछले कुछ वर्षों से पेशेवरों के लिए असाधारण रूप से चुनौतीपूर्ण रहा है, लेकिन चूंकि उद्योग में चीजें दिख रही हैं, इसलिए दबाव शायद कम हो गया है।

एक आपूर्ति श्रृंखला और संचालन इंजीनियर के रूप में, आप अर्धचालक उत्पादों की योजना, सोर्सिंग, विनिर्माण, वितरण और वितरण की देखरेख करने के लिए काम करेंगे। इस नौकरी में प्राथमिक लक्ष्य दक्षता के अनुकूलन, लागत को कम करने और रसद के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

गुणवत्ता और विश्वसनीयता इंजीनियर एक गुणवत्ता और विश्वसनीयता इंजीनियर के रूप में, आप अर्धचालक उत्पादों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता आश्वासन प्रदान करेंगे। आप परीक्षण प्रक्रियाओं को विकसित और लागू करेंगे।

अर्धचालकों में व्यवसायों के लिए वेतन ऊपर सूचीबद्ध करियर इस उद्योग में आपके पास मौजूद कई विकल्पों में से कुछ ही हैं। ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स (बीएलएस) के अनुसार, वेतन विकल्पों की विस्तृत श्रृंखला को दशार्ता है, मुआवजा प्रदान करता है जो लगभग $ 52,000 से शुरू होता है और लगभग $ 177,000 तक जाता है।

उद्योग के भीतर कई कैरियर क्षेत्रों का अन्वेषण करें सेमीकंडक्टर उद्योग में आपके लिए बहुत सारे रोमांचक कैरियर के अवसर हैं।

(लेखक सेवानिवृत्त प्राचार्य, शैक्षिक स्तंभकार हैं)

बढ़ती गर्मी से होगी फसलों की विविधता कम

मुकुल व्यास
वरिष्ठ स्तंभकार

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया में फसलों की विविधता को कम कर सकती है। एक नए अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि यदि वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है, तो विशाल क्षेत्र फसल विविधता खो सकते हैं, जिससे विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम बढ़ सकता है। शोधकताओं का अनुमान है कि उच्च तापमान के कारण वैश्विक खाद्य उत्पादन का लगभग एक तिहाई हिस्सा खतरे में पड़ सकता है। फिनलैंड के आल्टो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने नेचर फूड में प्रकाशित शोध में बताया कि तापमान,वर्षा पैटर्न और समग्र शुष्कता में परिवर्तन किस तरह दुनिया भर में 30 प्रमुख खाद्य फसलों के विकास को प्रभावित करेंगे।

शोध के परिणाम बताते हैं कि निम्न अक्षांश क्षेत्र, खास कर उष्णकटिबंधीय देशों के बड़े हिस्से सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा, इन क्षेत्रों में कृषि के लिए बहुत अधिक भूमि अनुपयुक्त होती जाएगी। साथ ही उगाई जा सकने वाली फसलों की विविधता में भी भारी गिरावट आएगी। अध्ययन का नेतृत्व करने वाली शोधकर्ता सारा हेइकोनेन ने कहा कि विविधता के नुकसान का मतलब है कि कुछ क्षेत्रों में खेती के लिए उपलब्ध खाद्य फसलों के दायरे में काफी कमी आ सकती है। इससे खाद्य सुरक्षा कम होगी और पर्याप्त कैलोरी और प्रोटीन प्राप्त करना अधिक कठिन हो जाएगा।

इन बदलती परिस्थितियों से दुनिया के मौजूदा खाद्य फसल उत्पादन का आधा हिस्सा प्रभावित हो सकता है। चावल, मक्का, गेहूं, आलू और सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों को उपयुक्त कृषि भूमि में भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे उन लोगों के लिए चुनौतियां बढ़ सकती हैं जो दैनिक पोषण के लिए इन फसलों पर निर्भर हैं। कई अन्य फसलें भी असुरक्षित हैं जिनमें अनाज और दालों के अलावा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगने वाली जड़ वाली फसलें शामिल हैं। जिमीकंद जैसी जड़ वाली फसलें कम आय वाले क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के दक्षिण में स्थित देश सबसे अधिक प्रभावित होंगे।

यदि ग्लोबल वार्मिंग 3 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाती है तो इन देशों में वर्तमान उत्पादन का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खतरे में पड़ जाएगा। वैश्विक तापमान का असर सब जगह एक जैसा नहीं होगा। नया अध्ययन निम्न अक्षांश और मध्य से उच्च अक्षांश क्षेत्रों (भूमध्य रेखा और ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच में गर्म और ठंडी जलवायु वाले क्षेत्र) के बीच एक स्पष्ट अंतर को दशार्ता है। भूमध्य रेखा के नजदीकी देशों को जहां फसल की भारी क्षति और विविधता में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है, वही ठंडी जलवायु वाले देश अपने समग्र उत्पादन स्तर को बनाए रख सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने यह भी अनुमान लगाया है कि मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्र गर्म होती दुनिया में फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती

करने में सक्षम हो सकते हैं। अध्ययन के वरिष्ठ लेखक मैटी कुम्मू का कहना है कि जलवायु में अनुकूल बदलाव अधिक पैदावार की गारंटी नहीं देता है। जलवायु परिवर्तन से कुछ स्थानों पर उत्पादन बढ़ सकता है लेकिन वार्मिंग नए कीट पैदा कर सकती है और चरम मौसम की घटनाएं ला सकती है।

खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे देश, खास कर अफ्रीकी देश पहले से ही कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं क्योंकि बढ़ते तापमान अन्य सामाजिक और आर्थिक दबावों के साथ मेल खाते हैं। कई कम अक्षांश वाले क्षेत्रों में, खास तौर पर अफ्रीका में, दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पैदावार कम है। ये देश उर्वरकों और सिंचाई तक अपनी पहुंच बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन और भंडारण श्रृंखला के माध्यम से खाद्य नुकसान को कम करके वे अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि वैश्विक गर्मी इन अनुमानों में बहुत अधिक अनिश्चितता जोड़ेगी और संभवतः और भी अधिक कार्रवाई की आवश्यकता होगी, जैसे कि अनुरूप फसल का चयन करना और प्रजनन के नए तरीके अपनाना। मॉडल के जरिए अध्ययन और विश्लेषण करना आसान लगता है लेकिन यह समझना सबसे कठिन है कि बदलाव कैसे किए जाएं।

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि कम अक्षांश वाले देशों में नीति-निमार्ताओं को कृषि के इंफ्रास्ट्रक्चर में अंतर को पाटने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए। साथ ही अधिक प्रतिकूल बढ़ती परिस्थितियों के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसे प्रयासों के बिना स्थानीय समुदायों को, जो पहले से ही खाद्य कमी के खतरे में हैं, आने वाले वर्षों में और भी अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। दुनिया की खाद्य फसलों को सुरक्षित करना मध्य और उच्च अक्षांश वाले क्षेत्रों के लिए किसानों और नीति निर्धारकों को लचीला बने रहना होगा। गर्मी नई फसलों के लिए द्वार खोल सकती है, लेकिन वैश्विक मांग और बाजार की ताकतों में बदलाव लोगों द्वारा खेती के लिए चुने जाने वाले तरीकों को और भी बदल सकते हैं। नई स्थितियों से निपटने के लिए किसानों द्वारा जो तरीके अपनाए जा सकते हैं, उनमें विभिन्न फसल किस्मों के साथ प्रयोग करना, रोपण के मौसमों को समायोजित करना तथा गर्म मौसम और कीटों से निपटने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश करना शामिल है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि अगर हम भविष्य में अपनी खाद्य प्रणाली को सुरक्षित करना चाहते हैं, तो हमें जलवायु परिवर्तन को कम करना पड़ेगा और इसके प्रभावों के अनुकूल होना पड़ेगा। भले ही सबसे बड़े परिवर्तन भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में हों, हम सभी वैश्विक खाद्य प्रणाली के माध्यम से इन प्रभावों को महसूस करेंगे। अतः हमें इन समस्याओं को दूर करने के लिए मिलकर काम करना पड़ेगा। इस अंतसंबंध का मतलब है कि दुनिया के एक हिस्से में जलवायु द्वारा संचालित फसल विफलताओं का असर समस्त सप्लाई चेन पर पड़ेगा, जिससे हर जगह खाद्य कीमतों और उपलब्धता पर असर पड़ सकता है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि जलवायु परिवर्तन को कम करना आवश्यक है, लेकिन एक गर्म और अधिक अप्रत्याशित ग्रह पर उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों से निपटने के लिए बेहतर योजना बनाना भी उतना ही जरूरी है।

(लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं।)

सर्वोत्तम अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान

सेंत पॉल सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल बहदरपुर बेगूसराय के परिसर में छात्र सम्मान सह पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। सीबीएसई की आयोजित दसवीं की बोर्ड परीक्षा में सर्वोत्तम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा शिवांगी एवं छात्र हर्ष कुमार को पुरस्कृत किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय के प्राचार्य महेश्वर प्रसाद गोयल ने कहा कि सीबीएसई की आयोजित दसवीं की परीक्षा में विद्यालय की छात्रा शिवांगी ने 95% अंक लाकर प्रथम स्थान हासिल किया। और हर्ष कुमार ने 94.6% अंक लाकर दूसरे स्थान को गौरवान्वित किया।

प्राचार्य गोयल ने कहा कि दोनों मेधावी स्टूडेंट्स को संस्था के निदेशक अमिताभ कुमार की ओर से क्रमशः 10,000 एवं 5,000 की राशि का चेक प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय परिवार के शिक्षक, शिक्षिका, शिक्षा प्रेमी एवं अभिभावक मौजूद थे। संस्था के निदेशक अमिताभ कुमार ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेधावी छात्रों के उत्साह वर्धन के लिए प्रोत्साहन की राशि दी जाती रही है। उन्होंने दोनों छात्रों को अगली कक्षा में निशुल्क नामांकन एवं निशुल्क पढ़ाई की सुविधा देने की घोषणा की। उन्होंने इस परीक्षा में सफल हुए सभी स्टूडेंट्स के बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं दी।

ब्यूरो रिपोर्ट दूसरा मत

दूसरा मत

हार्दिक शुभकामनाएं

पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

चेरिया बरियारपुर से डॉ. प्रवीण कुमार की तैयारी

बेगूसराय जिले की चेरिया बरियारपुर विधानसभा सीट पर जदयू खेमा से वरिष्ठ जदयू नेता व जदयू प्रदेश राजनीतिक सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. प्रवीण कुमार की तैयारी शुरू हो चुकी है। डॉ. प्रवीण कुमार पेशे से चिकित्सक हैं। और शहर मुख्यालय स्थित विष्णु ट्रामा सेंटर के निदेशक हैं। विगत कई वर्षो से चेरिया बरियारपुर विधानसभा क्षेत्र में उनकी काफी दिलचस्प और सक्रियता रही है। जदयू के जिला संगठन की मजबूती के लिए इनका काफी योगदान रहा है। क्षेत्र की गतिविधि में सक्रियता को देखते हुए क्षेत्रीय लोगों ने डॉ. प्रवीण कुमार को जदयू का प्रत्याशी बनाए जाने की आला कमान से गुहार लगाई है। हालांकि यह सीट पिछले विधानसभा चुनाव में जदयू के खाते से फिसल कर राजद के कोट में चली गई थी। और राजवंशी महतो यहां से राजद से विधायक बनने में कामयाब रहे। जदयू अब चेरिया बरियारपुर सीट के संघर्ष के लिए किसी तेज तर्रार और जुझारू प्रत्याशी की खोज में लगी हुई है। संभावित प्रत्याशियों की सूची में इनका भी दावा माना जा रहा है।

सामाजिक कार्यकर्ता को दी गईश्रद्धांजलि

डंडारी प्रखंड के कटरमाला गांव निवासी 84 वर्षीय सामाजिक कार्यकर्ता रामचंद्र सिंह के देहावसान पर एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस सभा में बखरी विधायक सूर्यकांत पासवान वरीय अधिवक्ता अरुण कुमार राय जिला परिषद अध्यक्ष सुरेंद्र पासवान डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह शिक्षा विद चंदन कुमार सिंह जनवंत कुमार मलिक राजीव कुमार सिंह रमेश ठाकुर सत्य प्रकाश वरिष्ठ भाजपा नेता रमाशंकर पासवान पत्रकार संघ के अध्यक्ष विनोद कर्ण वीपीएस कंप्यूटर के निदेशक बी एन ठाकुर वरिष्ठ पत्रकार एसएन सुमन डंडारी प्रखंड प्रमुख तनवीर अख्तर ग्रामीण समुदाय से प्रणव कुमार रुपेश कुमार अमरनाथ सिंह योगेंद्र सिंह जटाशंकर सिंह बाबू साहब सिंह रामाश्रय सिंह सुभाष सिंह शिक्षक संजय कुमार शिक्षक रामविलास सिंह सहित दर्जनों अन्य लोगों ने अपनी उपस्थिति प्रदान करते हुए स्वर्गीय सिंह के प्रति श्रद्धा का फूल समर्पित किया।

अंत में स्वर्गीय सिंह के पुत्र शिक्षाविद अनिल कुमार एवं सुनील कुमार ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया।

ग्लोकल हॉस्पिटल बेगूसराय और कर्मचारी राज्य बीमा निगम के बीच करार

ग्लोकल हॉस्पिटल, बेगूसराय ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम के साथ एक महत्वपूर्ण साझा अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इस अनुबंध पर कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक निरंजन कुमार ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत अब कर्मचारी राज्य बीमा निगम से जुड़े सभी लाभार्थी ग्लोकल हॉस्पिटल में मुफ्त चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। इस मौके पर बिजय कुमार केशरी (राज्य चिकित्सा पदाधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम), राकेश रंजन तिवारी (वित्त पदाधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम), ग्लोकल हॉस्पीटल के माधव भारती, कुंदन कुमार मौजूद थे।

भारतीय गैर न्यायिक INDIA NON JUDICIAL

एक हजार रुपये ONE THOUSAND RUPEES

रु.1000 Rs.1000

INDIA

AZ 695913

TREASURY OFFICE, BEGUSARAI

15 MAY 2025

Memorandum of Understanding

This agreement is made on the "30-05-2025" (This thirtieth day of May, two thousand twenty-five) between the Dean/MS/RD having its Office at Regional Office, Panchdeep Bhawan, J. L. Nehru Marg, Patna - 800001. (hereinafter called ESIC /ESIS, which expression shall, unless repugnant to the context or meaning thereof, be deemed to mean and include its successors and assigns) Of the First party.

AND

GHSPL Begusarai Healthcare LLP (Glocal Hospital) Begusarai, having its office and unit namely, GHSPL Begusarai Healthcare LLP (Glocal Hospital) Sushil Nagar Chowk NH 31 Begusarai 851134 executing the agreement through Kanhaiya Kumar, Business Head of the centre, authorized vide Resolution/Authority letter dated 17-05-2025 issued by CEO, GHSPL Begusarai Healthcare LLP (Glocal Hospital) , in favour of Kanhaiya Kumar, Business Head of the centre in this behalf thereinafter called the second party/service provider.

MS/Dean/RD/DIMS proposes to provide tertiary health care through GHSPL Begusarai Healthcare LLP (Glocal Hospital) Begusarai, empanelled HCO's to the entitled ESIC beneficiaries including staff Of ESIC in the State Bihar on the cashless basis.

And whereas GHSPL Begusarai Healthcare LLP (Glocal Hospital), Begusarai has Offered to provide the following facilities to the ESI beneficiaries including staff in the State Bihar.

S.No.	Super Speciality Services/ Secondary Services
	Neurology, Neuro-Surgery, Nephrology and Dialysis, Urology, Medicine, Surgery, Obs/Gynae, Orthopaedics, Opthalmology, Pathology

1

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस साझेदारी से क्षेत्र के हजारों ईएसआई लाभार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ होंगी। विज्ञप्ति में उल्लेख किया गया है कि ग्लोकल हॉस्पिटल बेगूसराय ने हमेशा गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता दिखाई है। और यह अनुबंध उसी दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है।

ग्लोकल हॉस्पिटल प्रबंधन के कन्हैया कुमार ने इस सहयोग को क्षेत्र के लिए लाभकारी बताते हुए कहा कि अस्पताल आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के साथ ईएसआईसी लाभार्थियों की सेवा के लिए पूरी तरह से तैयार है।

ब्यूरो रिपोर्ट दूसरा मत

दूसरा मत

पढ़ें और पढ़ाएं, और पढ़ाएं

एक शुभचिंतक, दिल्ली

पूर्व विधायक बोगो सिंह की राजनीति पर कयास जारी

एस आर आज़मी

मटिहानी विधानसभा क्षेत्र की राजनीति के एक प्रमुख स्तंभ माने जाने वाले पूर्व विधायक नरेंद्र कुमार सिंह उर्फ बोगो सिंह संभावित विधानसभा चुनाव में कौन सी करवट लेंगे, यह क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। बोगो सिंह मटिहानी क्षेत्र से कुल चार बार विधायक रह चुके हैं। एक बार निर्दलीय विजेता बन चुके हैं। उन्होंने तीन बार जदयू की टिकट पर जीत दर्ज की। वर्ष 2020 के विधानसभा चुनाव में जदयू ने बोगो सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया। लेकिन वे त्रिकोणात्मक संघर्ष में पराजित हो गए।

लोजपा प्रत्याशी राजकुमार सिंह ने यह चुनाव जीता। आगे चलकर विधायक राजकुमार सिंह ने लोजपा से जदयू में शामिल हो गए। चुनाव हारने के बाद पूर्व विधायक नरेंद्र कुमार सिंह का धीरे-धीरे जदयू से मोहभंग होने लगा। लेकिन बोगो सिंह ने अपने गांव केशावे से ही मटिहानी क्षेत्र की जनता की सुधि ली। और आपदा-विपदा और सामाजिक सरोकार के संपर्क कार्यों में अपनी रुचि दिखाते हुए इलाके का दौरा भी जारी रखा।

एक दिलचस्प वाकया 2024 लोकसभा का है। बोगो सिंह ने जदयू समर्थित भाजपा प्रत्याशी गिरिराज सिंह की जगह महागठबंधन समर्थित

भाकपा प्रत्याशी अवधेश राय को समर्थन दे दिया। और चुनावी मैदान में भी प्रचार के लिए उतर गए। यह देखकर जदयू खेमा में हड़कंप मच गया। और फिर जदयू के लोग बोगो सिंह से किनारा करने लगे।

वर्ष 2025 के आने के पूर्व ही पूर्व विधायक बोगो सिंह ने अपनी जोरदार धमक से लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। उन्होंने कार्यकर्ता मिलन समारोह, नव वर्ष मिलन समारोह, मकर संक्रांति मिलन समारोह, और होली मिलन के जरिए मटिहानी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को जुटाकर सबको हक्का-बक्का कर दिया। इन बैठकों में पूर्व विधायक ने चुनाव लड़ने का ऐलान भी कर दिया। लेकिन दल को लेकर अपना पत्ता नहीं खोला। उन्होंने सियासी शऊर दिखाते हुए इसके लिए 30 जून की मियाद तय कर दी।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बोगो सिंह ने कहा कि 1 जुलाई, 2025 से पूरे क्षेत्र में चुनाव का बिगूल फूंका जाएगा। और कार्यकर्ताओं के जरिए बैतरनी पार होगी।

क्षेत्र के चौक चौराहों पर यह चर्चा है कि आखिर किस दल से बोगो सिंह चुनावी मैदान में उतरेंगे? राजनीतिक पंडितों का मानना है कि बोगो सिंह के लिए विकल्प के कई रास्ते खुले हुए हैं। कुछ लोग यहां तक कहते हैं कि बोगो सिंह की दो बार राजद के वरिष्ठ नेता तेजस्वी यादव से मुलाकात हो चुकी है। मुमकिन है कि राजद अपने खाते से बोगो सिंह को उम्मीदवार बनाए। लेकिन मार्क्सवादी पार्टी का पेंच फंसा है। बीते विधानसभा चुनाव में महागठबंधन प्रत्याशी राजेंद्र सिंह को भी सम्मानजनक वोट प्राप्त हुआ था। और वे भी मामूली अंतर से ही चुनाव हारे थे। ऐसी परिस्थिति में सीपीएम भी मजबूती से अपना दावा ठोकेगी। और अगर ऐसा ही होता है, तो फिर राजद के लिए यह सीट परेशानी का सबब तो बनेगी ही।

बहरहाल कुछ लोगों का कहना है कि पूर्व विधायक बोगो सिंह प्रशांत किशोर की नवगठित पार्टी जन सुराज के भी प्रत्याशी हो सकते हैं। इसकी वजह ये है कि जन सुराज पार्टी के जिला अध्यक्ष डॉ रजनीश कुमार का गांव भी केशावे पड़ता है। और पूर्व विधायक से बेहतर तालमेल पहले से बना हुआ है।

क्षेत्र में चर्चा तो यह भी है कि पूर्व विधायक बोगो सिंह के लिए राजनीतिक परिस्थितियां अनुकूल नहीं हुई तो फिर निर्दलीय चुनाव लड़कर अपना इतिहास दोहराएंगे।

मालूम हो कि पहली बार विधायक बनने के पूर्व बोगो सिंह ने जिला परिषद का चुनाव जीता था। चुनाव लड़ने का सलीका और तरीका उन्हें पहले से मालूम है। कहा जाता है कि बोगो सिंह ने अभी से ही कार्यकर्ताओं की एक बड़ी फौज तैयार कर ली है। मटिहानी क्षेत्र को चार हिस्सों में बांटकर उन्होंने खुद से अभियान का श्री गणेश कर दिया है। बोगो सिंह के इस मैराथन दौड़ को लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों में हलचल तेज हो गई है। भाजपा, जदयू, लोजपा, राजद, सीपीआई, सीपीएम और जन सुराज जैसे दलों और खेमा में उथल-पुथल शुरू हो चुकी है।

अंक अव्वल पर जीवन की परीक्षा में असफल?

विजय गर्ग

यह वाक्य सुनने में भले ही कठोर लगे, लेकिन हमारे समय की कड़वी सच्चाई को पूरी तरह उजागर करता है। भारत के शिक्षा बोर्ड सीबीएसई, आईसीएसई और राज्य बोर्ड हर वर्ष शानदार परीक्षा परिणामों की घोषणा करते हैं। बच्चों के अंक 100 प्रतिशत आने लगे हैं। शहर, जिला और राज्य स्तर पर टॉप करने वाले छात्रों की तस्वीरें अखबारों और सोशल मीडिया पर छपती हैं। स्कूल और कोचिंग सेंटर बड़े-बड़े बैनर लगाकर दावा करते हैं- हमारे यहां से टॉपर निकले हैं।

बाहरी दुनिया को देखकर लगता है। - देश में एक होनहार पीढ़ी तैयार हो रही है। लेकिन जब हम शिक्षा की आंतरिक परतों को टटोलते हैं, तो मन में यह सवाल गूंजने लगता है - क्या हम बच्चों को इंसान बना रहे हैं या सिर्फ अंक लाने की मशीन?

अंक किसके? श्रेय किसे?

एक ओर कोचिंग संस्थान और ट्यूशन सेंटर बच्चों की सफलता का श्रेय लेते हैं। वे कहते हैं, हमारी गाइडेंस से टॉपर बना। दूसरी ओर स्कूल प्राचार्य और प्रबंधन कहते हैं, हमारे शिक्षक और पाठ्यक्रम की बदौलत यह परिणाम आया। लेकिन जब उन्हीं बच्चों से बात करें, तो वे कहते हैं, मैंने किसी ट्यूशन की मदद नहीं ली, ये मेरी मेहनत है। यह विरोधाभास कुछ और नहीं, बल्कि एक दिखावटी व्यवस्था की उपज है, जिसमें सच को छुपाना ही सामान्य हो गया है।

शिक्षा का मकसद- समझ या नंबर ?

हमारे यहां परीक्षा का मतलब अब रट्टा मारो और अंक लाओ बन चुका है। सोचने समझने की जगह शॉर्टकट्स और गाइड्स ने ले ली है।

एक बच्चा जो 99 प्रतिशत लाता है, वह जरूरी नहीं कि जीवन की समस्याओं से जूझने का हुनर भी जानता हो।

उदाहरणः एक बार दिल्ली की एक छात्रा ने 96 प्रतिशत अंक लाने के बाद आत्महत्या कर ली, क्योंकि उसे लगा वह अपने माता-पिता की उम्मीदों पर खरा नहीं उतरी। बिहार में एक छात्र को जब 100 में 100 अंक मिले, तो टीवी पर पूछे गए सामान्य ज्ञान के सवाल का जवाब तक नहीं आया। यह आंकड़े हमें चौंकाते हैं कि शायद हम गलत दिशा में जा रहे हैं।

टॉपर संस्कृति बनाम इंसानी मूल्य

बच्चे अब दूसरों को हराने के लिए पढ़ते हैं, खुद को बेहतर बनाने के लिए नहीं। टॉपर बनने की होड़ में मित्रता, सहृदयता, खेल, संगीत, आत्मचिंतन - सब कुछ पीछे छूट गया है। माता-पिता बच्चों की तुलना पड़ोसी के बेटे-बेटी से करते हैं- देखो वो 98 प्रतिशत लाया है, तुम क्यों नहीं ? इस तुलना ने बच्चों की आत्मा से सीखने की सहजता को छीन लिया है।

और क्या खो रहे हैं हम ?

मानसिक स्वास्थ्यः डिप्रेशन, एंग्जायटी, आत्महत्या की घटनाएं दिनोंदिन बढ़ रही हैं। जीवन कौशलः 12वीं में 99त्र लाने वाला छात्र, कॉलेज में आत्मनिर्भर होना नहीं सीख पाता।

आत्मविश्वासः एक परीक्षा में कम अंक आने पर बच्चा खुद को असफल मान लेता है।

समाधान क्या है ?

अंकों से अधिक कौशल पर ध्यानः कक्षा में बच्चों की रचनात्मकता, तर्कशक्ति, नेतृत्व और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को स्थान मिले।

मूल्य आधारित शिक्षाः ईमानदारी, सहयोग, सहिष्णुता, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसी बातों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

कोचिंग कल्चर पर पुनर्विचारः स्कूलों को इतना सक्षम बनाना होगा कि बच्चों को अलग से ट्यूशन की आवश्यकता ही न हो। माता-पिता की भूमिकाः अपेक्षाओं से अधिक समझ, प्यार और संवाद जरूरी है।

अंत में एक सवालः क्या हम उस समाज की ओर बढ़ रहे हैं जहां 99 प्रतिशत अंक लाने वाला बच्चा भी खुद से पूछे क्या मैं खुश हूं? अगर उत्तर नहीं है, तो हमें अपनी पूरी शिक्षा प्रणाली पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है। हमें इंसान बनाना है, न कि सिर्फ टॉपर ।

▸▸ प्रभुनाथ शुक्ल
वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार

'हॉर्ट लैम्प' लिखिए भले छोटा लिखिए

साहित्य सिर्फ कोरी कल्पना या फंतासी नहीं। साहित्य जीवन का यथार्थ है और हर स्वांस में रचा बसा है। कन्नड़ लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता, अधिवक्ता बानू मुश्ताक की अंग्रेजी में अनुदित कृति हॉर्ट लैंम्प को बुकर पुरस्कार से नवाजा गया है। यह भारत की भाषायी साहित्य के लिए यह बेहद गर्व और गौरव का विषय है। इससे यह साबित होता है कि लेखन किसी धर्म, भाषा, जाति और सीमा में बधा नहीं है। आम तौर पर सर्वहारा वर्ग की पीड़ा एक जैसी होती हैं, उनकी जाति या धर्म कुछ भी हो। यह पुरस्कार भारतीय भाषाओं के लिए एक संजीवनी है। बुकर पुरस्कार भाषा के नाम पर लड़ने वाले एक सभ्य समाज के लिए साफ संदेश है। अगर भाषा का विभेद होता तो दीपा भस्थी की तरफ से कन्नड़ से अनुदित बानू मुश्ताक की सिर्फ बारह लघुकथाओं के संकलन हॉर्ट लैम्प को बुकर पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया जाता। भाषा और साहित्य सीमा से बहुत दूर है। अब तक यह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार छह भारतीय लेखकों को मिल चुका है। इसके लिए बानू मुश्ताक के साथ दीपा भी बधाई की पात्र हैं क्योंकि यह उनकी पहली अनुदित कृति है, जिसे यह सम्मान मिला है।

बानू मुश्ताक दक्षिण भारतीय लेखिका हैं। बानू मूलरुप से कन्नड़ भाषा में अपना लेखन करती हैं। बानू को जो बुकर पुरस्कार मिला है वह कन्नड़ में लिखी उनकी लघुकथा संग्रह से चुनी कुछ लघुकथाओं के अंग्रेजी अनुवाद पर दिया गया है। उन्होंने कुल छह लघुकथा संग्रह, एक उपन्यास, एक निबंध और एक कविता संग्रह लिखा है। उनकी रचनाओं का अनुवाद हिंदी, तमिल, मलयालम और उर्दू में किया गया है। उन्हें इसके अलावा और भी साहित्य पुरस्कार मिले हैं। साहित्य में सबसे अहम सवाल है कि आप कितना लिख रहे हैं यह मायने नहीं रखता है। वजूद इस बात का है कि आप क्या लिख रहे हैं। लिखा तो बहुत कुछ जा रहा है या बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन सबको बुकर नहीं मिला। बुकर को ध्यान में रखकर लिखना भी संभव नहीं है क्योंकि साहित्य कोई तकनीक नहीं ,एक जीवंत कला है जो बगैर जीवन के जीवंत नहीं होती। बानू लंकेश पत्रिका से भी जुड़ी थीं और बेंगलुरु आल इण्डिया रेडियो में भी काम किया।

बानू मुश्ताक (77) की स्कूली शिक्षा की शुरूवात भी कठिन चुनौतियों से हुई यही उनके लेखकीय जीवन की चुनौती बनी। उनका जन्म 1948 में कर्नाटक के मुस्लिम परिवार में हुआ था। शिवमोगा के कन्नड़ मिशनरी स्कूल में पिता के काफी प्रयास के बाद उनका दाखिला भी आठ साल की उम्र में इस शर्त पर हुआ था कि उन्हें छह माह में कन्नौड़ को लिखना पढ़ना आना चाहिए, नहीं तो स्कूल छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि बानू एक मुस्लिम परिवार से रहीं जहाँ स्कूल की शर्त उनके लिए एक

चुनौती थीं, लेकिन उन्होंने कर दिखाया। मुश्ताक ने 1980 में मुस्लिम समाज में कट्टरता को कम करने के लिए काम किया। उन्होंने मस्जिदों में भी मुस्लिम महिलाओं के प्रवेश की वकालत किया जिसकी वजह से उनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार भी हुआ। उन्हें जान से मारने की धमकियां भी मिली। हलांकि उन्होंने स्कूलों में मुस्लिम लड़कियों के हिजाब पहनने का समर्थन किया था, जिसका विवाद कर्नाटक के शिक्षा संस्थानों में आज भी मुद्दा है।

बानू मुश्ताक ने मुस्लिम समाज में औरतों और दूसरी समस्याओं को बड़ी गहराई से परखा। ऐसी समस्याओं ने उन्हें प्रभावित किया जिसे उन्होंने कहानी या लघुकथा का आधारा बनाया। लिखने का शौक उन्हें बचपन से था, उनकी पहली कहानी 26 साल की उम्र में प्रजामाता में प्रकाशित हुईं इसके बाद लेखन की दुनिया में उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जिस हॉर्ट लैम्प के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है उसमें 1990 से 2023 तक की लघुकथाएं हैं जिनमें मुस्लिम समाज की महिलाओं का संघर्ष दिखाया गया है। अनुवादक दीपा भस्थी भी पहली भारतीय हैं जिन्हें यह सम्मान मिला है।

मुश्ताक कहानियों का अनुवाद साल 2022 में पहली बार दीपा भस्थी ने अंग्रेजी में किया। जिसमें उन्होंने हॉर्ट लैंप नाम से कन्नड़ से कुछ चुनी हुई कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार में 50 हजार पाउंड की राशि लेखक को मिलती है। जिसमें आधी राशि अंग्रेजी अनुवादक के हिस्से में जाती है। क्योंकि बुकर पुरस्कार सिर्फ अंग्रेजी कृति या उस भाषा में अनुदित संग्रह को ही मिलता है। इसका मकसद साफ है कि अच्छा साहित्य सभी तक पहुंचना चाहिए। क्योंकि कि साहित्य की कोई सीमा नहीं होती है। भारतीय रुपए में इस पुरस्कार की कीमत 52.95 लाख होती है। मुश्ताक पहली कन्नड़ लेखिका हैं जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 के लिए चुना गया। यह अनुवादक दीपा भस्थी के लिए भी गर्व का विषय है।

बुकर पुरस्कार के निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष मैक्स पोर्टर कहानियों की सराहना किया। उन्होंने कहा है कि हलांकि मुश्ताक की कहानियां स्त्रीवादी विचारधारा की पोषक हैं। पितृसतात्मक व्यवस्था का मुखर विरोध और प्रतिरोध है। लेकिन सबसे अहम बात है कि इसमें स्त्री के दैनिक जीवन के संघर्ष को बेहद उम्दा तरीके से प्रदर्शित किया गया है। यह अपने आपमें सबसे अलग है।

अब तक छह पूर्व भारतीय लेखकों को उनकी कृति के लिए अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिल चुका है। जिसमें वीएस नायपॉल, सलमान राश्दी, अरूंधती राय, किरण देशाई, अरविंद अडिगा और गीतांजली श्री को हिंदी उपन्यास के लिए 2022 में यह पुरस्कार मिला था जबकि सबसे पहले 1971 में नायपॉल को मिला मिला था। बुकर की होड़ में पांच किताबें शामिल थीं जिसमें सोलेज की ऑन द कलकुलेशन ऑफ वैल्यूज, स्मॉल बोट की विसेंट डेलिक्रोइस्क, हीरोमी कावाकामी की अंडर द आई ऑफ द बिग बर्ड, डिसेंजो लैट्रिनिको की परफेक्शन और ऐरी सेरे की ए लैपर्ड स्किन हैट शामिल थीं। ऐसी स्थित में कन्नड़ से अंग्रेजी में अनुदित हॉर्ट लैम्प को बुकर मिलना गर्व की बात है।

बुकर पुरस्कार की स्थापना 1969 में इंग्लैंड की मैकोनल कम्पनी ने की थीं। इस पुरस्कार का पूरा नाम मैन बुकर प्राइज फॉर फिक्शन है। इसमें लेखक और अनुवादक को निर्धारित 50 हजार पाउंड की राशि में आधा-आधा हिस्सा मिलता है। इस पुरस्कार का उदेश्य अच्छे साहित्य का विकास है। जिसकी अवधारणा है कि कोई भी अच्छा साहित्य की कोई सीमा नहीं होती, बस उसके लिए मंच और माध्यम आवश्यक है। इसमें न लेखक की भाषा मायने रखती है न लेखक की जाति और धर्म। बस ! आप भी लिखते हैं तो कुछ अच्छा लिखिए, भले छोटा लिखिए या कम लिखिए।

साहित्य के परिप्रेक्ष्य में बौद्धिक संपदा: एक अवलोकन

राजेश कुमार सिन्हा
वरिष्ठ स्तंभकार

आज साहित्य के परिप्रेक्ष्य में बौद्धिक संपदा की चर्चा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। दरअसल बौद्धिक संपदा एक ऐसा विषय है जो आधुनिक समाज, विशेष रूप से ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्थाओं में, अत्यधिक महत्व रखता है। यह अवधारणा व्यक्ति या समूह द्वारा सृजित विचारों, आविष्कारों, रचनात्मक कार्यों, और प्रतीकों को कानूनी संरक्षण प्रदान करती है। बौद्धिक संपदा का उद्देश्य है कि रचनाकार को उसकी रचना के लिए उचित पहचान और लाभ मिले, और साथ ही समाज को नए विचारों और आविष्कारों का लाभ प्राप्त हो। साहित्य के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि साहित्यिक रचनाएं बौद्धिक संपदा के अंतर्गत आती हैं। बौद्धिक संपदा का शाब्दिक अर्थ है 'बुद्धि या मस्तिष्क की सृजित संपत्ति'। यह उन सभी रचनात्मक कार्यों, आविष्कारों, और प्रतीकों को शामिल करती है जो मानव मस्तिष्क की उपज हैं और जिन्हें कानूनी रूप से संरक्षित किया जा सकता है। बौद्धिक संपदा के अंतर्गत आने वाले प्रमुख क्षेत्र में निम्न शामिल होते हैं। पहला है पेटेंट जिसका अर्थ होता है किसी नए आविष्कार को कानूनी सुरक्षा प्रदान करना। दूसरा है कॉपीराइट जिसका संबंध साहित्य, संगीत, चित्रकला, और अन्य रचनात्मक कार्यों को संरक्षित करने से होता है। तीसरा होता है ट्रेडमार्क जो ब्रांड नाम, प्रतीक, या चिन्ह जो किसी उत्पाद या सेवा को पहचान प्रदान करता है से जुड़ा होता है। चौथा किसी उत्पाद के स्वरूप, शैली, या डिजाइन की सुरक्षा से जुड़ा होता है जो डिजाइन अधिकार कहलाता है। पांचवां होता है भौगोलिक संकेत जो किसी उत्पाद की विशेषता जो उसके भौगोलिक स्थान से जुड़ी होती है, जैसे दार्जिलिंग चाय, कश्मीर के सेव या ऐसे ही किसी भौगोलिक स्थिति से संबंधित होता है। यहाँ एक और महत्वपूर्ण सवाल उत्पन्न होता है कि बौद्धिक संपदा का उद्देश्य क्या होता है? अगर थोड़े में कहा जाए तो बौद्धिक संपदा का उद्देश्य नवाचार को प्रोत्साहित करना और रचनाकार को उनके कार्य का नियंत्रण देना है। सही अर्थों में साहित्य, कला और संस्कृति का अभिन्न अंग है और यह मानव सभ्यता की बौद्धिक संपदा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। साहित्यिक रचनाएं, जैसे उपन्यास, कविताएं, नाटक, लघुकथाएं, और अन्य लिखित सामग्री, कॉपीराइट के अंतर्गत आती हैं। कॉपीराइट का उद्देश्य है कि लेखक या रचनाकार को उनके कार्य के लिए कानूनी संरक्षण और आर्थिक लाभ प्रदान किया जाए। अगर हम साहित्य के परिप्रेक्ष्य में देखें तो साहित्य में कॉपीराइट का महत्व बहुत अधिक होता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि साहित्यिक रचनाएँ रचनाकार की बौद्धिक संपत्ति होती हैं। कॉपीराइट लेखक को उनके कार्य का अनन्य अधिकार प्रदान करता है। इसका मतलब है कि लेखक यह तय कर सकता है कि उनकी रचना का उपयोग, पुनरुत्पादन, या वितरण कैसे किया जाए। इसके अलावा

कॉपीराइट के माध्यम से साहित्यकार अपनी रचना के व्यावसायिक उपयोग से आर्थिक लाभ कमा सकते हैं।जैसे किताबों की बिक्री, नाटकों का मंचन, या फिल्म निर्माण के अधिकार।लेखक अपनी रचना के उपयोग के लिए अनुबंध कर सकते हैं या लाइसेंस प्रदान कर सकते हैं। यह साहित्यकार और प्रकाशकों के बीच एक स्वच्छ और पारदर्शी संबंध सुनिश्चित करता है। कई बार लोक साहित्य, जैसे लोककथाएं, लोकगीत, और पारंपरिक कहानियाँ, भी बौद्धिक संपदा का हिस्सा बनते हैं। इनका संरक्षण सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।कॉपीराइट उल्लंघन साहित्यिक रचनाओं के क्षेत्र में एक गंभीर समस्या है। यह तब होता है जब लेखक की अनुमति के बिना उनकी रचना का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए,किसी पुस्तक को बिना अनुमति के पुनः प्रकाशित करनाऑनलाइन साहित्यिक सामग्री को बिना श्रेय दिए साझा करना साहित्यिक रचना का उपयोग किसी अन्य कार्य में बिना लेखक की सहमति के करना। सही अर्थों में कॉपीराइट कानून इन समस्याओं से बचाव के लिए आवश्यक प्रावधान करता है।

बौद्धिक संपदा के प्रकार और साहित्य पर उनका प्रभाव

साहित्यिक रचनाओं पर कॉपीराइट का सबसे बड़ा प्रभाव होता है। यह लेखक को उनकी रचना पर पूर्ण अधिकार देता है और रचना के उपयोग, प्रकाशन, और वितरण को नियंत्रित करता है। जहाँ साहित्य पर पेटेंट के प्रभाव की बात है तो साहित्य पर इसका सीधा प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन साहित्यिक उपकरण, जैसे नई प्रकाशन तकनीक या डिजिटल पुस्तक वितरण प्रणाली, पेटेंट के अंतर्गत आ सकती है। साहित्यिक कृतियों में पेटेंट का प्रभाव भी पड़ता है।

साहित्यिक कृतियों के शीर्षक, पात्र, या विशेष प्रतीक ट्रेडमार्क के अंतर्गत आ सकते हैं। जैसे कि किसी पुस्तक श्रृंखला का नाम या उसमें प्रयुक्त विशिष्ट प्रतीक। पुस्तक के आवरण (कवर) की डिजाइन या ग्राफिक प्रस्तुति डिजाइन अधिकार के अंतर्गत संरक्षित हो सकती है।भौगोलिक संकेत वाली बात साहित्य में उन रचनाओं पर लागू हो सकती है, जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र से प्रेरित होती हैं या उससे जुड़ी होती हैं।

अगर हम भारतीय संदर्भ में बौद्धिक संपदा और साहित्य की बात करें तो भारत में बौद्धिक संपदा का कानूनी ढांचा मुख्य रूप से कॉपीराइट एक्ट, 1957 के तहत संचालित होता है। यह अधिनियम साहित्य, कला, और संगीत से संबंधित रचनाओं को सुरक्षा प्रदान करता है। इसके महत्वपूर्ण प्रावधान निम्नलिखित हैं।

साहित्यिक रचनाओं पर कॉपीराइट उनकी रचना के समय से स्वतः लागू हो जाता है।रचना पर कॉपीराइट का अधिकार लेखक के जीवनकाल और उनकी मृत्यु के 60 वर्षों तक रहता है। किसी भी साहित्यिक रचना का उपयोग करने के लिए लेखक या कॉपीराइट धारक की अनुमति आवश्यक होती है।

भारत में साहित्यिक चोरी भी एक बड़ी समस्या है। साहित्यिक चोरी का अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति की रचना को अपने नाम से प्रकाशित करना। यह न केवल नैतिक रूप से गलत है बल्कि कानूनी रूप से दंडनीय भी है। डिजिटल युग में साहित्य और बौद्धिक संपदा का संरक्षण और भी महत्वपूर्ण हो गया है। इंटरनेट के माध्यम से साहित्यिक सामग्री का तेजी से प्रसार हुआ है, लेकिन इसके साथ ही साहित्यिक चोरी और कॉपीराइट उल्लंघन की घटनाएं भी बढ़ी हैं।

डिजिटल युग में साहित्यिक रचनाओं की सुरक्षा के लिए डिजिटल कॉपीराइट का उपयोग किया जाता है। इसमें रचनाकार अपनी सामग्री को डिजिटल प्रारूप में संरक्षित कर सकते हैं और उसके उपयोग को नियंत्रित कर सकते हैं।

ई-पुस्तकें साहित्य का एक नया स्वरूप हैं। ई-पुस्तकों पर भी कॉपीराइट लागू होता है, और उन्हें बिना अनुमति के डाउनलोड या साझा करना कानून का उल्लंघन है।

बौद्धिक संपदा ने साहित्यिक रचनाकारों को प्रोत्साहित किया है कि वे नई और अनोखी रचनाएं प्रस्तुत करें। यह रचनात्मकता को बढ़ावा देती है और समाज में सांस्कृतिक समृद्धि लाती है।

बौद्धिक संपदा के माध्यम से लेखकों को उनकी रचनाओं पर पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है, जिससे वे अपनी रचनात्मकता का स्वतंत्रता से उपयोग कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्य का प्रसारः

बौद्धिक संपदा कानूनों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के प्रसार को संभव बनाया है। विभिन्न भाषाओं में अनुवाद, ई-बुक्स का प्रकाशन, और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर साहित्य का उपलब्ध होना इसके उदाहरण हैं। बौद्धिक संपदा साहित्य और रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह न केवल साहित्यकारों को उनके कार्यों के लिए उचित पहचान और लाभ प्रदान करता है, बल्कि समाज को समृद्ध साहित्यिक विरासत भी देता है। डिजिटल युग में, साहित्य के क्षेत्र में बौद्धिक संपदा के महत्व को समझना और उसे संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। साहित्य और बौद्धिक संपदा का यह संबंध न केवल रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, बल्कि मानवता के सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास में भी योगदान देता है।

पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार- 2025

देश के जानेमाने साहित्यकार पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार- 2025 से नवाजा गया। शुक्रवार 30 मई, 2025 की संध्या, यह पुरस्कार द्वारका स्थित उनके आवास पर 'दूसरा मत' के संपादक एवं 32 पुस्तकों के लेखक ए आर आज़ाद एवं बाल कहानीकार व 'मेघ देवता' के लेखक सैयद असद आज़ाद ने सम्मानपूर्वक और गौरवमयी अंदाज़ में प्रदान किया।

आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार में उन्हें शील्ड, शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं 2100 रुपए की नगद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर उन्हें हाल ही में प्रकाशित 'दूसरा मत' ग़ज़ल-विशेषांक भी भेंट की गई। इस ग़ज़ल-विशेषांक पर अपनी बेबाक राय रखते हुए पदमश्री डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा कि यह अंक पहली ही नज़र में लोगों को अपनी ओर खींच लेता है। उन्होंने अंदर के पृष्ठों को पलटने के बाद अपनी दूसरी प्रतिक्रिया में कहा कि यह शानदार अंक है। और आपने बड़े ही श्रम से इसे जानदार बना दिया है। उन्होंने अपने आशीर्वचन में कहा कि आपको इसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

पुरस्कार वितरण के बाद आधे घंटे की गपशप में उन्होंने कई साहित्यिक प्रकरण पर चर्चा की। और अपने सुखद जीवन के संदर्भ पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि उम्र के इस पड़ाव पर भी लोगों का विशेषकर साहित्यकारों और पत्रकारों का प्यार मिल रहा है। आए दिन लोगबाग मिलने आते हैं। और टेलीफोन से हालचाल लेते रहते हैं। उन्होंने अपने परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। और कहा कि पूरे परिवार का प्रेम और सानिध्य हमें मिल रहा है। यह हमारे लिए सुखद और मन को

गौरवान्वित करने वाला है।

उन्होंने आज की ग़ज़ल पर भी चर्चा की। और कहा कि ग़ज़ल में उर्दू के अल्फ़ाज़ों के मिश्रण से गजल बेहतरीन बन जाती है। उर्दू और हिन्दी तो दोनों बहन की तरह है। दोनों मिलकर ग़ज़ल को बेहतरीन बना देती है।

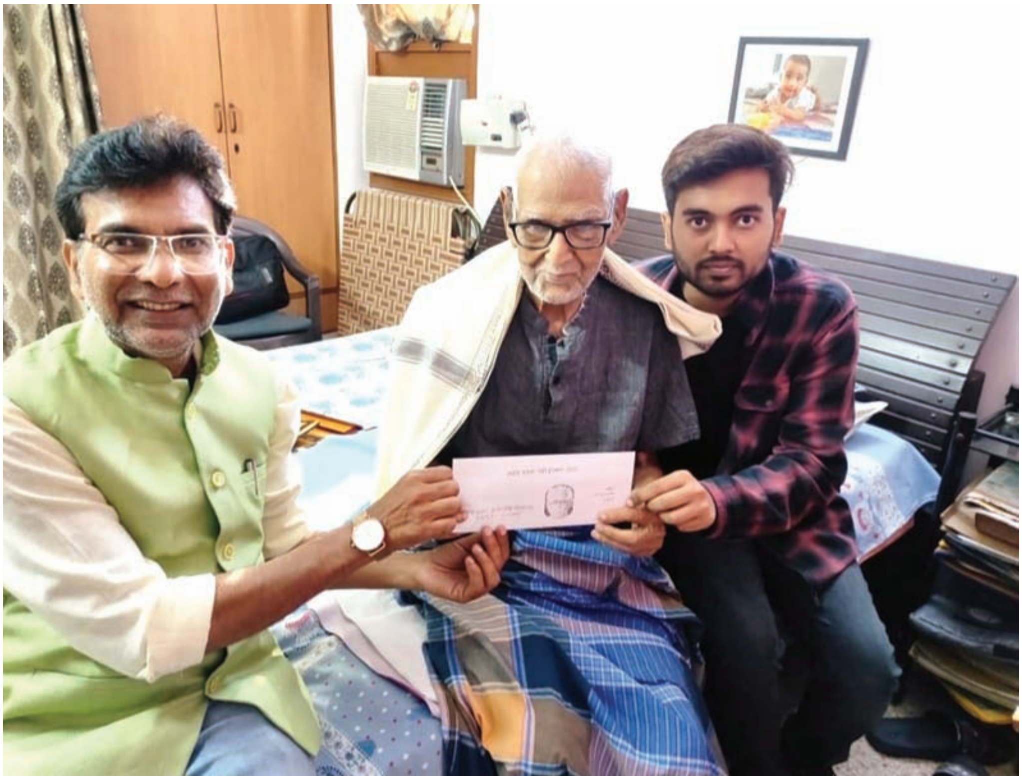

मालूम हो कि नामवर साहित्यकार पदमश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार से पहले कई महत्वपूर्ण और गौरवान्वित करने वाले पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें पदमश्री से नवाज़ा जा चुका है। इसके साथ ही साथ उन्हें साहित्य अकादेमी का पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। उन्हें सरस्वती सम्मान और व्यास सम्मान जैसे महत्वपूर्ण पुरस्कार से भी विभूषित किया जा चुका है।

डॉ. रामदरश मिश्र देश के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। इन्होंने अपने शतायु से दो क़दम आगे के दीघार्यु जीवन से साहित्य को समृद्ध ही नहीं बल्कि बेहतर भी किया है। उनकी पहली प्रकाशित कविता 'चांद' है। उनका पहला

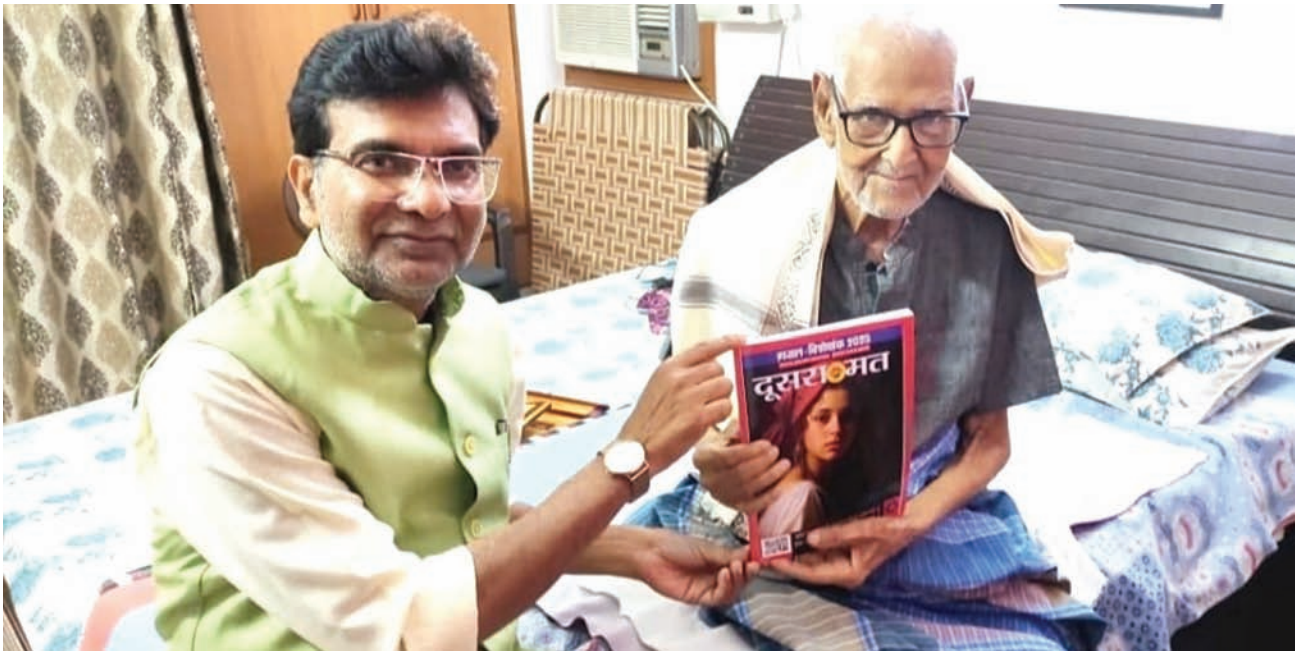

काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' 1951 में प्रकाशित हुआ।

प्रकाशित कृतियां

काव्यः पथ के गीत, बैरंग - बेनाम चिट्ठियां, पक गई है धूप, कंधे पर सूरज, दिन एक नदी बन गया, मेरे प्रिय गीत, बाजार को निकले हैं लोग, जुलूस कहां जा रहा है?, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएं, आग कुछ नहीं बोलती, शब्द सेतु, बारिश में भीगते बच्चे, हंसी ओठ पर आंखें नम हैं (ग़ज़ल-संग्रह), बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे (ग़ज़ल-संग्रह)।

उपन्यासः पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, रात का सफ़र, आकाश की छत, आदिम राग, बिना दरवाज़ा का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस, परिवार, बचपन भास्कर का, एक बचपन यह भी, एक था कलाकार ।

कहानी-संग्रह : खाली घर, एक वह, दिनचर्या, सर्पदंश, बसंत का एक दिन, इकसठ कहानियां, मेरी प्रिय कहानियां, अपने लिए, अतीत का विष, चर्चित कहानियां, श्रेष्ठ आंचलिक कहानियां, आज का दिन भी, एक कहानी लगातार, फिर कब आएंगे?, अकेला मकान, विदूषक, दिन के साथ, मेरी कथा यात्रा, विरासत, इस बार होली में, चुनी हुई कहानियां, संकलित कहानियां, लोकप्रिय कहानियां, 21 कहानियां, नेता की चादर, स्वप्नभंग, आखिरी चिट्ठी, कुछ यादें बचपन की (बाल-साहित्य), इस बार होली में, जिंदगी लौट आई थी,एक भटकी हुई मुलाकात, सपनों भरे दिन, अभिशप्त लोक, अकेली वह।

ललित निबंधः कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस, घर-परिवेश, छोटे-छोटे सुख, नया चौराहा, लौट आया हूं मेरे देश।

आत्मकथाः सहचर है समय।

यात्रावृत्तः घर से घर तक, देश- यात्रा।

डायरीः आते - जाते दिन, आस-पास, बाहर भीतर, विश्वास जिंदा है, सुख दुःख के राग।

रचनावलीः 14 खंडों में, कविता समग्र, कहानी समग्र।

संचयनःबूंद-बूंद नदी, नदी बहती है, दर्द की हंसी, सरकंडे की क़लम।

आलोचनाः

1. हिंदी आलोचना का इतिहास (हिंदी समीक्षाः स्वरूप और संदर्भ, हिंदी आलोचना प्रवृत्तियां और आधार भूमि),
2. ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा,
3. साहित्यः संदर्भ और मूल्य,
4. हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा,
5. आज का हिंदी साहित्य संवेदना और दृष्टि,
6. हिंदी कहानीः अंतरंग पहचान,
7. हिंदी कविता आधुनिक आयाम (छायावादोत्तर हिंदी कविता),
8. छायावाद का रचनालोक,
9. आधुनिक कविताः सर्जनात्मक संदर्भ,
10. हिंदी गद्यसाहित्यः उपलब्धि की दिशाएं,
11. आलोचना का आधुनिक बोध

संस्मरणः

स्मृतियों के छंद, अपने-अपने रास्ते, एक दुनिया अपनी, सहयात्राएं, सर्जना ही बड़ा सत्य है, सुरभित स्मृतियां।

साक्षात्कारः अंतरंग, मेरे साक्षात्कार, संवाद यात्रा

दूसरा मत

बकरीद की हार्दिक शुभकामनाएं

पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रिय शिष्य डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी को आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार-2025

31 मई की संध्या डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को उनके आवास पर आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार- 2025 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार देश की गंगा जमुनी तहज़ीब को समर्पित संस्था आचार्य हाशमी सौहार्द मंच के तत्वाधान में प्रदान किया गया। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी देश के चर्चित और नामवर साहित्यकार के साथ-साथ बेहतरीन आलोचक और बेहतरीन मिलनसार इंसान के तौर पर जाने जाते हैं।

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार- 2025 के तहत शॉल, शील्ड, प्रशस्ति-पत्र एवं 2100 रुपए की नगद राशि प्रदान की गई। यह पुरस्कार आचार्य हाशमी सौहार्द मंच के अध्यक्ष एवं दूसरा मत के संपादक ए आर आज़ाद ने प्रदान किया। इस अवसर पर जामिया मिलिया इस्लामिया के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर नीरज, दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर अनिल राय, मेघ देवता के लेखक सैयद असद आज़ाद एवं किरोड़ी मल कॉलेज के ओम भी ऐतिहासिक क्षण के साक्षी रहे।

पुरस्कार का यह क्षण यादगार समारोह बन

कर रह गया। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने पुरस्कार के बाद दिल खोलकर कई विषयों पर चर्चा की। और मौजूद लोगों का मन मोह लिया। उन्होंने कई दुलर्भ वाक़्या सुनाया। उन्होंने पुरस्कार के बाद अपने संबोधन में कहा कि आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार पाकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। हमें बेहद ख़ुशी हुई है। यह हमारे लिए गौरव की बात है। और ख़ास्-ाकर यह पुरस्कार सांप्रदायिक सौहार्द को समर्पित है, इसलिए यह और भी गौरव की बात है।

मालूम हो कि आचार्य हाशमी स्मृति पुरस्कार-2025 से पहले डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को कई अहम पु-रस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इन्हें अब तक साहित्य अकादेमी का भाषा सम्मान और हिन्दी अकादमी का साहित्य सम्मान मिल चुका है। इसके अलावा व्यास सम्मान, मूर्तिदेवी पु-रस्कार, भारत भारती पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, डॉ. रामविलास शर्मा सम्मान, शमशेर सम्मान, शान्तिकुमारी वाजपेयी सम्मान, गोकुलचंद्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इन्होंने अबतक विभिन्न महत्वपूर्ण विधाओं पर लगभग दो दर्जन किताबें लिखी हैं। इन पर कई विद्यार्थियों ने शोध किए हैं। और इनकी पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों में शामिल हैं।

पुरस्कार के बाद दूसरा मत के संपादक को दिए गए साक्षात्कार में कई महत्वपूर्ण सवालों का जवाब दिया। और कहा कि मनुष्य को कभी शिकायत नहीं करनी चाहिए। आदमी को नाश-ुक्रा नहीं होना चाहिए। आदमी को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे कभी शर्मिंदा होना पड़े। लेकिन कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कभी-कभार आदमी को शर्मिंदा भी होना पड़ता है। लेकिन इससे बचना चाहिए।

उन्होंने अपनी व्यक्तिगत लालसा के प्रश्न के जवाब में कहा कि मैं मरना नहीं चाहता हूं। मैं और लिखना-पढ़ना चाहता हूं। मैं सौ साल तक जीना चाहता हूं। लोगबाग कहते हैं कि आप अभी बहुत ठीक है। लेकिन ज़िंदा हूं तो याद भी है। याद भी बहुत ताक़त देती है। इस बीच बातों-बातों में पत्नी की स्मृति में गले रौंध जाते हैं। और आंखों से अनायास आंसू टपक पड़ते हैं। कुछ देर तक शब्ध धुंधले पड़ जाते हैं। और जुबां बेबस हो जाती है। फिर ख़ुद को संभालते हुए कहते हैं कि मैं जब मरने लगूं तो मेरे बच्चे सीमा, रेखा और जो हैं सब रहे हीं। ज़िंदगी की जो ख़ूबसूरती है, वो भी मेरे सामने रहे। और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और मेरी पत्नी ये दो मुझे मरते समय याद आएं।

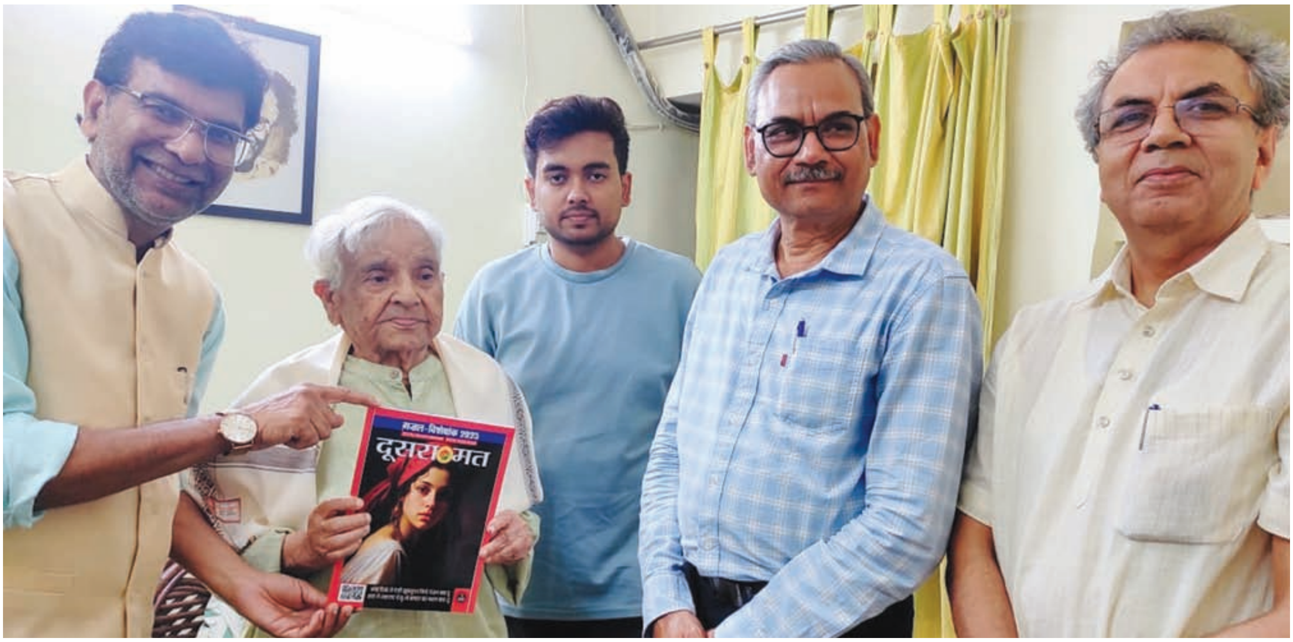

दूसरा मत

बकरीद की हार्दिक शुभकामनाएं

पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा

विजय गर्ग

केंद्र सरकार ने देश की भाषायी विविधता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है। इस पहल के तहत गर्मी की छुट्टियों में देशभर के सभी 14.5 लाख स्कूलों में 'भारतीय भाषा समर कैंप 2025' का आयोजन किया जाएगा। इस कैंप में बच्चों को खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी मातृभाषा के साथ-साथ एक या अधिक भारतीय भाषाओं का ज्ञान दिया जाएगा। यह समर कैंप एक सप्ताह का होगा, जिसमें बच्चों को भारतीय भाषाओं से जोड़ने के लिए प्रतिदिन चार घंटे की गतिविधियां संचालित की जाएंगी, जिससे कुल 48 घंटे का प्रशिक्षण होगा। कैंप के अंत में बच्चों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जाएगा। केंद्र सरकार के इस 'भारतीय भाषा समर कैंप' का लाभ 25 करोड़ से अधिक बच्चे उठा सकेंगे।

आज के समय में रोजगार या बेहतर जीवन यापन के लिए लोगों को एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना पड़ता है। बैंक कर्मचारियों, केंद्रीय विद्यालयों के शिक्षकों और आइटी क्षेत्र में कार्यरत युवाओं को अक्सर महाराष्ट्र, बेंगलुरु, हैदराबाद, तमिलनाडु या अन्य राज्यों में नौकरी के सिलसिले में जाना पड़ता है। ऐसे में उन्हें स्थानीय भाषा और संस्कृति की भिन्नता के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संवाद की कमी के कारण विवाद भी उत्पन्न होते हैं। हाल में कर्नाटक और महाराष्ट्र में ऐसे कई वीडियो वायरल हुए हैं, जिनमें स्थानीय भाषा मराठी और कन्नड़ में बात करने पर जोर दिया गया है। मातृभाषा का सम्मान करना आवश्यक है, लेकिन बाहरी व्यक्तियों के साथ दुर्व्यवहार करना उचित नहीं है। भारत एक विविधता से भरा देश है, जहां विभिन्न संस्कृतियां, धर्म और भाषाएं मिलती हैं। सभी भाषाओं का समान महत्व

है, और लोगों को एक से अधिक भारतीय भाषाएं सीखनी चाहिए। इससे उन्हें किसी अन्य राज्य में जाने पर भाषा संबंधी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा । बहुभाषी लोग विभिन्न संस्कृतियों के साथ संवाद कर सकते हैं। और एक-दूसरे के विचारों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक शोध के अनुसार, एक से अधिक भाषाएं सीखने से मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। और रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। बहुभाषी शिक्षा विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देती है, जिससे भारत में सामाजिक एकता और सद्भाव को भी बढ़ावा मिलेगा। यह भारत की भाषायी विविधता और विरासत को संरक्षित करने में मदद करेगी। अभी भी बड़ी संख्या में लोग बहुभाषी शिक्षा के लाभ से अनजान हैं। अंग्रेजी के साथ भारतीय भाषाओं को भी महत्व देना चाहिए। हालांकि बहुभाषी शिक्षा को केवल स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक विस्तारित किया जाना चाहिए।

(लेखक सेवानिवृत्त प्रिंसिपल हैं)

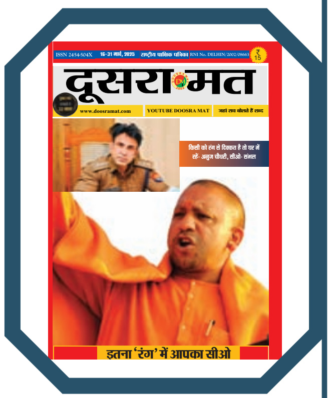

दूसरा मत

पढ़ें और पढ़ाएं

एक शुभचिंतक
नई दिल्ली

विगत 23 वर्षों से देशहित में समाज-निर्माण के संकल्प के साथ

न हम डरते है न डराते हैं
हम देशप्रेम की भावना जगाते हैं

अगर आप में है जोश और
देश से प्यार

तो आइए दिल्ली से प्रकाशित
राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका
दूसरा मत
के साथ

अगर शिक्षक, प्रोफेसर, इंजीनियर और डॉक्टर बनते हो तो हमेशा एक ही काम करोगे लेकिन पत्रकार बनते हो तो दुनिया समझने को मिलेगी, दुनिया समझाने को मिलेगी। दुनिया को पढ़ने का मौक़ा मिलेगा, दुनिया को पढ़ाने का मौक़ा मिलेगा

हम आपके हाथ में देते हैं क़लम
समाज-निर्माण की ताक़त के साथ।

योग्यता
खबरों की समझ
और देश के साथ
सच्ची प्रेम-भावना

सोचो, समझो और **दूसरा मत** से जुड़ो

संपर्क : +91-9643709089

बकरीद एवं
कबीर जयंती की
हार्दिक
शुभकामनाएं
47
YEARS OF
EXCELLENCE
!! RADHA SOAMI JI !!
Kasturi Jewellers
SINCE 1976
100% HALLMARK JEWELLERY SHOWROOM
#GOLD #DIAMOND JEWELLERY #SOLITAIRES
100% Lifetime Maintenance Free
100% Buy Back Diamond Jewellery
100% Certified Diamond Jewellery
Shop No. 15, 16, 17, 18, SDM Market, Mangal Bazar Road, Uttam Nagar, New Delhi-110 059
Shop No. 54-55, Main Pankha Road, Opp. Sagar Pur Police Station, New Delhi-110 046
Kasturi Lal Ph. 98186 09444 | Manish (Monu) Ph. 98186 11313

‘दूसरा मत’ प्रकाशन

‘आमने-सामने’ अपने-आप में एक ऐतिहासिक इंटरव्यू-संग्रह है। इस संग्रह में देश की 62 अहम शख़्सियतों एवं हस्तियों के साक्षात्कार शामिल हैं। यह संग्रह देश ही नहीं विदेशों में भी ख़ासा चर्चित रहा है।

देश के जाने-माने प्रकाशन ‘राजपाल’ के प्रकाशक एवं डीएवी मैनेजमेंट कमिटी के वायस प्रेसिडेंट विश्वनाथ जी ने अपने पत्र में स्पष्ट लिखा है,- “इस तरह के विशाल इंटरयू-संग्रह देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अभी तक नहीं आए हैं।

आमने-सामने (मूल्य 750/)

सामना (मूल्य 1100/)

‘सामना’ भी एक महत्वपूर्ण इंटरव्यू-संग्रह के तौर पर ‘आमने-सामने’ की तरह सामने आया है। इसे भी शख़्सियतों एवं साक्षात्कार की कला को क़ुबुल करने वाले लोगों ने हाथों-हाथ लिया है। इस संग्रह में देश की विभिन्न क्षेत्रों की 82 हस्तियों की इंटरव्यू की शक्ल में लेखा-जोखा एवं उनकी हस्ती की पड़ताल है।

अपने-अपने क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होने वाले और देश व दुनिया के सामने अपना लोहा मनवाने वाले लोगों के एक समूह विशेष इस अंक में शामिल हैं।